जैन तीर्थवंदना

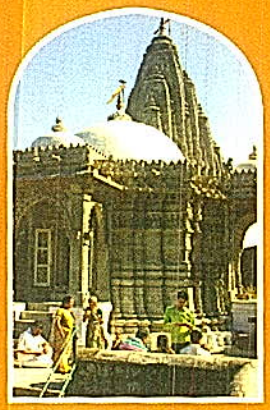

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2542

VOLUME : 6 | ISSUE : 12 | MUMBAI, JUNE 2016 | PAGES : 40 | PRICE : ₹25

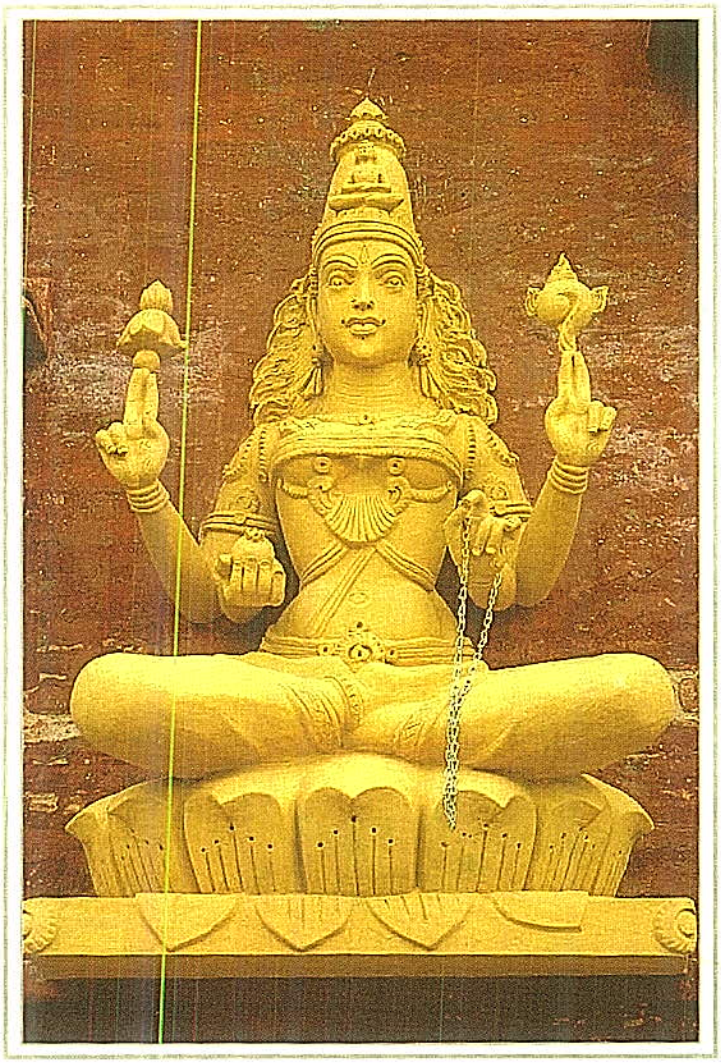

जैन सरस्वती देवी पेरम्पुगइ मंदिर, तमिलनाडु

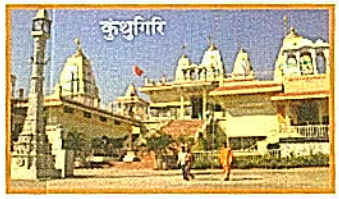

पतित पावन तरण तारण, हमारी फरियाद सुन लेना।
तेरे चरणों में मस्तक है, हमें अपना बना लेना।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 260101-10, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

अध्यक्षीय सम्बोधन

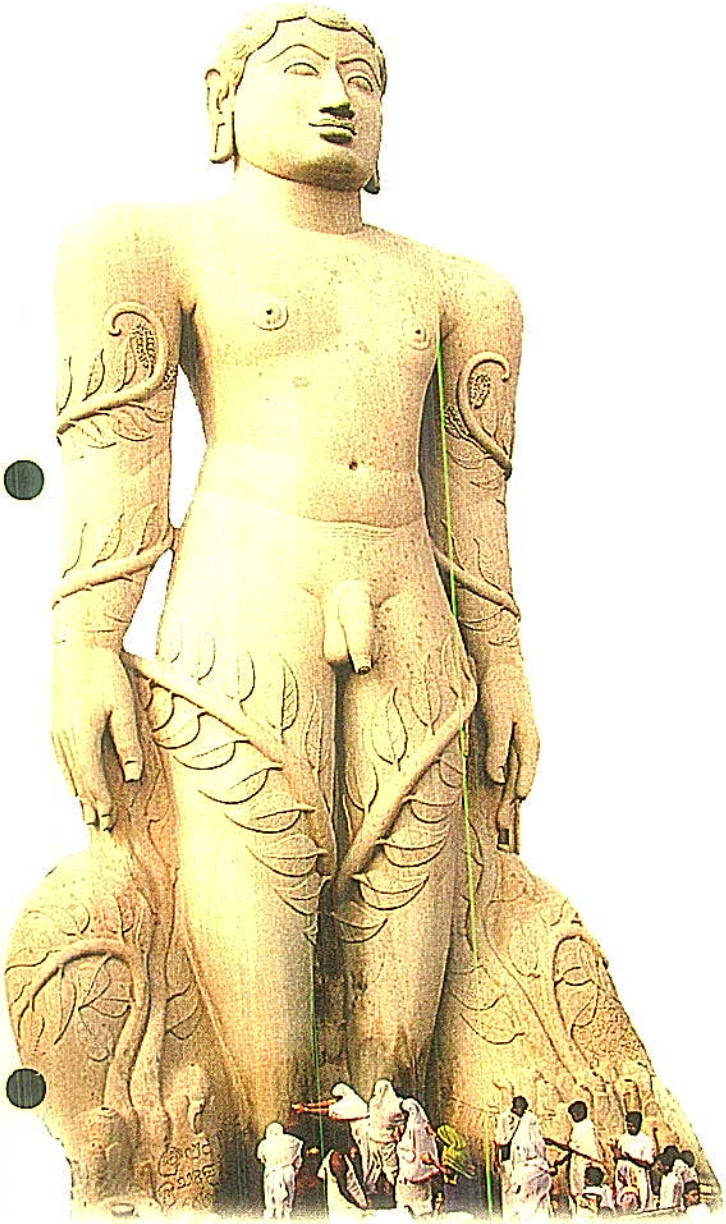

भारतीय संस्कृति में प्रचलित धर्मों में चाहे वह मूर्तिपूजक हो या मूर्तिपूजक न हो, सभी धर्मों में तीर्थ का महत्व है। सभी धर्मों के अपने-अपने तीर्थ व आराध्य स्थल हैं, जहां श्रद्धालु जाकर शांति का अनुभव करते हैं।

इन सबके साथ हमारे गुरुजनों ने एक बात बताई है, तीर्थ वह स्थान है जहां से तिरा जाये। यानि मोक्ष निर्वाण पद प्राप्त किया जाता है। श्रमण संस्कृति ऐसे अनेक, तीर्थों से भरी हुई है और हम, सब उन तीर्थों पर जाकर अपार शांति का अनुभव करते हैं यह तीर्थों की विशेषता है।

तीर्थों पर होने वाले आयोजन हम सभी को आमंत्रित करते हैं कि आईये पहले हम अपने आप को निहारें फिर अपने समाज के श्रद्धालुओं के साथ बैठकर धार्मिकता के आधार पर अपने सामाजिक संबंध मजबूत करें और अपनी श्रद्धा से समर्पण का सन्देश ग्रहण करें और बच्चों को भी श्रद्धावान बनाएं, उनमें आस्था के अनिवार्य तत्व का बीजारोपण करें, उनके धर्म के प्रति विश्वास को निरंतर पुष्टि करते हुए देव-शास्त्र-गुरु के प्रति संवेदनशील बनाएं जिससे हमारे प्राचीन देवालय व उनमें स्थापित हमारी संस्कृति के प्रतीक जो हमारे अन्दर सम्यक्दर्शन के कारण बनते हैं उन्हें सुरक्षित करें, संवर्धित करें।

आईये तीर्थ रक्षा का संकल्प कर हम अपने तन-मन-धन का सदुपयोग करें।

सबको श्रवणबेलगोला आना है।
श्रद्धा का कलश चढ़ाना है।।

हम सबका यह सौभाग्य है कि सम्पूर्ण भारतवर्ष में पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण में जहां भी जाएं वहां अहिंसा, अनेकांत, समता, समानता, सहयोग का दिव्य संदेश श्रमण संस्कृति के माध्यम से प्रसारित हो रहा है।

दक्षिण भारत में कर्नाटक की राजधानी बैंगलोर से 150 कि.मी की दूरी पर हमारा एक ऐसा श्री क्षेत्र है, जो सम्पूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय जगत में आश्चर्य का विषय है। वह है प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के

पुत्र बाहुबली जी का जिनबिम्ब। जिसका नाम ही श्रवणबेलगोला है जहां 57 फीट उत्तुंग विश्व की महानतम प्रतिमाओं में दर्ज भगवान बाहुबलीजी की मनोहारी प्रतिमा विंध्यगिरि पर खड़ी होकर उत्तर की ओर निहार रही है, और सन्देश दे रही है कि यदि हम मुक्ति पाना चाहते हैं तो ऐसा ध्यान लगाए कि हमें अपना ध्यान ही न रहे और ध्यान के माध्यम से सम्यक्त्वशील ध्यानस्थता के माध्यम से, अंत:करण की शुचिता से हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे।

अपने लक्ष्य के लिए हम उन बाहुबलीजी के निकट आएं जिन्होंने अपने बाहुबल को निस्तेज जान अन्त:करण के बल को प्रकट किया ऐसे भगवान बाहुबलीजी का महामस्तकाभिषेक जो 12 वर्ष में एक बार होता है, वह अवसर को अब बहुत कम समय बचा है, कम इसलिये कि जितने बड़े बाहुबली भगवान है और सम्पूर्ण विश्व में उनके अनुयायी हैं जो 12 वर्ष में इस अन्तर्राष्ट्रीय महामस्तकाभिषेक महोत्सव में सम्मिलित होते ही हैं उस आयोजन की तैयारी करनी है। हमारे चलते-फिरते तीर्थ दिगम्बर आचार्य, मुनि, आर्यिका, श्रावक-श्राविका चतुर्विध संघ यहां पहुंचकर सभी को इस महानतम आयोजन में सम्मिलित होने की प्रेरणा देते हैं।

जहां मधुर मुस्कान के साथ दिगम्बर जैन मठ श्रवणबेलगोला के जगद्गुरु कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामीजी अपने समर्पित अनुभव के साथ इस अन्तर्राष्ट्रीय महामस्तकाभिषेक महोत्सव को अनूठा बनाते हैं। जिनका प्रबंध कौशल वर्तमान समय में आश्चर्यचकित करता है। उनका मुख मण्डल हमें ऊर्जा प्रदान करता है । ऐसे पवित्र स्थल पर फरवरी 2018 में महामस्तकाभिषेक महोत्सव का आयोजन घोषित हुआ है।

मेरा सौभाग्य है कि मुझे भी इस आयोजन हेतु महोत्सव अध्यक्ष का दायित्व पूज्य भट्टारकजी ने सौंपा है। मैं इस दायित्व के निर्वहन में आप सभी के सहयोग से सफलता की कामना करती हूं, कि भारतवर्ष की जैन समाज व अहिंसा को आत्मसात करने वाले भारतवासी इस आयोजन को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अनुरुप प्रचारित-प्रसारित कर अपनी श्रद्धा का अर्घ समर्पित करेंगे।

प्रत्येक जैनी भाई और बहन रविन्द्रजी की वे पंक्तियां याद करें जो उनके अन्तरमन से निकली थी और सभी के हृदय में विराजती हैं, यह बोलकर अपनी बात समाप्त करती हूँ।

हम नहीं दिगम्बर-श्वेताम्बर।
तेरहपंथी-स्थानकवासी।।
सब एक देव के विश्वासी।
सब एक देव के अनुयायी।।
नित्य नियमित पाले पंचशील।
और त्याग करें आडम्बर का।
नित णमोकर का जाप करें।
और पाठ करें भक्तामर का।
हम जैनी अपना धर्म जैन।
इतना ही परिचय केवल दें।।
हम यही कामना करते हैं

इसी भावना के साथ केवल और केवल श्रद्धालु बनके भगवान बाहुबलीजी के दरबार में अपनी श्रद्धा का अर्घ्य समर्पित करेगें।

इसी भावना के साथ आज से एक दीपक भगवान बाहुबली के लिए अवश्य जलाएं और अपने अन्दर श्रद्धा की ज्योति जलाकर श्रवणबेलगोला आने का संकल्प लें।

Sarita Jain

-सरिता एम.के.जैन

सबका साथ - सबका सहयोग

जैन तीर्थवन्दना के गत अंक में हमने युवाओं को तीर्थों के विकास से जोड़ने का आह्वान किया था एवं इस कार्य को सक्षमता से करने हेतु 2 वर्गों हेतु निबंध प्रतियोगिताओं की भी घोषणा की है आपसे अनुरोध है कि इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु जैन समाज के युवाओं एवं समाज की माता बहनों को प्रेरित करें।

विद्वानों से विशेष अनुरोध है कि आप तीर्थों के प्रति अपने सुविदित अनुराग एवं समर्पण को वृद्धिगत करते हुए अधिकाधिक युवाओं/महिलाओं को इसमें सम्मिलित होने हेतु प्रेरित करें।

तीर्थों का संरक्षण एवं विकास एक अत्यन्त व्यापक बहुआयामी कार्य है जिसमें अनेकानेक प्रकार की प्रतिभाओं से सम्पन्न व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। सौभाग्य से हमारी समाज में सभी प्रकार की प्रतिभाओं से युक्त अनेक व्यक्ति उपलब्ध हैं किन्तु एक भ्रान्त धारणा विकसित हो गई है कि तीर्थों से पूजन, विधान, व्रत, उपवास करने वाले व्यक्ति ही सक्रियता से जुड़ सकते हैं। इसके कारण हमारा युवा तीर्थों पर दर्शन करने तक ही अपने आपको सीमित कर लेता है जबकि तीर्थों के समग्र विकास हेतु -

1 - पुस्तकालय विज्ञान के जानकार जो क्षेत्र पर उपलब्ध पांडुलिपियों, पत्र - पत्रिकाओं एवं पुस्तकों को व्यवस्थित करने में सहयोग दे सकें।

2 - उद्यानिकी के विशेषज्ञ जो क्षेत्र पर हरियाली को विकसित कर क्षेत्र एवं परिस्थितियों के अनुरूप वृक्षारोपण करा सके।

3 - इंजीनियर एवं आर्कीटेक्ट जो क्षेत्र पर उपलब्ध भूमि का बेहतर उपयोग करने हेतु योजना बनावे एवं उसके क्रियान्वयन में सहयोग दे।

4 - एडवोकेट्स जो क्षेत्र की भूमि एवं अन्य कानूनी दस्तावेजों का परीक्षण कर उन्हें विधिसम्मत करा सके।

5 - वास्तुविद जो बिना अधिक तोड - फोड के यत्किंचित परिवर्तन कराकर क्षेत्र की प्रगति के द्वार खोल सके। ध्यान रखें कि इस कार्य में क्षेत्र का पुरातत्व एवं मूल संरचना में किसी प्रकार का संशोधन/परिवर्तन/परिवर्द्धन नहीं किया जाना चाहिये।

आदि सभी की जरूरत होती है। हमें सभी का सहयोग लेना है तथा सभी तीर्थों का विकास करना है। यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक तीर्थ के निकटवर्ती क्षेत्रों में सभी प्रकार के विशेषज्ञ मिल जायेंगे किन्तु जो भी उपलब्ध हों उनको साथ लेकर कार्य को आगे बढ़ावें। एक के बाद एक लोग जुड़ते जायेंगे एवं क्षेत्र की प्रगति में हमें सबका सहयोग मिलेगा।

जिनवाणी रक्षा का पर्व श्रुत पंचमी (ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी) इस वर्ष हमने 9 जून 2016 को धूमधाम से मनाया है। इसी अंक में पं. विजयकुमार जैन प्रतिष्ठाचार्य ने श्रुत पंचमी पर विशेष लेख लिखा है जो इस पर्व की कथा एवं महत्ता को बताता है। मेरा भी सभी सक्रिय कार्यकर्ताओं एवं विद्वानों से आग्रह है कि वे अपने - अपने निवास के समीपवर्ती तीर्थक्षेत्रों के सरस्वती भंडारों (शास्त्र भंडारों) का अवलोकन करें तथा यदि वहाँ पांडुलिपियाँ हैं तो मुझे उसकी सूचना दें। हम उनके संरक्षण, सूचीकरण में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

सहयोग की आशा में।

डॉ. अनुपम जैन
प्रधान सम्पादक

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 6 अंक 12 जून 2016

श्रीमती सरिता एम.जैन	अध्यक्ष
श्री प्रदीप जैन पी.एन.सी.	उपाध्यक्ष
श्री वसंतलाल एम.दोशी	उपाध्यक्ष
श्री नीलम अजमेरा	उपाध्यक्ष
श्री पंकज जैन	उपाध्यक्ष
श्री महावीरप्रसाद सेठी	उपाध्यक्ष
श्री संतोष पेंढारी	महामंत्री
श्री शिखरचंद पहाड़िया	कोषाध्यक्ष
श्री विनोद बाकलीवाल	मंत्री
श्री वीरेश सेठ	मंत्री
श्री शरद जैन	मंत्री
श्री खुशाल जैन सी.ए.	मंत्री

प्रो.अनुपम जैन, इंदौर - प्रधान संपादक
उमानाथ दुबे - संपादक

परामर्श मंडल

डॉ. भागचन्द जैन 'भास्कर', नागपुर
शांतिलाल जैन जांगड़ा, उदयपुर
प्रो. डॉ.अजित दास, चेन्नई
प्रो. डी.ए.पाटील, जयसिंगपुर
श्री अनिलकुमार जोहरापुरकर, नागपुर
श्री स्वराज जैन, दिल्ली
श्री राजेन्द्र महावीर, सनावद

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370
e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी. पी. रोड, मुंबई के सेविंग खाता क्र. 13100100008770, IFSC CODE BARB0VPROAD अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी. पी. टैंक, मुंबई के खाता क्रमांक 001210100017881, IFSC CODE BKID0000012 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं

तीर्थ-तीर्थक्षेत्र व तीर्थवंदना	7
जैन इतिहास, कला एवं संस्कृति	9
जैन तीर्थ वंदना रथ प्रवर्तन	12
महामस्तकाभिषेक महोत्सव-2018 सरल एवं आडम्बर रहित होगा	13
जैनियों का प्रमुख त्यौहार है श्रुत पंचमी	16
जैन कला एवं चित्रकला की विधाऐं	19
प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं की महानता	22
भिलोड़ा का श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन बावन जिनालय	24
कुण्डलपुर में हुआ बड़े बाबा का महामस्तकाभिषेक	28
भारतीय विद्या और आधुनिक शिक्षा	30
हमारे नये बने सदस्य	36

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवधर्न और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिए

संरक्षक सदस्य	रु.5,00,000/- प्रदान कर
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/- प्रदान कर
सम्मानीय सदस्य	रु. 31,000/- प्रदान कर
आजीवन सदस्य	रु. 11,000/- प्रदान कर

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढी, कम्पनी, चरिटेबल ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब सोसायटी या कार्पोरेट बाडी भी उपरोक्त प्रावधान के अन्तर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्ष के लिए होगी।

2) जो सदस्य इनकम टैक्स की छूट चाहेगें उन्हें 80जी के अन्तर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।

3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

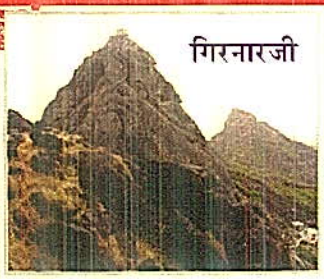
गिरनारजी

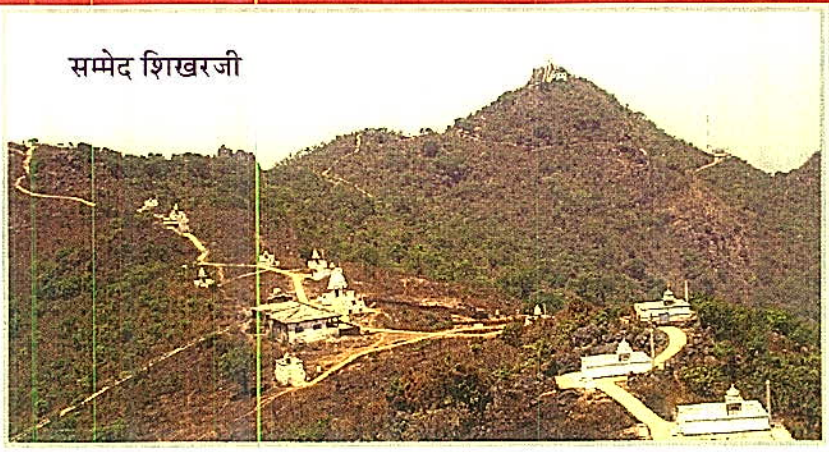
सम्मेद शिखरजी

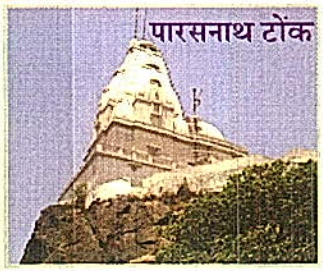
पारसनाथ टोंक

अयोध्या

कोल्हुआ पहाड़

तीर्थ-तीर्थक्षेत्र व तीर्थवंदना

अनिलकुमार जोहरापुरकर

बावनगजाजी

तीर्यते संसार सागर; येन स: तीर्थ,

जिनके आश्रय से जीव संसार रुपी सागर से पार होता हैं, उसे तीर्थ कहते है। तीर्थ शब्द का अर्थ धर्म भी होता है, इसलिये तीर्थ के अथवा धर्म के प्रवर्तन करने वाले महापुरुषों को तीर्थंकर कहा जाता है। अरिहंत भगवान द्वारा प्रतिपादित जैन धर्म ही हमारे लिए समीचीन तीर्थ है। व्यवहार में सामान्यत: जिन धार्मिक स्थलों की यात्रा की जाती है, उस तीर्थ कहा गया है।

श्री पूज्यपाद स्वामी श्री निर्वाण भक्ति में कहते है: इक्षुरस को यदि आटे में मिला दिया जाये तो आटे की मिठास पहले से और अधिक बढ जाती है उसी प्रकार जिन तीर्थोंपर तीर्थंकर, गणधर सामान्य केवली ने वास किया है, दर्शन, ज्ञान, चारित्र की आराधना कर जिस मुख्यभूमि से सिद्धत्व प्राप्त किया है, ऐसे पावन स्थल जगत के सभी प्राणियों के लिये वंदनीय और अधिक पूण्य संचय के. पवित्रता के अक्षय स्त्रोत है।

भिलोडा

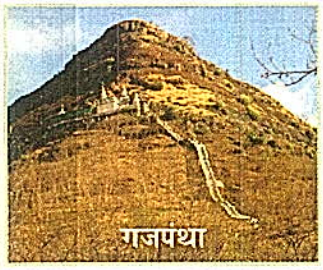
गजपंथा

संसाराब्धेर पारस्य तरणे तीथमिष्यते

आचार्य जिनसेन स्वामी ने आदिपुराण में कहा है कि, जो इस अपार संसार समुद्र से पार करे उसे तीर्थ कहते है। ऐसा तीर्थ जिनेन्द्र भगवान का चरित्र ही हो सकता है। अत: जिनेन्द्र भगवान का चरित्र तीर्थ है।

चम्पापुर

महावीरजी

पावनानि हि जायन्ते स्थानान्यापि सदाश्रयात

पूज्य वादीभसिंह सूरि ने क्षत्रचूडामणि मे लिखा है, जिस प्रकार पारस के स्पर्श से लोहा स्वर्ण बन जाता है उसी प्रकार सत्पुरुषों के स्पर्श से स्थान पवित्र हो जाते है। पवित्रता के मूर्तिमंत पर्याय, तीर्थंकर और तीर्थ हमारी आस्था और जिष्ठा के केन्द्र है। तीर्थ न केवल श्रमण संस्कृति की अपितु भारतीय संस्कृति की अनमोल धरोहर है। तीर्थ यह तपोभूमि है। पुरातत्व और कला का संगम है इसका वर्णन दो प्रकार से किया जाता है: भावतीर्थ और द्रव्यतीर्थ

गुणावा

धर्मस्थल

भावतीर्थ: सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान व सम्यकचारित्र रुप परिणीत आत्मा भावतीर्थ है अर्थात् सभी अरिहंत भगवान सिद्धभगवान व सभी महामुनी हमारे भावतीर्थ है। जिनकी वंदना, पूजा, स्तुति हम नित्य करते है।

द्रव्यतीर्थ: तीर्थंकर भगवान की पंचकल्याणक भूमि. सिद्धक्षेत्र या निर्वाध क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, आदि द्रव्यतीर्थ है।

श्रवणवेलगोला

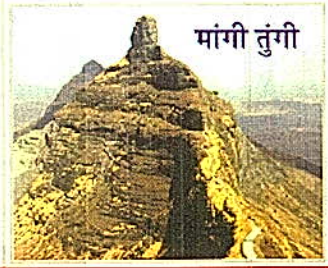
मांगी तुंगी

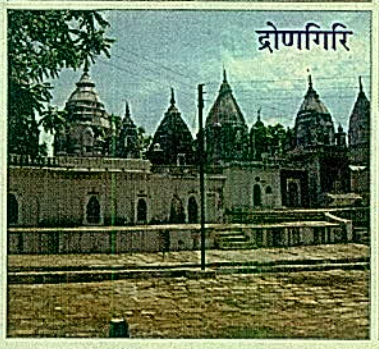

तीर्थो के भेद: जैन धर्म में तीन प्रकार की तीर्थोंकी मान्यत प्रचलित है, और उसकी वंदना होती है:

अ) श्री सिद्धक्षेत्र या निर्वाण क्षेत्र: जिस क्षेत्र पर तीर्थंकर या तपस्वी मुनी का निर्वाण हुआ है, वह क्षेत्र निर्वाण क्षेत्र या सिद्धक्षेत्र है। जिस स्थान पर तीर्थोंकरों का निर्वाण होता है, वहाँ सौधर्म इंद्र चिन्ह अंकित करते है, और भक्तजन उसी स्थानपर चरण चिन्त स्थापन करते है। उदा. श्री सम्मेद शिखरजी, श्री गिरनारजी, श्री चंपापुरी, श्री पावापुरी, श्री अष्टापद (कैलास पर्वत) श्री मांगीतुंगी, श्री मुक्तागिरि।

बी) श्री अतिशय क्षेत्र: किसी मंदिर में या कोई मूर्ति में चमत्कार दिखा तो उस क्षेत्र को अतिशय क्षेत्र कहा जाता है उदा. श्री महावीरजी, श्री निजारा, श्री कचनेरजी, श्री भातकुली, श्री पद्मप्रभुजी आदि.

तीर्थ मान्यता: प्रत्येक धर्म के अनुयायी बडे भक्ति भाव से अपने-अपने तीर्थों की यात्रा कर, पुण्य संचय कर, उर्जा प्राप्त करते हैं। वास्तव में यदि विचार किया जाय तो कोई भी भूमि स्वत: पूज्य या अपूज्य नही होती। महापुरुषों के संसर्ग से, सानिध्य से वह स्थान पवित्र बनता है। महापुरुषों के गुणों की पूजा होती है, वे गुण जिस शरीर में रहते है वह देह पवित्र और जिस भूमि पर वास व बिहार करते है, वह स्थान पूज्य बनते है। माता, पिता, जिन्होंने हमें जन्म दिया उन्हें हम पूज्य व तीर्थरुप मानते है, फिर जिन-जिन तीर्थों पर महापुरुषों ने जन्म लिया, कठोर तपस्या की, निर्वाण को प्राप्त कर सिद्ध हुए वे सब क्षेत्र तो निश्चितरुप से पूजनीय है, और रहेंगे, इसमे कोई विवाद का प्रयोजन है, और रहेंगे इसमें कोई विवाद का प्रयोजन ही नहीं है.

तीर्थ यात्रा का उद्देश्य: तीर्थयात्रा का मुख्य उद्देश्य आत्मविशुद्धी, होना चाहिये, जिससे हमारे नकारात्मक विचारों की शुद्धी होकर हम सकारात्मक बने, हमारे आत्मबल में वृद्धी हो। जिस प्रकार तेल साबन से शरीर की शुद्धी होती हैं, बडीसेप लवंग आदि से मुखशुद्धी होती हैं, उसी प्रकार तीर्थ यात्राओं से आत्म शुद्धी होती है, कर्म का क्षय होता है।

तीर्थयात्रा यह बाह्यशुद्धि के साथ-साथ आत्मविकास का साधन है। तीर्थभूमि हमारे लिए साधन और संधि उपलब्ध करा देती है, कि, हम वहाँ जाकर, वहाँ के भूमि से समरस होकर, उस क्षेत्र से संबंधित भगवान का स्मरण, स्तवन, पूजन करते है और उनके पावन चरित्र से प्रेरणा लेकर आत्मसुख की ओर कदम बढाने को उन्मुख होते है- जिसकारण हमारे अशुभ संकल्प, विकल्प छूटकर, शुभ-भाव में परिणीन हो जाते है, पुण्य का संचय होता है। अत: तीर्थयात्रा करते समय हमे तीर्थोंपर प्रत्येक कार्य, श्रद्धापूर्वक, प्रामाणिकता के साथ, सजगता से, संयम सहे, सावधानीपूर्वक, विनयभाव से, असीम भक्ति से तीर्थवंदना करनी चाहिये, तभी हमे तीर्थयात्रा का फल प्राप्त होगा अन्यथा तीर्थस्थल व मनोरंजन स्थल में कोई फर्क नहीं होगा।

तीर्थों का महत्व:

तीर्थभूमि की रज इतनी पवित्र होती है कि उसके स्पर्श से मनुष्य रजरहित अर्थात कर्ममल रहित बनता है। तीर्थों पर भ्रमण करने से संसार में भ्रमण का नाश होता है। तीर्थोंपर दान देने से अविनाशी लक्ष्मी यानी मोक्षरुपी लक्ष्मी की प्राप्ती होती है। तीर्थोंपर जो भगवान की शरण में जाते है, उनके निरुपण किये धर्ममार्ग को जीवन में उतारते है वे जगत पूज्य बनते है।

(क्रमश:)

जैन इतिहास, कला एवं संस्कृति

भट्टारकशिरोमणी, डॉ. स्वस्तिश्री लक्ष्मीसेन
महास्वामी, कोल्हापूर

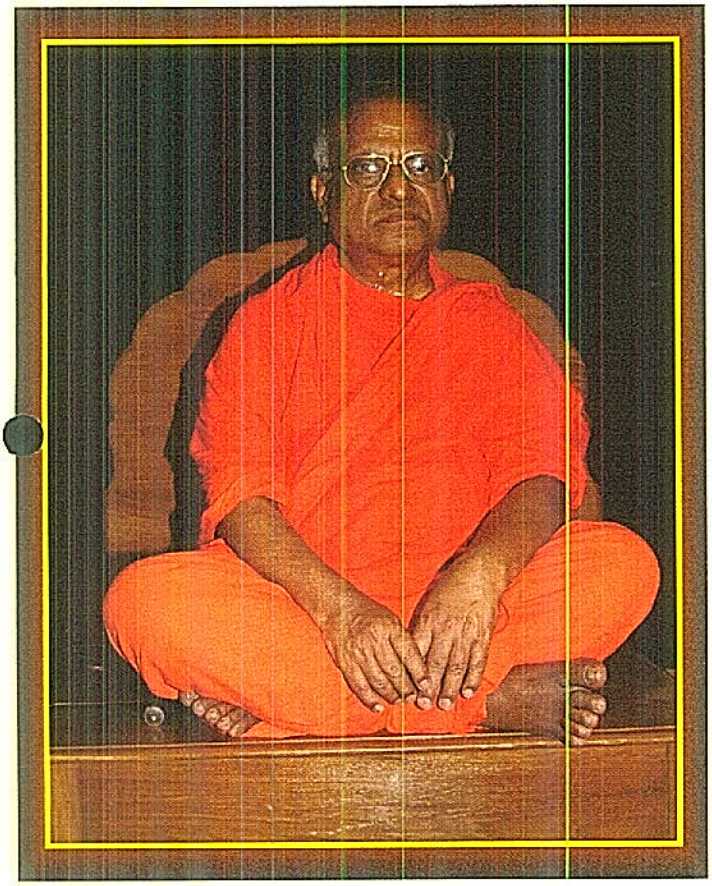

परम पूज्य भट्टारकरत्न, शांतमूर्ति, संहितासूरी, जगदगुरु,
धर्मदिवाकर पट्टाचार्य स्वस्ति श्री लक्ष्मीसेन महास्वामीजी - कोल्हापुर

जैन धर्म की उदात्त लोकमंगल की पृष्ठभूमि का विवेचन करते हुए सुप्रसिद्ध गांधीवादी विचारक काका साहब कालेलकर की मान्यता है कि विविध अहिंसा-स्याद्वाद्व रुपी बौद्धिक अहिंसा, जीवदयारुपी नैतिक अहिंसा और तपस्या रुपी आत्मिक अहिंसा का आदर्श सिद्धान्त प्रस्तुत करने वाला धर्म ही विश्व धर्म हो सकता है। विश्व के किसी भी देश का, किसी भी वंश का मनुष्य तीर्थकर वाणी का अनुसरण करके जैन बन सकता है। जैन धर्मानुयायियों ने स्वयं को विश्व समाज, राष्ट्रीय धारा और लोक जीवन से कभी पृथक नहीं किया और न ही अपने को प्रतिस्थापित करने के लिए आग्रहवादी दृष्टि अपनायी।

इस लेख का उद्देश्य जैन इतिहास, कला व संस्कृतिके उन उपायों को उद्घाटित करना है जिनसे विश्व संस्कृति एवं राष्ट्रीय जीवन अनुप्रामणति हुआ है। इतिहास, कला और संस्कृति से हमारा अभिप्राय पूर्वपरम्परा, सौन्दर्य चेतना और मानवीय सहिष्णुता से हैं।

प्राचीन विश्व में किन्ही कारणों से इतिहास लेखन की क्रमबद्ध परम्परा का विकास नहीं हो पाया। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की दृष्टि में भारतवर्ष के निर्मल आकाश में इतिहास चन्द्रमा का दर्शन नहीं होता, क्योंकि भारतवर्ष की प्राचीन विधाओं के साथ इतिहास का भी लोप हो गया। कुछ तो पूर्व समय में श्रृंखलाबद्ध इतिहास लिखने की परम्परा ही नहीं थी और जो कुछ बच गया था वह भी कराल काल के गाल में समा गया। वर्तमान इतिहास लेखन की परम्परा अत्याधुनिक है और साथ ही समग्र चेतना के विशदीकरण हेतु तुलनात्मक संस्कृतियों के अध्ययन पर बल देती है। जैन संतों के समर्थ कृतित्व के कारण विगत 2600 वर्ष के भारतीय इतिहास को समझने के लिए उपयोगी सामग्री उपलब्ध होती है।

भारतीय कला की यदि कोई परिभाषा की जाए तो वह ईश्वर की सुन्दर सुष्टि का कृत्रिम प्रारुपण होगा। भारतीय कलाकार आध्यात्म दर्शन की अत्यानुभूति से उसी प्रकार कला का सर्जन करता आया है जैसे एक दार्शनिक साधक मुक्ति के लिए साधना करता है। सत्यं शिवं सुन्दरं भारतीय कला की एक संतुलित एवं लोकप्रिय व्याख्या रही है। जिसमें सत्य सौन्दर्य और अध्यात्म तीनों का सम्मिलन हुआ है। इनमें से यदि एक भी पक्ष कम रह जाए तो कला विकृत हो जाती है। सिंधु सभ्यता के महान् अन्वेषक सर जान मार्शल का यह विश्वास रहा है कि सिंधु संस्कृति यज्ञ प्रधान वैदिक संस्कृति ते सर्वथा भिन्न रही है। उन्होंने मोजनजदड़ो से प्राप्त कुछ मुहरों पर जैन प्रभाव को इंगित करते हुए लिखा है कि तीन मुहारों पर जैन तीर्थंकरों की कार्योत्सर्ग मुद्रा में खड़े विवस्त्र वृक्ष देवता दिखायी देते हैं। नवीनतम शोधों के अनुसार सिंधु सभ्यता से प्रभावित भौगोलिक परिधि की सीमाओं में अत्यधिक विस्तार हुआ है। देश विदेश के अनेक भाषाविद् पुराशास्त्री अब भी 5000 से अधिक की संख्या में प्राप्त अभिलेखों का वैज्ञानिक एवं तुलनात्मक अध्ययन कर रहे हैं।

जैन धर्म में मूर्ति पूजा की अवधारणा पौराणिक युग से चली आ रही है। इस सम्बन्ध में अनेक आचार्यों एवं विद्वानों ने अपनी-अपनी शोधपूर्ण दृष्टि प्रदान की है। मौर्य राज्य के पतन और सेनापति पुष्यमित्र के अभ्युदय से जैन मूर्तिकला के विकास में अवरोध-सा गया था। क्योंकि वह श्रमण परम्परा का कट्टर विरोधी था।

प्राचीन काल के मथुरा भारतीय संस्कृति का प्रभावशाली केन्द्र रहा है। बृहत्कल्पभाष्य की अनुभूति के अनुसार इस नगर के 83 ग्रामों में लोग अपने घरों के द्वारों के ऊपर तथा चौराहों पर जिनमूर्तियों की स्थापना करते थे। इस क्षेत्र में जैन पुरावशेष बड़ी संख्या में प्राप्त हैं।

जैन धर्म में मूर्ति पूजा का विधान भाव शुद्धि के लिए किया गया था। तीर्थकर प्रतिमाएँ सांसारिकता में लिप्त मानव समाज को आत्मानुसंधान के लिए प्रेरित करती है। जैन मूर्तियों के मुखमंडल पर अनन्त शांति और वीतराग भाव विह्वल हो जाते है। महान् कला प्रेमी बेंजमिन रोलैण्ड की जैन मूर्ति शिल्प की कायोत्सर्ग मुद्रा और उसके दर्शन से अत्यधिक प्रभावित होकर श्रमण

संस्कृति के महत्व को रेखांकित किया है।

भारतवर्ष में जैन मन्दिर एवं मूर्तियों की अनवरत परम्परा को ध्यान में रखते हुये यह कहा जा सकता है कि सौन्दर्यबोध में अग्रणी जैन समाज अपने आराध्य पुरुषो की पूजा, आत्मशांति एवं गुरु भक्ति के लिए मन्दिरों का निर्माण कराने में सर्वप्रमुख रहा है। जैन मन्दिर और मूर्तिकला के क्रमिक विकासके अध्ययन से यह महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष निकालता है कि उदार एवं धर्मनिरपेक्ष शासकों के राज्यकाल में देश समृद्ध होता है और कलाओं के विकास को बल मिलता है। जैन साहित्य और पुरातत्त्व के आधार पर कहा जा सकता है भारतवर्ष के विभिन्न राज्यों मथुरा, पाटिलपुत्र और पेशावर आदि स्थानों पर बड़ी संख्या में जैन स्तूप रहे है।

जैन धर्म अपनी उदार दृष्टि एवं जीवन मूल्यों के कारण सनातन काल से मानव मात्र के धर्म के रुप में जाता है। इसके समुन्नत दर्शन एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने मानव समाज के चिन्तर पक्ष को प्रभावित किया है।

सामाजिक व्यवस्था की दृष्टि से जैन धर्म में चतुर्विध संघ का विधान है। समाज के सर्वांगीण विकास में सभी का सम्मिलित योग होता है। समाज के कल्याण में मुनि भी प्रयत्नशील रहे हैं। जैन धर्मानुयायियों ने परम्परा से भी प्रयत्नशील रहे हैं। जैन धर्मानुयायियों ने परम्परा से अपने पवित्र आचरण एवं व्यवहार से भारतीय समाज विशिष्ट गौरव अर्जित किया है।

भारतवर्षीय के सांस्कृतिक इतिहास के सम्यक दिग्दर्शन के लिए समाज का यह दायित्व हो जाता है कि वह अपनी ऐतिहासिक विरासत की समुचित सुरक्षा का प्रबंध को अपने गोरवशाली अतीत की कड़ियों को श्रृंखलाबद्ध कर सकते हैं। आवश्यक प्रबंध व्यवस्था, उचित रखरखाव आदि के अभाव में अनेक महत्त्वपूर्ण कलाकृतियाँ एवं पाण्डुलिपियाँ नष्टप्राय अवस्था में पहुंच गयी हैं।

भारतीय सम्पदा की दृष्टि से भारतवर्ष का जैन समाज सनातन काल से समृद्ध रहा है। एक पुरातत्त्व शास्त्री के अनुसार सम्पूर्ण भारतवर्ष में शायद एक भी ऐस स्थान नहीं होगा जिसे केन्द्र बनाकर यदि 12 मील व्यास का एक काल्पनिक चित्र खींचा जाए तो उसके भीतर एक या अधिक जैन मन्दिर, तीर्थ बस्ती या पुराना अवशेष न प्राप्त हो जाए।

वस्तुत: किसी भी राष्ट्र और समाज के उत्थान में उसका गौरवमय अतीत एक प्रेरणा स्त्रोत का कार्य करता है। विश्व के सभी धर्म अपनी पूर्व परम्परा से प्राणशक्ति एवं निर्देशक सिद्धान्त प्राप्त करते हैं। अत: प्रत्येक समाज का यह निष्कर्ष निकलता है कि जो समाज अपने अतीत, पूर्व परम्पराओं, साहित्य दर्शन इत्यादि से प्रेरणा ग्रहण नहीं करता वह शीघ्र ही काल कवलित हो जाता है।

जैन अभिलेखो के द्वारा जैन इतिहास काल और संस्कृति का विस्तार पूर्वक विवेचन किया जा सकता है। भारतवर्ष के जैन समाज ने अपनी सांस्कृतिक सम्पदा के इस अनमोल खजाने की बड़ी उपेक्षा की है। देश विदेश के विद्वानों के सतत् परिश्रम के परिणामस्वरुप अनेक जैन अभिलेख प्रकाश में आ पाये हैं। महान् प्राच्यविद्या विशेषज्ञ लूइस राईस के अनथक प्रयास से मैसूर राज्य के जैन अभिलेख प्रकाश में आये हैं। अभिलेखों की पांडुलिपि बनाना और उसे पढना में श्रमसाध्य कार्य है।

भारतीय संस्कृति और कला के विशेषज्ञ श्री वाचस्पति गैरोला ने जैन चित्रकला के इतिहास, परम्परा और प्रभाव का विस्तार से वर्णन करते हुए कहा है कि- भारतीय चित्रकला के इतिहास में जैन चित्रकला न केवल अपनी समृद्ध थाती के लिए, अपितु प्राचीनता के लिए भी प्रसिद्ध है। भारतीय चित्रकला की समस्त शैलियों में 15 वीं शती ई. से पहले के जितने भी चित्र प्राप्त है, उनमें मुख्यता तथा प्राचीनता जैन चित्रों की है। प्राचीन महत्त्व के ये जैन चित्र दिगम्बर जैनों से सम्बद्ध हैं।

वस्तुत: ऐतिहासिक विकास-क्रम की दृष्टि से 10वीं शती ई. तक की चित्रकला- परम्परा का सर्वाधिक योगदान रहा है। जैन चित्रकला के मुख्यत: तीन माध्यम हैं ताड़पत्रीय, कपड़ा तथा कागज। कागज की पोथियों पर कलाकारों ने सुन्दर चित्र बनाये है। इस प्रकार की अधिकतर पोथियाँ यद्यपि जैन-धर्म से ही सम्बद्ध हैं। कागज की जो पोथियाँ चित्रित की गयी है उन्हे ताड़पत्रीय आकार में काटकर उन पर लेखन तथा चित्रण का कार्य किया गया है। इन पोथियों पर मूल्यवान स्वर्ण तथा रजत रंगों का उपयोग किया गया है। ताड़पत्र और कागज के अतिरिक्त वस्त्र तथा पटों पर भी जैन-कलाकारों ने चित्रण किया। इन कलाकारों को वस्त्रचित्रों की प्रेरणा सम्भवत: बौद्धकला से प्राप्त हुई थी। जैन शैली का एक महत्त्वपूर्ण वस्त्रचित्र वाशिंगटन की फ्रीयर आर्ट गैलरी में सुरक्षित है, जो बसन्तविलास पर आधारित है और जिसे विश्व चित्रकला के इतिहास में दुर्लभ कलाकृति माना जाता है।

शैली एवं संरचना की दृष्टि से जैन चित्रकला का अपना पृथक महत्त्व है। उसका चक्षु-चित्रण उसकी विशिष्टता का द्योतक है, जो प्रत्येक दर्शक को सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। जैन चित्र-कला का यह चक्षु-चित्रण वस्तुत: जैन मुर्तिक शिल्प का रिक्श है, जिसे विशेष रुप से जैन प्रतिमाओं में देखा जा सकता है। रंगों और रेखाओं के संयोजन में भी जैन कलाकारों की सजगता प्रशंसनीय है। ताड़पत्रों पर अंकित चित्रों में प्रधानत: पीले रंग को भी संयोजित किया गया है। कागज के चित्रों की पृष्ठभूमि पीले तथा लालरंग की है और वस्त्रचित्रों पर उनके छोटे-छोटे चिह्न अंकित कर दिये गये हैं।

जैन धर्म के प्रारम्भिक प्रतिष्ठानों के निर्माण में काष्ठ का बहुलता से प्रयोग हुआ है। श्री हद्यवदन राव के अनुसार-जैन मतावलम्बियों ने प्रारम्भ में जिन धार्मिक स्थानों निर्माण किया उनके लिए काष्ठ का उपयोग किया गया। कालान्तर में इनके स्थान पर पत्थर के पक्के चैत्यालय बनाए गए। इस तथ्य का उल्लेख उस समय के अनेक शिलालेखों में मिलता है। जैन काष्ठ शिल्प की प्राचीनता एवं जैन कला में काष्ठ के वैविध्यपूर्ण प्रयोगों को दृष्टिगत कर डॉ. विनोद प्रकाश द्विवेदी ने कहा है कि काष्ठ शिल्प में जैनों ने अपने सहगामी हिंदुओं और बौद्धो का नेतृत्व किया। जैन काष्ठ शिल्पांकनों से उनका

निर्माण करानेवाले जैन धनिकों की अभिरुची का आभास मिलता है जो अपने घर-देरासरों या मन्दिरों में उपलब्ध तिल-तिल स्थान का अलंकारण हुआ देखना चाहते थे। वास्तव में जैन काष्ठ शिल्प श्रावकों के अन्तर्मन की सौन्दर्यनुभूति का भक्तिपरक चित्रण है।

जैन धर्म अपनी उदार दृष्टि एवं जीवन मूल्यों के कारण सनातन काल से मानव मात्र के धर्म के रुप में जाना जाता है। इसके समुन्नत दर्शन एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने मानव समाज के चिन्तन पक्ष को प्रभावित किया है। प्राचीन युग में इस महान विचारधारा ने तत्कालीन संसार को किस प्रकार से संस्कारित करने में सहयोग दिया, यह अब शोध का विषय है। समय-समय पर विभिन्न शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित निबन्धों से यह जानकारी अवश्य मिलती है कि भारतवर्ष के इस प्राचीन धर्म का विश्व समाज के उन्नयन में अपूर्व सहयोग रहा है।

जैन धर्म के सांस्कृतिक प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए किसी समर्थ मुनि अथवा श्रावक दल को भगवान् महावीर स्वामी की पदयात्रा के पथ का अनुगमन करना चाहिए। भारतवर्ष के जैन समाज के पास अन्य धर्मानुयियों की अपेक्षा बडी संख्या में ऐतिहासिक अभिलेख सुरक्षित हैं। इन अभिलेखों के द्वारा भारतीय इतिहास की समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

इन अभिलेखों के द्वारा जैन इतिहास, कला और संस्कृति का विवेचन किया जा सकता है। देश-विदेश के विद्वानों के सतत् परिणामस्वरुप अनेक जैन अभिलेख प्रकाश में आ पाए है।

साधन सम्पन्न जैन समाज की अखिल भारतीय संस्थाओं को इस संदर्भ में सक्रिय रुचि लेनी चाहिए। प्राचीन भारतीय जैन अभिलेखों के पुनर्ममूल्यांकन के लिए भारतीय पुरालिपियों के अध्ययन की विशेष व्यवस्था भी होनी चाहिये। देश के विभिन्न भागों में हो रहे उत्खन्न के कार्यो या अन्य स्त्रोंतों से प्राप्त जैन पुरातात्त्विक सामग्री के प्रदर्शन के लिए राष्ट्रीय एवं राजकीय संग्रहालयों में पृथक् गैलरी होनी चाहिए। शिक्षा मंत्रालय एवं पुरातत्त्व विभाग को प्रतिवर्ष देश-विदेश से प्राप्त अथवा प्रकाश में आये हुए जैन अवशेषों की जानकारी के लिए स्वतंत्र रुप से पत्रिका का प्रकाशन करना चाहिये। वर्तमान में कई संस्थाओं से पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जा रहा है लेकिन वह अभी सम्पूर्ण पुरातात्त्विक सामग्री का मात्र परिचय प्राप्त हो रहा है। इसलिए इस क्षेत्र में गहन विचार विमर्श और आधुनिक ज्ञान विज्ञान के दृष्टिकोण से ऐसी पत्रिका का प्रकाशन किया जाए जिसमें पुरातात्त्विक सामग्री के चित्र एवं लेख की प्रतिलिपि भी होनी चाहिए। भारतवर्ष के जैन समाज को भी इस प्रकार अपने मन्दिरों की सांस्कृतिक सम्पदा से विश्व को परिचित करने के लिए उपयोगी प्रकाशन करने चाहिए।

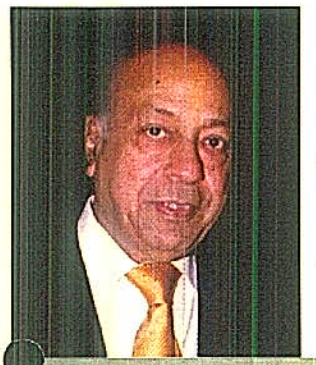

श्री सतीशचन्द जैन SCJ वसंत विहार, न्यु दिल्ली फरवरी 2018 में होने वाले भगवान गोमटेश्वर बाहुबली महामस्तकाभिषेक महोत्सव समिति के महामंत्री बने

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि दिल्ली के प्रसिद्ध उद्योगपति एवं तीर्थक्षेत्र कमेटी के संरक्षक सदस्य श्री सतीशचन्द जैन, चैयरमेन एवं मैनेजिंग डायरेक्टर SCJ ग्रुप, दिल्ली फरवरी 2018 में होने वाले भगवान गोमटेश्वर बाहुवली महामस्तकाभिषेक महोत्सव समिति के महामंत्री चुने गये हैं। श्री सतीश जी ने पिछले महामस्तकाभिषेक में कलश आवंटन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के सम्माननीय सदस्य श्री अनिल सेठी, वैंगलोर को फरवरी 2018 में होने वाले भगवान बाहुवली महामस्तकाभिषेक महोत्सव में आवास समिति का चेयरमैन तथा तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय मंत्री श्री विनोद बाकलीवाल, मैसूर को भोजन समिति का चेयरमैन नियुक्त किया गया

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार की ओर से उपरोक्त महानुभावों को हार्दिक बधाई

जैन तीर्थ वंदना रथ प्रवर्तन

प्रोफेसर डॉ. भागचन्द्र जैन भास्कर

आ. बहिन सरिता एम.के.जैन एक सशक्त हस्ताक्षर हैं जिनके सबल कन्धों पर दि. जैन तीर्थक्षेत्र के संरक्षक का रथ सन्यस्त कर दिया गया है। ताज पोशी के उपरान्त उन्हें जो प्यार मिला है, आत्मीयता मिली है वह निस्सन्दह अनूठी है, अनुपम है। एक बार पुन: पुन: उन्हें बधाइयां। बधाइया, पुन: इसलिए कि उनके मन में जो उत्साह है, संकल्प है, त्याग है वह निश्चित ही तीर्थ क्षेत्रों के कार्याकल्प करने में सार्थक सहयोगी होगा।

तीर्थवन्दना वस्तुत: एक धर्म-रथ है जो निर्वणि-प्रति का मार्ग प्रशस्त करता है। धर्म-रथ के दोनों पहिए श्रावक और मुनिवर्ग हैं, धुरा चर्या है, रस्से रत्नत्रय हैं जुआ के दोनों छोर श्रेष्ठीवर्ग और विद्वद्वर्ग है, पहियाँ के डंडे सप्तत्त्वों के ज्ञान-सूत्र हैं, बैल हांकने की लाठी संकल्प है और सारथी तीर्थवन्दना की महारथी सरिता बहिन हैं।

तीर्थ वन्दना रुप यह धर्मरथ सरिताजी के पास लगभग ढाई वर्ष तक रहेगा। यूंकि उनके कन्धे मजबूत हैं। यह रथ भी मजबूत होता चला जायेगा और समाज आश्वस्त होती जायेगी यह देखकर कि उसका सारथी दृढसंकल्प लेकर तीर्थों को स्वस्थ बनाने की ओर बडी तेजी से आगे बढ रहा है।

तीर्थ वन्दना के प्रति समाज में जागरुकता लाने के लिए रथ-प्रवर्तन की एक योजना बननी चाहिए। यह योजना प्रार्दशिक स्तर पर होती अच्छा है। प्रदेश के नेतृत्व में यह रथ गांव-गांव और नगर-नगर में घूमे, समाएं करे, बोलियाँ और धन के माध्यम से पैसा एकत्रित करे और उस पैसे से वही के तीर्थक्षेत्रों के विकास की योजना बनाये।

सरिता एक नदी है और नदी का स्वच्छ प्रवाह समभाव रुप से सभी की पिपासा को शान्त करता है, कृषि-सिंचन करता है और दोनों तटों पर घाट बनाकर तटबन्ध से सारे कल्याण करता है। घाट भले ही पुराने हैं पर उन्हें अब नई सीढियाँ की अवश्यकता है जो नया वतावरण देकर नया रुप निखारने में सहयोग करे।

विगत अंक का अध्यक्षीय सम्बोधन सरिता जी का मर्मिक उद्बोधन है। उसमें उन्होंने एक ओर अपनी कना और शिल्प की धर्राहर का आभास कराया है तो दूसरी ओर आराध्य जिनेन्द्र देव की सुरक्षा की ओर भी संकेत कराया है। उनके संबोधन में एक पीडा नजर आ रही है और विकास की रुपरेखा तथा संकल्प का प्रतिबिम्बन हो रहा है।

हमारे सामने आज तीर्थक्षेत्रों की सुरक्षा का प्रश्न मुंह वाये खड़ा हुआ है। विकास के नाम पर हमारी प्राचीन धर्राहर को कुचलाजा रहा है। वहां के इतिहास, पुरातत्त्व और शिलालेख मटियामेट किये जा रहे हैं, पूजा-पडति की बलात परिवर्तित करने का प्रयत्न हो रहा है, समाज में उपजातियों के बीच मनोमालिन्स खडा किया जा रहा है। फलत चार्रा ओर विघटन की प्रक्रिया प्रारम्भ हो चुकी है। प्रतिभाएं मन मसोस कर पलायन कर रही हैं, भेदभाव की कठोर और लीखी कृपाण की धार उनके शिर पर लटकती दिखाई देती है, अलगाव बढ रही है, अर्थ पानी की तरह बरबाद हो रहा हैं, प्रभाव के प्रभंजन से लोग उडते चले जा रहे हैं। ऐसी विसंगत परिस्थिति को यदि नहीं सम्हाला गया तो समाज रहे हैं। ऐसी विसंगत परिस्थिति को यदि नहीं सम्हाला गया तो समाज में विघटन की प्रक्रिया हमें कहां ले जायेगी, अकथ्य है। इस समस्या पर गम्भीरता पूर्वक विचार किया जाना चाहिए।

सरिताजी एक सरल प्रकृति की महिला हैं। आत्मविश्वास से भरकर, आत्ममुग्धता, और अपनी सर्वेच्चता बरकरार रखने के लिए जोड-तोड की नैतिकता पर तरजीह देने की मैकियविलीयन प्रवृत्ति से कोसों दूर उनका व्यक्तित्व निश्चित ही हमारी तीर्थ परम्परा के संरक्षक में अथक सफलता देगा। समन्वय और सामंजस्य स्थापित करने में उनका विश्वास आज की किसंगतियाँ की दूर करने में भी सहयोग देगा।

प्रस्तुत रथ-प्रवर्तन का उद्देश्य मात्र फण्ड कलेक्शन नही हैं। फण्ड-कलेक्शन तो होगा ही। करना भी है क्योंकि सब गुठ कांचनमाभ्रयन्ति ठीक ही कहा है। उस फण्ड कलेक्शन से ही तीर्थों का विकास हो सकेगा यह विकास मात्र भौतिक साधनों तक सीमित नहीं हो रहा उसका सम्बन्ध आध्यात्मिक चेतना को जाग्रत करने में अधिक होगा।

आज चतुर्मुरकी विकास करने का बाजार गर्म है। नवीन शिक्षा क्षेत्र सुर की भांति मंहगाई की ओर पैर पसार रहा है, आधुनिकता छात्र छात्राओं को आकर्षित करने में अहंभूमिका निभा रहे है। ऐसी स्थिति में यदि तीर्थक्षेत्र अपने ही परिसर में छात्रावासों की व्यवस्था कर दे तो उससे समाज का बहुत कल्याण होगा।

रथ-प्रवर्तन से समाज में एक नई चेतना और नई ऊर्जा का जागरण होगा। वर्तमान शिक्षा का क्षेत्र निस्सन्दह बहुत मंहगा है। यद्यपि हमारा समाज अपेक्षाकृत अधिक सम्पन्न है। फिर भी उसमें ऐसे परिवार कम नहीं हैं जो इस मंहगी शिक्षा को ओढ सकें और अपने प्रतिमा सम्पन्न बच्चा को उसे दे सकें। इस दृष्टी से छात्रावास के साथ ही अधिकाधिक छात्रवृत्ति देने की व्यवस्था भी यदि हम कर सकें तो हमारी नई पीढी शिक्षा के क्षेत्र और भी आगे बढ सकती है। स्वच्छ तातावरण शुद्ध भावन, आत्मीयता भरा व्यवहार उनके जीवन को सदा बहार बना देगा।

प्राचीन तीर्थों के पुरातत्त्व, को नवृ किये बिना उनका जीर्णोधार कराना रथ-प्रवर्तन का उर्दश्या तो होगी ही, पर आज जो नये-नये तीर्थों का उद्भावन रहा है। उनको भी यदि विकास की समुचित रुपरेखा के साथ निर्मित किया जा तो, समाज विकास में चार चांद लग जायेंगे।

रथ-प्रवर्तन के सन्दर्भ में एक विशेष बात विचारणीय है। यदि इस कथन को अन्यथा न लिया जाये तो मैं यह कहना चाहूंगा कि हमारे तीर्थक्षेत्र श्वेताम्बर सम्प्रदाय द्वारा रक्षित तीर्थक्षेत्रों के समक्ष गुणवत्ता में काफी पीछे हैं। उन क्षेत्रों का भ्रमणकर यह देखा जाना आवश्यक है कि किस रुप से वे उनकी व्यवस्था करते हैं और उस व्यवस्था में हम और क्या जोड सकृते हैं। पंचकल्यानका के संयोजन में मुनि वृन्दों के बीच होड मची हुई है और हमारा आर्थिक प्रदर्शन ईर्स्मा का विषय बन चुका है। इस आर्थिक प्रदर्शन से समाज को कोई विशेष लाभ नहीं मिल रहा है। रथ-प्रवर्तन योजना इस प्रवृत्ति को नया मोड देकर समाज के पिछले वर्ग को आगे बढाने में सहयोगी बन सकती है। यह उस की व्यावहारिक भूमिका होगी।

आइये हम सब मिलकर सरिता जी के स्वप्न को कियान्वित करने में सहयोग करें और तीर्थक्षेत्रों के सम्यक् विकास में अपना महत्त्व पूर्ण योगदान दें।

महामस्तकाभिषेक महोत्सव-2018 सरल एवं आडम्बर रहित होगा

-परम पूज्य कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामीजी

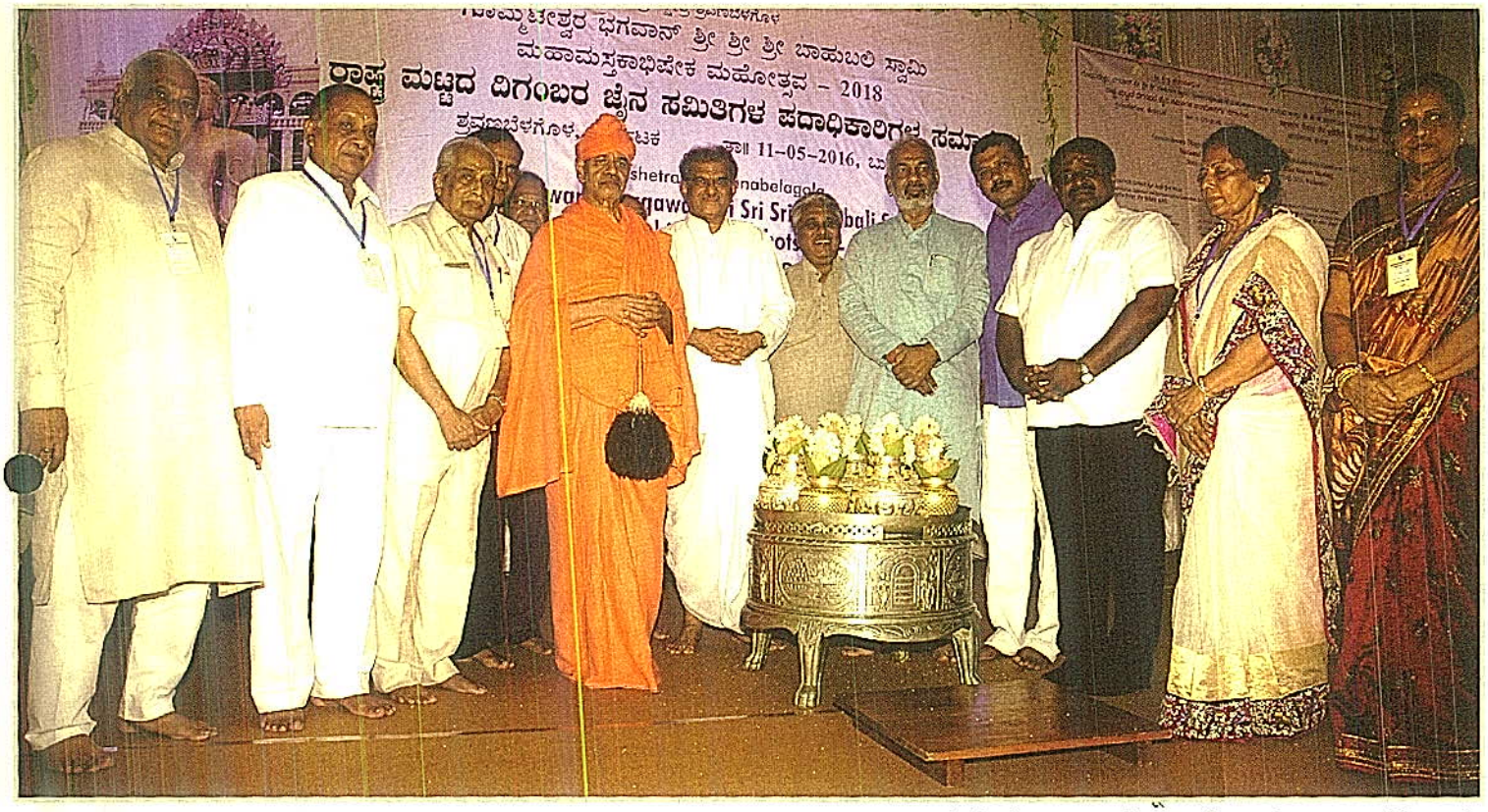

दिनांक 11.05.2016 दिन बुधवार को श्रवणबेलगोला में गोमटेश्वर भगवान श्री श्री बाहुबली स्वामी महामस्तिकाभिषेक महोत्सव-2018 की राष्ट्रीय स्तर दिगम्बर जैन संस्थाओं के पदाधिकारियों की मीटिंग सम्पन्न हुई जिसमें निम्नलिखित संस्थाओं के पदाधिकारियों ने भाग लिया।

1. भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
2. भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा
3. भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद्
4. भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासमिति
5. भारतवर्षीय दिगम्बर जैन अग्रवाल महासभा
6. दक्षिण भारत जैन महासभा
7. गुजराती दिगम्बर जैन समाज महासंघ
8. कर्नाटक जैन एसोशिएशन
9. अखिल कर्नाटक दिगम्बर जैन महिला ओक्कूट
10. कुन्द कुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट
11. हैदराबाद दिगम्बर जैन समाज
12. तमिलनाडु दिगम्बर जैन समाज
13. पॉडीचेरी दिगम्बर जैन समाज
14. केरल दिगम्बर जैन समाज
15. खण्डेलवाल दिगम्बर जैन समाज (कर्नाटक)

मीटिंग तय समय पर प्रात: 9.30 बजे गोमटेश्वर भगवान श्री श्री श्री बाहुबली भट्टारक महास्वामीजी की अध्यक्षता में शुरु हुई, पद्मविभूषण राजर्षि डॉ. डी. वीरेन्द्र हेगडे जी, धर्मस्थल एवं भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम. के. जैन एवं मंच उपस्थित सभी अतिथियों ने दीप प्रज्जवलित कर सत्र का उद्घाटन किया, स्वागत भाषण श्रीमान एस. जीतेन्द्र कुमार जी कार्यकारी अध्यक्ष ने दिया जिसमें उन्होंने महामस्तिकाभिषेक महोत्सव-2018 के बारे में विस्तृत जानकारी दी एवं महोत्सव को सफल बनाने हेतु योजना पर भी प्रकाश डाला, इसके उपरान्त श्रीमान ए. मन्जू, माननीय मंत्री जी कर्नाटक सरकार द्वारा इस आयोजन को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाने के लिए हर सम्भव मदद देने का वादा किया, उन्होंने यह भी बताया कि कर्नाटक सरकार पूरी तरह से इस आयोजन में सहभागिता करेगी और यह आयोजन बहुत बडे विशाल आयोजन के रुप में मनाया जायेगा। मंत्री जी के भाषण के बाद परम पूज्य कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामीजी द्वारा विशेष रुप से विषय प्रवर्तन किया और अपने एक घण्टे के हिन्दी, कन्नड़ एवं अंग्रेजी में दिये गये उद्बोधन में सभी राष्ट्रीय पदाधिकारियों का स्वागत करते हुए कहा कि प्रत्येक बारह वर्ष बाद महामस्तिकाभिषेक महोत्सव का आयोजन होता है, यह परम्परा सैकड़ों वर्षो से चली आ रही है, उन्होंने अपने उद्बोधन में आचार्य भद्रबाहु स्वामी से लेकर अब तक महामस्तिकाभिषेकों के बारे में बताते हुए कहा कि भक्ति से शक्ति, शक्ति से युक्ति और युक्ति से मुक्ति मिलती है। उन्होंने यह भी घोषणा की कि राज्य में, देश में और सम्पूर्ण विश्व में शांति बनी रहे इसी कामना के साथ प्रत्येक 12 वर्ष के अन्तराल में इस महामस्तिकाभिषेक महोत्सव का आयोजन होता है। उन्होंने मंच से यह भी घोषणा की कि अब की

बार यह आयोजन सरल और आडम्बर रहित होगा। परम पूज्य कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामीजी ने अपने उद्बोधन के अन्त में प्रस्तावित किया कि परम्परानुसार भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की वर्तमान अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के. जैन ही इस महामस्तिकाभिषेक महोत्सव की अध्यक्ष रहेंगी, इस घोषणा का सभी ने हर्ष ध्वनि के साथ स्वागत किया और पद्मविभूषण राजर्षि डॉ. डी. वीरेन्द्र हेगड़े जी का नाम प्रस्तावित किया गया, जिसका हर्ष ध्वनि के साथ स्वागत किया गया। कार्याध्यक्ष पद हेतु श्रीमान एस. जितेन्द्र कुमार का नाम प्रस्तावित किया गया एवं त्यागी वृत्ति व्यवस्था संयोजक पद हेतु श्रीपाल गंगवाल जी का नाम परम पूज्य स्वामी जी द्वारा घोषित किया गया, श्रीपाल गंगवाल जी वर्ष 2006 में भी त्यागी वृत्ति व्यवस्था के संयोजक रहे थे और उन्होंने बहुत ही अच्छे प्रकार से इस पद की जिम्मेदारियों का निर्वहन किया था इसी को दृष्टिगत रखते हुए पुन: उनके नाम को प्रस्तावित किया गया। पद्मविभूषण राजर्षि डॉ. डी. वीरेन्द्र हेगड़े जी ने भी अपना उद्बोधन कन्नड़, अंग्रेजी एवं हिन्दी में दिया, उन्होंने कहा कि "संयम" is the right word for Jainism. हमें सुख-दुख में हमेशा संयम रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि परम पूज्य कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामीजी के सानिध्य में सन् 1981,1993, 2006 में महामस्तिकभिषेक हो चुके है, अब 2018 में महामस्तिकाभिषेक महोत्सव होना है। उन्होने यह भी कहा कि हम ग्रामीण विकास के लिए केनरा बैंक के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं। श्रीमान हेगड़े जी ने कहा कि गरीबी कम हुई है तो संस्कार भी कम हुए हैं, पैसा आया है, संस्कार गया है। उन्होंने अपील की कि हम सभी को अपने संस्कार, संस्कृति एवं संस्था को सम्हाल कर रखना होगा। समारोह की पदेन अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम. के. जैन ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी तन, मन, धन, से इस आयोजन को सफल बनाने हेतु समर्पित है। श्रीमती सरिता जी ने कहा कि परम पूज्य स्वामी जी आप हमें निर्देश दें, कार्य योजना दें हम उसे कार्यरुप में परिणित करेंगे। सभी राष्ट्रीय संस्थाऐं एक मत से साथ मिलकर एकीकरण को उदाहरण पेश करें। संस्कार शिक्षा, आरोग्य को ध्येय बनाकर कार्य करें। उन्होंने कहा कि तीर्थक्षेत्र कमेटी को महामस्तिकाभिषेक समारोह का सम्पूर्ण भारतवर्ष में प्रचार-प्रसार करना होगा, विभिन्न स्थानों पर प्रेस कांफ्रेंस आयोजित की जायेगी, नेशनल मीडिया, इलैक्टोनिक मीडिया की भी मदद ली जायेगी। पब्लिश रिलेशन एजेन्सी की नियुक्ति पर भी विचार करना होगा। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के महामंत्री श्री प्रकाश चन्द बड़जात्या जी ने कहा कि महासभा पूरी तरह से महामस्तिकाभिषेक आयोजन समिति के साथ है, उन्होंने कहा कि बाहर से पधारने वाले श्रृद्धालुओं के आवास की सुदृढ व्यवस्था हो, ट्रांसपोर्ट की अच्छी व्यवस्था हो जिससे कि आवागमन में किसी प्रकार की परेशानी न हो। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासमिति के महामंत्री श्री विपिन कुमार जैन सर्राफ ने कहा कि महासमिति पूरी तरह से साथ हैं और आयोजन का सफल बनाने हेतु हर सम्भव प्रयास करेंगे। जैन अग्रवाल महासभा के अध्यक्ष श्री रमेशचंद तिजारिया जी ने कहा कि महामस्तिकाभिषेक के अवसर पर सेवार्थ कार्य किये जायें, इस हेतु तन, मन, धन से राष्ट्रीय अग्रवाल जैन महासभा समर्पित है। दक्षिण भारत जैन महासभा के उपाध्यक्ष श्री डी. ए. पाटिल ने कहा कि महामस्तिकाभिषेक समारोह में पांचों संस्थाऐं मिलकर कार्य करें, भट्टारक सम्मेलन होना चाहिए एवं और भी कई सम्मेलन होने चाहिए, प्राचीनता के सरंक्षण का कार्य होना चाहिए। शिक्षा, संस्कार, आरोग्य में पैसा लगाना चाहिए। चामुण्डराय के नाम से प्रतिवर्ष एव कार्यक्रम होना चाहिए। उन्होंने आश्वस्त किया कि दक्षिण भारत जैन सभा पूरी सामर्थ्य के साथ महामस्तिकाभिषेक कार्यक्रम में सहयोगी देगी। वीर सेवादल के दस हजार स्वयंसेवक आयोजन की व्यवस्थाओं को सुचारु रखने में सहयोग करेंगे। गुजराती दिगम्बर जैन समाज महासंघ की ओर से उनके कार्याध्यक्ष श्री मह... कुमार ने आश्वासन देते हुए कहा कि पतम पूज्य स्वामी जी जो भी आदेश देगे, वह कार्य पूरी निष्ठा के साथ किया जायेगा। तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री श्री संतोष पेंढारी जी ने जलद समितियों के गठन का सुझाव दिया और कहा कि तीर्थक्षेत्र कमेटी पूरी शक्ति से आयोजन की सफलता के लिए कार्य करेगी। उन्होंने कहा कि सभी शहरों में महामस्तिकाभिषेक कमेटियां बनायी जानी चाहिए। युवाओं को धर्म से जोड़ना चाहिए, युवा सम्मेलन कराने की जिम्मेदारी युवाओं को ही सौंपनी होगी। आचार्यो मुनिगणों द्वारा भी अपने प्रवचनों के माध्यम से 2018 में होने वाले महामस्तिकाभिषेक समारोह को जन-जन से जोड़ना चाहिए। तीर्थक्षेत्र कमेटी को एवं समस्त जैन संस्थाओं को तन, मन, धन से लगना होगा, भारत की चारों दिशाओं पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण में चार रथ महामस्तिकाभिषेक समारोह के प्रचार-प्रसार के लिए भेजे जाने चाहिए। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री प्रदीप कुमार जैन ने भगवान बाहुबली के चरणों में शत् शत् नमन करते हुए, परम पूज्य स्वामी जी को नमस्तु करते हुए मंच पर उपस्थित श्रेष्ठीजन एवं सभा कक्ष में उपस्थित

प्रबुद्ध विचारवान एवं देश के विभिन्न भागों से राज्यों से पधारे सभी श्रेष्ठीगणों का स्वागत करते हुए अपने उद्बोधन में कहा कि संस्कार, संस्कृति संस्था को बचा कर रखें इसमें बहुत बड़ा सार है, स्वामी जी का संदेश महत्वपूर्ण है हमें उसको समझना चाहिए। सरल, आडम्बर रहित महामस्तिकाभिषेक की घोषणा परम पूज्य स्वामी जी का वर्तमान स्थिति को देखते हुए भविष्य दर्शन है, इसको हमें बहुत ही गम्भीरता से लेना होगा। परम पूज्य स्वामी जी युग दृष्टा हैं, समारोह को यशस्वी बनाने के लिए हमारी सभी जैन संस्थाओं को, प्रत्येक व्यक्ति को लगना ही होगा, यह महोत्सव तीर्थक्षेत्र कमेटी की बहुत ही महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। महामस्तिकाभिषेक समारोह के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए सोशल मीडिया का इस्तैमाल करना होगा। हमारे युवा साथी आज की शक्ति हैं उनकों भी इस समारोह से जोड़ना होगा। किसी प्रख्यात गीतकार से महामस्तिकाभिषेक समारोह के लिए एक गीत तैयार कराना चाहिए। महामस्तिकाभिषेक समारोह के प्रचार-प्रसार हेतु जैन संस्थाओं द्वारा प्रकाशित होने वाले समाचारपत्रों-पत्रिकाओं के प्रत्येक अंक में दो पृष्ठ आरक्षित होने चाहिए जिससे महामस्तिकाभिषेक समारोह के बारे में जन-जन तक समाचार व जानकारी पहुंच सके। अंत में श्री प्रदीप जैन जी ने कहा कि महामस्तिकाभिषेक समारोह को यशस्वी बनाने के लिए भारतवर्ष के प्रत्येक व्यक्ति को सम्पूर्ण निष्ठा से लगना पड़ेगा। सभा में आये हुए सभी प्रतिनिधियों ने अपने विचार प्रकट किये और महामस्तिकाभिषेक महोत्सव को सफल बनाने हेतु अपना पूर्ण योगदान देने का संकल्प किया, धन्यवाद ज्ञापन के साथ सभा समाप्ति की घोषणा हुई, उसके बाद प्रेस कान्फ्रेंस का आयोजन सभा स्थल पर ही हुआ जिसमें देश विदेश का प्रिन्ट एवं इलैक्ट्रोनिक मिड़िया मौजूद था।

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर ट्रस्ट, शिरसाड

नेशनल हाईवे नं. 8, महावीर धाम के पास, शिरसाड, विरार (पूर्व)

पुण्योदय तीर्थक्षेत्र शिरसाड, मुंबई नेशनल हाईवे नं.8 साधुसंतों के प्रवेशद्वार में चतुर्विंशति जिनबिंब मानस्तंभ महामस्तकाभिषेक एवम् हेलिकोप्टर से पुष्पवृष्टि,64 रिद्धि विधान का भव्य आयोजन रविवार को सुबह 8 बजे से 6 बजे तक भव्यरुप से मनाया गया।

पुण्योदय तीर्थक्षेत्र मुंबई जैन समाज एवम् आ. श्री अभिनंदनसागरजी महाराज की शिष्या जिनवाणीचंद्रिका बालयोगिनी श्री प्रसन्नती माताजी के मंगल सान्निध्य में संपन्न हुआ।

64 रिद्धि विधान के सौधर्मेन्द्र का लाभ किशोर जैन ध.प. कुसुमदेवी, महामस्तकाभिषेक प्रथम सुवर्ण कलश का लाभ विनोदकुमार जैन, हेलिकोप्टर से प्रथम पुष्पवृष्टि का लाभ समिति के अध्यक्ष पद्मचंद गदिया ध.प. सरोजदेवी, सुपुत्र मनोज गदिया परिवार ने लिया। समारोह के अतिथि प्रभुदयाल पाटणी ने दीपप्रज्वलन करके शुभारंभ किया। अतिथि सुनिल जोवितकर (डेप्युटी सेक्रेटरी, होम विभाग), महावीर तिरवाने (डेप्युटी सेक्रेटरी विधान भवन), रमेश के. दोशी, पुरणमल बंडी, विजय देसाई, स्थानिक नगरसेवक प्रफुल साने एवम् सभी मंदिर-समाज के ट्रस्टी-प्रमुख का सन्मान किया गया।

प.पू. आर्यिका बालयोगिनी श्री प्रसन्नमती माताजी का 23वाँ दिक्षा जयंती समारोह मनाने का अवसर मिला। पादपक्षालन श्रीमती रेखा भरत दोशी, शास्त्रभेंट माणेकचंद जैन, विनुभाई गांधी एवम् साडीभेंट श्रीमती कुसुम किशोर जैन परिवार ने लाभ लिया।

मुनिश्री प्रबलसागरजी ने अपने प्रवचन में बताया कि पुण्योदय तीर्थक्षेत्र पुण्यभूमि है। यहां श्री पार्श्वनाथ भगवान की 5 फूट चमत्कारीक पद्मासन मूर्ति है। इस भूमि पर जल्द से जल्द मुनिभवन, धर्मशाला, भोजनशाला का निर्मान किया जाय। यह भूमि समस्त जैन समाज के एकता का प्रतिक बनकर रहेगा। यह भूमि पर प्रथमबार एसी मंडप और हेलिकोप्टर से पुष्पवृष्टि देखने का लाभ मिला। सभी को मंगल आशीर्वाद।

मुनिप्रवर श्री जयकीर्तिजी महाराज ने 2013 में मानस्तंभ का भूमिपूज किया था। तीन साल में मानस्तंभ का निर्माण हुआ। फरवरी 2016 में आ. श्री कुशाग्रनन्दीजी महाराज के ससंघ सान्निध्य में भव्यरुप से पंच कल्याणक प्रतिष्ठा निर्विघ्न संपन्न हुई। प्रतिष्ठा में 15 हजार से अधिक भक्तजनों ने सुंदर मानस्तंभ के दर्शन का लाभ लिया।

मुनिप्रवर ने महामस्तकाभिषेक समारोह के प्रवचन में बताया कि दिन में स्वप्न देखनेवाले बिपीन महेता नेताजी ने जंगल में मंगल करने का कार्य सिद्ध करके दिखाया है। भारत देश के अति सुंदर निर्माण के इस मानस्तंभ का दर्शन करके में बहुत प्रभावित हुआ हैं। तीर्थक्षेत्र खूब चमत्कारीक है। यहाँ चांदी की श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा चोरी होने के बाद 20 दिन में वापस आ गई थी और उसकी दोबारा पंच कल्याणक प्रतिष्ठा की गई।

आर्यिका श्री प्रसन्नमती माताजी ने अपने प्रवचन में बताया कि 23वाँ दिक्षा जयंती महोत्सव पुण्योदय तीर्थक्षेत्र में मनाने का समिति को अवसर मिला। चेरमेन प्रकाश छाबडा, अध्यक्ष पद्मचंद गदिया एवम् समिति के सभी सदस्यों ने मिलकर भव्य रुप से आयोजन किया। तीर्थक्षेत्र का 2000 से अधिक श्रावक-श्राविकाओं को दर्शन का लाभ मिला। पंच कल्याणक प्रतिष्ठा में मेरा आने का योग नहीं था। लेकिन आज के महोत्स में मुझे अद्भुत मानस्तंभ के दर्शन का लाभ मिला।

बिपीन महेता ने पंच कल्याणक प्रतिष्ठा में 6 एकड़ जमीन पर भव्य समवसरण बनाने का स्वप्न देखा है, वह स्वप्ना समस्त जैन समाज के साथ-रहकर से जल्द ही पूर्ण हो ऐसा मंगल आशीर्वाद।

महामस्तकाभिषेक समिति के चेरमेन श्री प्रकाश छाबडा एवम् अध्यक्ष पदमचंद गदिया का समाज के सभी प्रतिनिधियों ने मिलकर सन्मान पत्र अर्पण करके सन्मानित किया।

पुण्योदय तीर्थक्षेत्र के अध्यक्ष माणेकचंद जैन, जयंतीलाल बक्षी, दिलीप महेता, अरविंद कोटडिया, धर्मेश शाह, राकेश शाह एवम् प्रफुल महेता ने परिश्रम करके समारोह को सफल बनाया। आभार विधि कौशल बिपीन महेता के द्वारा की गई।

जैनियों का प्रमुख त्यौहार है श्रुत पंचमी
ज्ञान का पर्व है श्रुत पंचमी

-प्रतिष्ठाचार्य विजय कुमार जैन, कुण्डलपुर

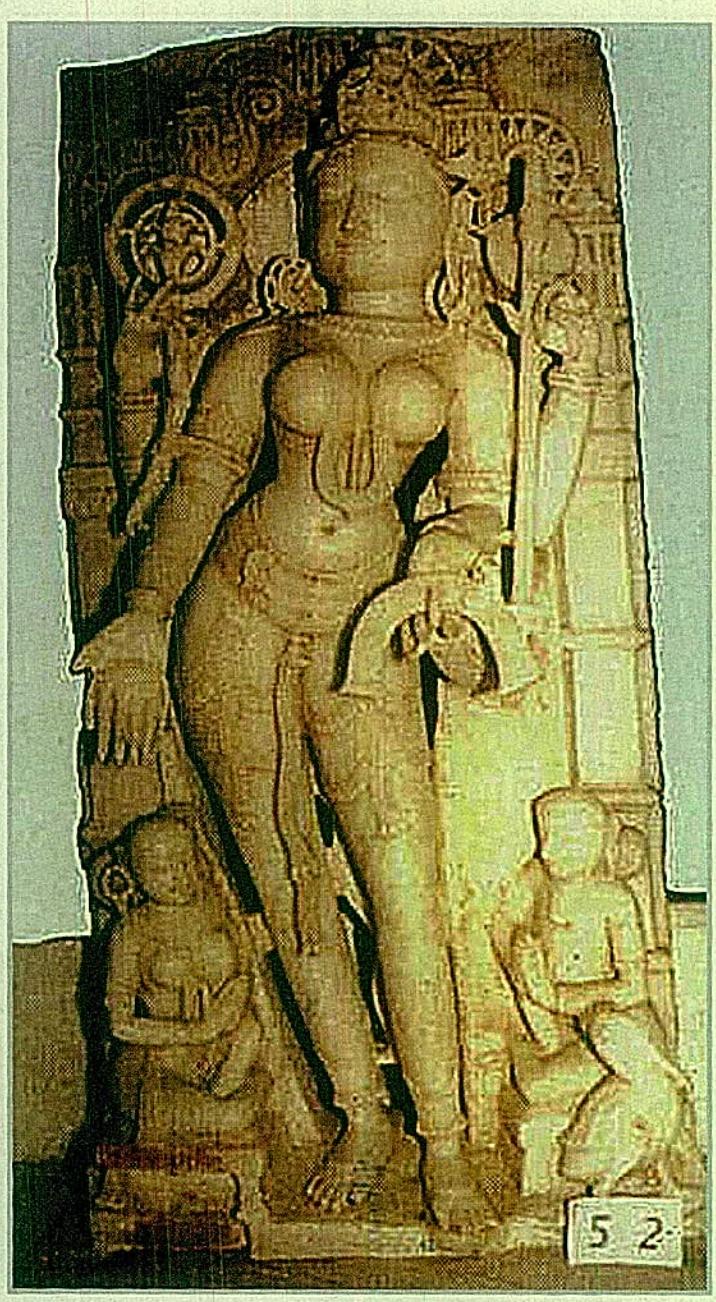

श्रुत पंचमी जैन धर्म का प्रमुख त्यौहार है। जैन धर्म के अनुसार इस दिन पहली बार जैन धर्म के ग्रंथ को लिखा गया था। मान्यतानुसार श्री पुष्पदंत जी महामुनिराज एवं मुनि श्री भूतबली जी महामुनिराज करीब 2000 वर्ष पूर्व गुजरात के गिरनार पर्वत की गुफाओं में ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी के दिन ही जैन धर्म के प्रथम ग्रन्थ 'श्री षटखंडागम' की रचना पूर्ण किया था। इसी कारण ज्येष्ठ शुक्ल के पांचवें दिन श्रुत पंचमी का त्यौहार मनाया जाता है। और इस लिए जैन मुनियों के अनुसार श्रुत पंचमी पर्व ज्ञान की आराधना का महान पर्व है!

भगवान महावीर को केवलज्ञान वैशाख शु. दशमी के दिन हुआ किन्तु गणधर के अभाव में 66 दिन तक उनकी दिव्य ध्वनि नहीं खिरी।

उस समय इंद्र ने बुद्धिबल से इन्द्रभूति नामक ब्रह्मण को वहा उपस्थित किया जो कि भगवान के समवसरण में पहुँचते ही मानस्तंभ का दर्शन करते ही सारा मिथ्याज्ञान सम्यग्ज्ञान में परिवर्तित हो जाता है। तत्क्षण ही भगवान के समवसरण में जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण कर लेते है। तत्क्षण ही मनःपर्याय ज्ञान से और साथ महाऋद्धियों से सम्पन्न होकर भगवान के प्रथम गणधर हो गये। भगवान के समवसरण में गौतम गणधर स्वामी ने अनेकों प्रश्न किये। तत्क्षण भगवान की दिव्यध्वनि खिरने लग गई। राजगृह नगर में विपुलाचल पर्वत पर भगवान महावीर की प्रथम दिव्य देशना हुई। वह दिन श्रावण कृष्णा प्रतिपदा था जो कि आज भी वीर शासन जयंती के नाम से प्रसिद्ध है। उसी दिन गौतम स्वामी ने बारह अंग और चौदह पूर्व रूप ग्रंथों की एक ही मुहूर्त में रचना की।

श्रुत पंचमी महान पर्व है। क्योंकि भगवान महावीर के पश्चात् शास्त्रों का ज्ञान एक दूसरे को सुनने से हो जाता था। पूर्व समय में ज्ञान का क्षयोपशम इतना तीव्र होता था कि सुनने मात्र से वह याद रहता था। यह परिपाटी काफी समय तक रही। तत्पश्चात् आचार्यों ने निमित्त ज्ञान के द्वारा यह जाना कि अब आगे शास्त्रों के ज्ञान को यदि भावी पीढी को प्रदान करना है तो इसे लिपि बद्ध करना पड़ेगा। क्यांकि ज्ञान का क्षयोपशम घटता जा रहा है एवं स्मरण शक्ति भी घटती जा रही थी। ऐसा जानकरके उन्होंने शास्त्रों को लिपिबद्ध किया।

श्रुत पंचमी 9 जून 2016

जैन तीर्थ कुण्डलपुर नालंदा एवम सम्पूर्ण भारत वर्ष में सभी जैन समाज के लोग श्रुत पंचमी का पर्व जून माह की 09 तारीख को धूम धाम से मनाएंगे !

गौतम स्वामी ने दोनों प्रकार का ज्ञान लोहार्य को दिया लोहार्य ने जम्बू स्वामी को दिया परिपाटी क्रम से से ये तीनों ही सकल ज्ञान धारी कहलाये। इस प्रकार से परिपाटी चलती रही। सौराष्ट देश के गिरिनगर के चंद्रगुफा में रहने वाले आष्टांग महानिमित्तज्ञानी श्रीधरसेनाचार्य ने अंगपूर्व श्रुतज्ञान का विच्छेद न हो जाये इसलिए महामहिमा अर्थात् पंचवर्षीय साधु सम्मेलन में आये हुए दक्षिणपथ के आचार्यों के पास एक लेख भेजा। लेख को पढ़कर उन आचार्यों ने शास्त्र के अर्थ को ग्रहण और धारण करने में समर्थ, नानागुण युक्त, देश, कुल और जाति से शुद्ध ऐसे दो साधुओं को आंध्र देश की वेणानदी के तट से भेजा।

इधर धरसेनाचार्य ने स्वप्न देखा कि अत्यंत शुभ और उन्नत दो बैल ने हमारी तीन प्रदक्षिणा देकर चरणों में पड़ गये। स्वप्न से संतुष्ट हुए श्री धरसेन भट्टारक ने जयतु श्रुतदेवता ऐसा वाक्य उच्चारण किया और उठ बेठे उसी दिन प्रातः वे दोनों मुनि श्रीगुरू के पास पहुँचे और विनयपूर्वक कृतिकर्म विधि से उनकी पादवंदना की। अनंतर दो दिन बिताकर तीसरे दिन उन दोनों ने निवेदन किया कि हम शास्त्र अध्ययन हेतु आपके

पादमूल में आये हुए हैं। उनके वचनों को सुनकर गुरू ने अच्छा है, कल्याण हो, ऐसा कहकर उन्हें आश्वासन दिया। एवं उन मुनियों कि परीक्षा लेने का निश्चय किया। आचार्य श्री ने उन दोनों को दो विद्यायें दी सिद्ध करने के लिए जिसमें एक विद्या में मात्रा कम थी और दूसरी में ज्यादा थी। गुरु आज्ञा पाकर के विद्या को सिद्ध करने लगे। विद्या सिद्ध हो गई उन्होंने विद्या सिद्ध करने के पश्चात् देखा कि एक देवी के दांत बाहर निकले हुए हैं और दूसरी कानी है। विकलांग होना देवताओं का स्वभाव नहीं होता है। इस प्रकार उन दोनों विचार कर मंत्र संबंधी व्याकरण शास्त्र में कुशल होने के कारण शुद्ध करके पुनः सिद्ध की तत्पश्चात् दोनों विद्या देवता अपने स्वभाव और अपने सुन्दर रूप में दिखाई देने लग गये।

भगवान धरसेन के समक्ष दोनों ने विनय सहित सारा वृतांत कह सुनाया। बहुत अच्छा इस प्रकार संतुष्ट हुए धरसेन भट्टारक ने शुभ तिथि, शुभ नक्षत्र और शुभ वार में ग्रंथ पढ़ाना प्रारंभ किया। इस तरह क्रम से व्याख्यान करते हुए धरसेन आचार्य से उन दोनों ने आषाढ शुक्ला एकादाशी के पूर्वाण्ह काल में विनय पूर्वक ग्रंथ समाप्त किया। इस लिए संतुष्ट हुए देवों ने उन दोनों की पूजा खूब ठाटबाट से सम्पन्न की अनंतर धरसेनाचार्य ने एक का नाम भूतबली और दूसरे का नाम पुष्पदंत रखा। इन्हीं दोनों आचायी ने षट्खंडागम जैसे महान ग्रंथ रचना की। धवला में षट्खंडागम की रचना का इतना ही इतिहास पाया जाता है।

श्रुत पंचमी के दिन क्या किया जाता है ?

इस पावन दिवस पर श्रद्धालुओं को श्री धवल, महाधवलादि ग्रंथों को विराजमान कर श्रद्धाभक्ति से महोत्सव के साथ उनकी पूजा-अर्चना ,व विधान किया जाता है और सिद्धभक्ति का पाठ किया जाता है। इस दिन जैन धर्म के लोग पीला वस्त्र धारण करके जिनवाणी (शास्त्र) की शोभा यात्रा निकालते हैं

श्री भूतबली आचार्य ने षट्खंडागम की रचना लिखकर पूर्ण की थी इस लिये ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी को श्रुत पंचमी तिथि तभी से प्रसिद्धि को प्राप्त हो गई। और आज भी श्रुत पंचमी के दिन शास्त्रों की पूजा करते हैं। इस शुभ दिन सभी संघों में परम्परा से शास्त्र का अभिषेक (दर्पण में) करके पालकी में शास्त्र को विराजमान करके यात्रा निकली जाती है एवं श्रुत की पूजा एवं विधान किया जाता है।

चारित्र चंद्रिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी जो कि साक्षात श्रुत ;ज्ञानद्ध का अवतार हैं उनकी लेखनी के द्वारा 400 से अधिक ग्रंथों का सृजन किया गया है एवं पूज्य माताजी सदैव जहाँ पर भी विराजमान होती हैं श्रुत पंचमी जैसे महान पर्व को खूब ठाट-बाट के साथ मनाने की प्रेरणा करती हैं एवं शास्त्र को पालकी में विराजमान करके शोभा यात्रा निकली जाती है एवं षट्खंडागम विधान पूज्य माताजी की लेखनी के द्वारा लिखा गया है। मध्यान्ह में उस विधान को संघस्थ लोगों द्वारा सम्पन्न किया जाता है।

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है क्योंकि यदि आज हम गौतम गणधर की वाणी को सुन रहे हैं, पढ़ रहे हैं तो वह श्रुत की है देन है। यदि शास्त्र नहीं होते तो हम उस प्राचीन इतिहास को नहीं जान सकते थे। पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने गौतमगणधर वाणी को तीन भागों में लिखा है। जिसमें गौतम गणधर के द्वारा प्रणीत समस्त सार को दिया गया है यदि आज वर्तमान में दिगम्बर जैन साधु जो क्रियायें करते हैं सामायक, प्रतिक्रमण ये सभी गौतमगणधर स्वामी की वाणी है। चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज ने षट्खंडागम जैसे महान ग्रंथ को ताम्रपट्ट पर उत्कीर्ण करा करके सुरक्षित किया। क्योंकि आचार्यों को इस विषय पर अधिक चित्वन रहता है कि हम किस प्रकार से श्रुतज्ञान को सुरक्षित करके आगे दे सकें।

श्रुत पंचमी पर्व का यही उद्देश्य है कि हम किस प्रकार से दिगम्बर जैन आगम को, श्रवण संस्कृति को जान सकें एवं उसका जितना प्रचार कर सकें वह कम है, क्योंकि आज आधुनिक युग है लोगों का शास्त्रों की ओर कम ध्यान रहता है। इसलिए जिस प्रकार से हो सके शिविरों के माध्यम से बच्चों के अंदर जैन धर्म से संबंधित संस्कारों को दे सकें। यही श्रुत पंचमी पर्व का उद्देश्य है।

बधाई

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राजस्थान से आजीवन सदस्य श्री राजेन्द्र के. शेखर राजस्थान प्रदेश ओलम्पिक संघ के तीसरी बार महासचिव पद पर निर्विरोध निर्वाचित हुए है। लम्बी अवधि से खेल जगत से जुड़े शेखर इससे पूर्व जापान व चीन में सम्पन्न हुए एशियन गेम्स में भारतीय दल की व्यवस्था समिति में भारतीय ओलम्पिक संघ द्वारा मनोनीत किये जा चुके हैं। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

श्री महावीर ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज

संस्थापक एवं निदेशक
स्व. दयाचन्द जैन (फ्रीडम फाईटर)
मो. 98141 75293

1970 ESTD. IN THE SERVICE OF NATION

मैनेजिंग डायरेक्टर
राजेन्द्रकुमार जैन
मो. 98140 92613

जगराओ (पंजाब)	श्री गंगानगर (राजस्थान)	जम्मू (कश्मीर)	कोलकाता (बंगाल)
223191, 223103	2494412	2547876	98304 86979
222 093, 228962	2494413	2547239	99973 4272

तीर्थक्षेत्र कमेटी की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के. जैन एवं महामंत्री श्री संतोषकुमार जैन ने महाराष्ट्र शासन की प्रिंसिपल सेक्रेटरी (फायनान्स) से तीर्थों के विकास हेतु महाराष्ट्र सरकार की विभिन्न योजनाओं की जानकारी प्राप्त करते हुए

श्रीमती मिता राजीव युगल मुनिराज प.पू. १०८ श्री अमोघकिर्तीजी एवं १०८ श्री अमरकिर्तीजी महाराज से मुंबई में आशीर्वाद प्राप्त करते हुये, साथ में तीर्थक्षेत्र कमेटी की अध्यक्षा श्रीमती सरीता एम.के. जैन, उपाध्यक्ष श्री नीलमजी अजमेरा, महामंत्री संतोष जैन एवं ट्रस्टी पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर गोरेगांव

युगल मुनीराज प.पू. १०८ श्री अमोघकिर्तीजी एवं १०८ श्री अमरकिर्तीजी के सान्निध्य मे श्रीमती मिता राजीव का शॉल, श्रीफल से स्वागत करते हुये अध्यक्षा श्रीमती सरीता एम.के. जैन, उपाध्यक्ष श्री निलमजी अजमेरा एवं महामंत्री संतोष जैन

श्रीमती मिता राजीव, प्रिन्सीपल सेक्रेटरी फायनान्स, महाराष्ट्र सरकार के साथ विभिन्न योजनाओं पर चर्चा करते हुये

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री श्यामजी जाजू, नई दिल्ली के कार्यालय मे तीर्थवंदना प्रेषित करते हुये महामंत्री संतोष जैन साथ मे विनोद बाकलीवाल मैसूर, संजय पापडीवाल, माननीय आमदार जी. मधूसूदन मैसूर एवं राजेश खन्ना श्रवणबेलगोला

जैन कला एवं चित्रकला की विधाऐं

प्रो. डॉ. विमला जैन विमल
1/344, सुहागनगर, फिरोजाबाद।

जैनकला के जनक है, तीर्थकर ऋषभेश:
विद्या-शिल्प-कलादिये, कर्म पुरुषार्थ विशेष,
विविध विधायें आज भी, है उत्कृष्ट स्वरुप,
विमल विश्व इतिहास में, जिनवृष कला अनूप।

जैन धर्म-दर्शन ने वैश्विक कला इतिहास में अपनी महत्वपूर्ण पहचान बनाई है। प्रागैतिहासिक काल से प्राचीन और अर्वाचीन कला विशेष में जैन कला- वास्तु, मूर्ति, चित्र, संगीत, काव्य साहित्य सभी में अपना स्वतंत्र और महत्वपूर्ण स्थान बनाये हुये है। यद्यपि आज यह मात्र भारत वर्ष तक सीमित दिखती है परन्तु विभिन्न स्थानों के खण्डहर और कलावशेष इस बात को न्हित करते हैं कि जैन कला और जैन धर्म अपनी सुगन्ध विश्वभर में फैला चुका है। धर्म और दर्शन-सिद्धान्त, मनीषियों, ध्यानी योगियों को ही हृदयांगम होता है, वे तीर्थंकरों की वाणी में ध्वनित होते हैं, उनका संरक्षण, संवर्धन, प्रसारण काल के माध्यम से होता है अत: काव्य और साहित्य कला मसि और विद्या को प्रथम स्थान दिया गया है। जैनागम- श्रुत देव, जिनवाणी का द्रव्यरूप है। दिव्य वाणी ध्वनित होती है वह श्रव्य है, सुनकर मनन-चिनन्त किया जा सकता है दृष्टव्य नहीं। संगीतकला गायन-वादन-नृत्य-नाद्य, यहाँ श्रव्य के साथ दृष्टि से भी भावाभिव्यक्ति होती है। चित्रकला, मूर्ति और वास्तु ये दृश्य रूप में अवतरित होती हैं वह बात अलग है कि आज दूरदर्शन ने श्रव्य को दृश्य और दृश्य को श्रव्य बना दिया है। चित्रकला, ललितकलाओं (वास्तु, मूर्ति, चित्र, संगीत, साहित्य) के मध्य में आसीन है। अत: वह अपनी सुगन्ध दोनों ओर छोड़ती है अत: कला मनीषियों ने कहा है-

कलानां प्रवारं चित्रं धर्मार्थकाम मोक्षदं।
मांगल्यं प्रथमं, चैतद गृहे तत्र प्रतिष्ठतं।।43/38

चित्र सूत्रं वात्सायन।

कर्मभूमि के आरम्भ में आदि तीर्थंकर ऋषभदेव ने मानव को जीवन जीने की कला सिखाई थी उसे धर्म पुरुषार्थ-उचित, सम्यक नीतियुक्त कर्मकरने का द्योतक-दर्शन (सिद्धान्त) का व्यवहारिक रुप, सर्व प्रथम सिखाया गया। अर्थ पुरुषार्थ-अर्थ समृद्धि का द्योतक है जो भौतिक सामग्री उपलब्ध कराता है। काम पुरुषार्थ सुख का प्रतीक है जो इन्द्रिक सुख प्रदान के साथ सृष्टि सृजन का द्योतक है। मोक्ष पुरुषार्थ-ब्रह्म की प्राप्ति या शाश्वत निराकुल सुख का द्योतक है। इन चार पुरुषार्थों की उपलब्धि मानव जीवन का ध्येय माना गया और कलाओं को लक्ष्य प्राप्ति में सहयोगी, इन पाँचों ललित कलाओं में श्रेष्ठतम चित्रकला को इसलिए भी कहा गया है कि वास्तु और मूर्तिकला चित्रकला के बिना अपूर्ण है। विशेष रूप से वास्तु-मंदिरों में छत, स्तम्भ तथा प्राचीरों को तक्षण कला में चित्रित करना पशु-पक्षी मानवाकृतियों को भावात्मक-विशेष भंगिमाओं में बनाना उत्कृष्टता का प्रतीक है, मंदिरों का सौन्दर्य इन भावचित्रों से अनन्तगुण बुद्धिगत हो जाता है। आज दिलवाडा के मंदिर अपनी अद्भुत रूपाकृतियों के कारण ही आकर्षण का केन्द्र है। मूर्तिकला में, तीर्थंकर की वीतरागी नग्न पदमासन या खडगासन प्रतिमा अपने परिकर-अगल-बगल चमरवाहिनी, पुष्पवृष्टि तथा वाद्यध्वनि करते हुये गन्धर्व-किन्नर की रूपाकृतियाँ, अष्ट प्रातिहार्य आदि मूर्ति के लावण्य और भावाभिव्यक्ति को सम्मोहन में बाँध देते हैं। कलाकार अपने भावों को बिना कहे दर्शक तक पहुँचाता है और चित्रकला से अधिक प्रखर भाविभिव्यक्ति हो ही नहीं सकती। आज भी नृत्य और नाट्य मुद्रायें प्राचीन रुपाकृतियों से ढूंढ-ढूंढ कर लाई जाती हैं।

जैन कला को विश्व की सर्वाधिक प्राचीन कला माना गया है। जैनागम या जैनपुराणों के अनुसार ही नहीं वैज्ञानिक अनुसंधानों के अनुसार भी। यही कारण है जैन कला सदैव ही अतिक्रमण का शिकार रही है वे कलात्मक सौन्दर्य से परिपूर्ण वैभवशाली जिन मंदिर हो या अतिशयकारी चुम्बकीय आकर्षण से परिपूर्ण मूर्तियाँ, चित्रकला के भित्ति चित्र, नग्न रूपाकृतियों के कारण मिटाये गये अथवा छेड-छाड कर बदले गये या अतिक्रमण कर अन्यों के हो गये। जैनागम और सचित्र पोथियों की तो होली जलाई गयी, अथवा देश-विदेशों में ले जाकर अधिकार कर लिया गया। अनगिनत हस्तलिखित सचित्र ग्रन्थ काल कलवित हो गये। हम जैन धर्मावलम्बियों ने इन बातों को न इतिहास में अंकित कराने का प्रयास किया न स्वयं के ग्रन्थों या स्मृतियों में स्थायित्व दिया। हमारी धारणा है और सिद्धान्त भी, इससे प्रतिशोध की भावना भड़कती है अत: विद्वेष का विष पनपता है साथ ही भाव प्रदूषण से अनन्तानुबन्धी कषाय का तीव्र बन्ध हो कुगतिकर संसार भ्रमण बढ़ता है अत: इन्हें उपसर्ग और परीषह मान समता धारण कर रचनात्मक कार्यों में लगना ही श्रेयस्कारी है। वर्तमान में नित नवीन अतिभव्य कलात्मक जिन मंदिर बन रहे हैं, लाखों की संख्या में जिनमूर्तियाँ बड़ी से बड़ी और अतिलघु, धातुओं तथा पाषाणों की प्रतिष्ठित हो रही हैं। चित्रकला भी भित्ति चित्र स्वर्ण-रजत तथा आकर्षक रंगों में बनाये जा रहे, लघुचित्रों, फोटो एलबमों के नवीन पद्धति में अभिलिखित किया जा रहा है। यह गौरव की बात है परन्तु अपने भूत-पुरातात्विक पहचान को सहेजना भी अत्यावश्यक है। विगत कल की सिद्धियाँ आगामी कल की उपलब्धियों की ओर लगाने के लिये वर्तमान को लचकदार तख्ता के रुप में प्रयुक्त करने पर हमारी उपलब्धियाँ द्विगुणित हो सकती हैं। हम अतीत की सांस्कृतिक कलात्मकता को लेकर चलेगें तो हमारा धर्म और दर्शन विश्वव्यापी महानता का प्रतीक तथा कलात्मक सौन्दर्य का उदात्त आदर्श बन सकता है।

कला का लक्ष्य शिवत्व की उपलब्धि के लिये सत्य की सौन्दर्यमयी अभिव्यक्ति है यही कारण है कला, धर्म और आध्यात्म से जुड़कर-सत्यं, शिवं, सुन्दरं का साकार रुप बन, संस्कृति संरक्षण को सर्वाधिक उपादेय रही है। कला प्राणवन्त तभी बनती है जब उसके रूपात्मक पार्थिव शरीर में

आध्यात्म-देवांश प्रवेश करता है। कलात्मक रुप में भावात्मक देव या दर्शन की प्रतिष्ठा ही कला की सच्ची प्राण प्रतिष्ठा होती है। भगवान बाहुबली गोमटेश्वर की मूर्ति विश्व का आदर्श है, आश्चर्य है, कलात्मकता व भावप्रवणता में अद्वितीय-अनुपमेय है परन्तु पूज्यता देवांश बाहुबली के कारण ही है। मानवीय कर्म के साथ दैवीय शक्ति के समन्वय से ही महान व्यक्तित्व बनते हैं, जो कला के सच्चे आराध्य हैं। जैन कला में धर्म-दर्शन के दोनों पक्ष गुम्फित होते हैं। अन्तर्मुखीन प्रवृत्तियाँ और बहुजन हिताय की कल्याण कामना। यहाँ शिवम् स्वरूप में प्राणिमात्र को दुख निवृत्ति एवं मंगल भावना निहीत है। दर्शन जैसे क्लिष्ट-रूखे विषय को कला सरल-सहज-सरस बना अभिरुचि पूर्ण बना देती है इसमें कोई संदेह नहीं। कलाकार को सर्वाधिक प्रभावपूर्ण कान्ता उपदेशक कहा गया है अत: दर्शक को अभिप्रेरित कर धर्म की प्रभावना में उसे महत्वपूर्ण भूमिका, निर्वहन करने का सजग प्रहरी माना गया है।

जैन चित्रकला के विविध आयामों में कलावशेष, भित्तिचित्र, लघुचित्र, प्रतीक चित्र तथा चित्रपरिचर्चा की संक्षिप्त जानकारी की जा सकती है। **कलावशेष** - काल के इतिहास में प्राचीनतम प्राप्त कलावशेष मोहनजोदडो-सिन्धुघाटी की सभ्यता में प्राप्त कलावशेष हैं। इन्हें पुरातत्व वेत्ताओं ने 5000 से 3500 ई.पू. का माना है। इनमें छोटी-छोटी नग्न मानव मूर्तियाँ बहुतायत से प्राप्त हुई हैं जो स्पष्टत: दिगम्बर साधु तथा वीतरागी देव की मूर्तियाँ हैं। एक मुद्रा पर ध्यानस्थ हैं, चारों तरफ लता मण्डप अंकित है सम्भवत: यह भगवान बाहुबली का उत्खनित चित्र है। एक वर्गाकार मुहुर पर खडगासन में नग्न पुरुषाकृति अंकित है साथ में वृषभ भी चित्रित है। सात अमात्य (वस्त्रधारी) खड़े हैं। एक अन्य चौकोर मुहर पर कायोत्सर्ग मुद्रा में नग्न पुरुषाकृति रूपांकित है। और भी कितनी ही मूर्तियाँ तथा प्रतीक जैन कला के रूप में प्रमाणित हो चुके हैं। मुनि विद्यानन्द जी के अनेक प्रमाण देकर इसे स्पष्ट किया है जैन परम्परा और प्रमाण में सचित्र विवेचना है। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक देशी-विदेशी पुरातत्त्ववेत्ताओं, इतिहासकारों तथा कला मनीषियों ने प्रमाणित किया है।

भित्तिचित्र परम्परा में प्रागैतिहासिक गुफा चित्रों में अनेक स्थानों पर नग्न पुरुषाकृतियाँ, जो ध्यानस्थ खडगासन व पदमासन में रुपायित हैं, जैन कला का स्पष्ट प्रमाण देती है। भारतीय भित्तिचित्र परम्परा में विधिवत बनाये गये चित्रों में प्राचीनतम (तीसरी शताब्दी ई.पू.) चित्र जोगीमारा की गुफाओं में अंकित हैं। इन्हें कला मर्मज्ञों ने स्पष्टत: जैन धर्म से सम्बंधित माना है, यहाँ भी नग्न पुरुषाकृतियाँ, माँ त्रिशला के साथ सोलह स्वप्न तथा तीर्थंकर माँ का मनोरंजन करती हुई देवांगनायें आदि कितने ही चित्र देखे जा सकते हैं। वैसे यहाँ भी शिवलिंग स्थापना कर गुफाचित्रों को भूत-प्रेत, शिव-सेना से जोड़ दिया। अजन्ता भित्तिचित्रों के साथ ही बने बादामी गुफाओं के चित्र प्रमाणित रूप से जैनधर्म से सम्बंधित हैं। सिन्तन-वासल की गुफायें तो स्पष्ट रूप से जैन गुफा स्तूप ही है उनमें जैन पुराणों के आधार पर चित्र बने हैं जो लगभग सातवीं शताब्दी में पल्लव वंश के महान शासक राजा महेन्द्र वर्मा ने बनवाये थे। छत्त, स्तम्भ तथा प्राचीरों पर जैन पौराणिक कथाओं के चित्र रूपांकित हैं। इसी प्रकार ऐलोरा की गुफा नं. 32,33,34 जैन मंदिर हैं तथा भित्तियों पर चित्र अंकित हैं ये दसवीं शताब्दी के पूर्व के चित्र हैं। इनके अतिरिक्त और भी कितनी ही गुफाओं-मंदिरों में भित्तिचित्र हैं परन्तु वे इतिहास में अंकित नहीं है।

लघुचित्र या पोथीचित्रों का प्रचलन तो जैनग्रन्थों से ही आरम्भ हुआ है। भारतीय चित्रकला में इनका आरम्भ सातवीं शताब्दी से माना जाता है परन्तु उत्कृष्ट रूप में यह कला दसवीं शताब्दी से पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य लिखे सचित्र ग्रन्थों में ही उपलब्ध हैं, क्योंकि ये सचित्र पोथियाँ जैन धर्म से ही सम्बंधित थीं अत: इन्हें जैनशैली या अपभ्रंश शैली के नाम से ही इतिहास में लिखा गया है। ये जैन ग्रन्थ ताडपत्रों अथवा मोटे कागज (हस्तनिर्मित) पर हस्तलिखित जैनागम हैं जिन्हें जैनाचार्यों, मुनियों तथा जैन विद्वानों ने लिखा है तथा विषय को स्पष्ट करने तथा अभिरुचिपूर्ण बनाने के लिये सचित्र किया है। ये चित्रकार प्राय: व्यवसायिक जैन-जैनेतर हुआ करते थे, इनका ध्येय वि' को रोचक व सुन्दर रूप देकर स्पष्ट करना हुआ करता था, कम से कम समय और श्रम देकर अधिक से अधिक चित्र बनाना इनका ध्येय था। अत: कला सौष्ठव, लावण्य योजना में ह्रास के चिन्ह स्पष्टत: दृष्टव्य है इसीलिए कला मनीषियों ने इसे अपभ्रंश (बिगडी हुई) शैली नाम दिया है, दूसरे जैनग्रन्थ प्राकृत भाषा में अधिक लिखे गये जबकि उस समय की परिमार्जित तथा शास्त्रीय भाषा संस्कृत थी, इस दृष्टी से भी इसे अपभ्रंश शैली, पोथी-चित्र, लघुचित्र, परम्परा के रुप में भी उल्लेखित किया गया। जैन सचित्र ग्रन्थों को लाखों की संख्या में नष्ट किया गया फिर भी आज हजारों की संख्या में प्राप्य-ग्रन्थ संरक्षित हैं। ताडपत्रों पर बांई ओर एक तिहाई (1/3) भाग पर चित्र अथवा बीचों बीच में चित्र अंकित है बाकी के हिस्से पर सुन्दर लिपि में कलम से लिखे आगम-शास्त्र ही है।

जैन काल में आधिदैविक प्रतीकाकृतियों का महत्वपूर्ण स्थान है। इनमें तदाकार और अतदाकार प्रतीक चित्र आते हैं। काल-प्रतीक-आधिदैविक (देवकृत) और कृत्रिम को सारगर्भित रूप में प्रस्तुत किया जाता है। जैनाग' कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय की तरह ही अन्य अनेक प्रतीकाकृतियाँ आलेखित हैं वस्तुत: प्रतीक कला अविद्यमान को विद्यमान या पुनर्नवीनीकरण हेतु प्रयक्त किया जाता है जैन प्रतीक कला पर कितने ही ग्रन्थ तथा शोध ग्रन्थ लिखे जा चुके हैं। इन प्रतीकों में चैत्य, चैत्यालय, स्तूप, धर्मचक्र, स्वस्तिक, आयागपट्ट, नन्द्यावर्त, चैत्य, स्तम्भ, चैत्यवृक्ष, श्रीवत्स, सहस्त्रकूट, सर्वताभद्रिका, द्विमूर्तिका, त्रिमूर्तिका, त्रिरत्न, सिद्धशिला, अष्टमंगल, अष्टप्रातिहार्य, नवनिधि, नवग्रह, सोलह स्वप्न, समवशरण, यक्ष-यक्षिणी आदि अनेक ऐसे प्रतीक हैं जो आधिदैविक प्रतीक के रूप में गागर में सागर समेटे हुये हैं। इसी प्रकार बीजाक्षर, ह्री, अर्हं आदि ऐसे अनेक बीजाक्षर हैं जो बडे ही रहस्यपूर्ण तथा अचूक प्रभावपूर्ण हैं। यंत्र-मंत्र-तंत्र सभी प्रतीक कला के अर्न्तगत आते हैं।

कलापरिचर्चा- से जैनागम भरे पड़े हैं। श्रुत लेखक आचार्य मनीषी मात्र धर्म-दर्शन के ही मर्मज्ञ-अध्येता नहीं थे अपितु वे लौकिक-व्यवहारिक सभी

कलाओं के मर्मज्ञ मनीषी थे। जैनागम में ललित कलाओं, वास्तु-मूर्ति, चित्र, संगीत, काव्य-साहित्य सभी पर सूक्ष्मातिसूक्ष्म तथा विस्तृत व्याख्या मिलती है। तीर्थंकर ऋषभदेव ने स्वयं ही असि, मसि, कृषि वाणिज्य, विद्या, शिल्प इन छह कृत्यों को जीविकार्जन के लिये योग्य बताकर विधि-विधान का शिक्षण प्रशिक्षण किया तथा कराया था अत: पौराणिक ग्रन्थों में इनकी विषद व्याख्या की गई है। चित्रकला से सम्बंधित परिचर्चा कला विलास श्री कल्पसूत्र, जैन कल्पलता, चित्रकल्प द्रुम, उत्तराध्ययन सूत्र, उत्तर पुराण, हरिवंश पुराण, पदम पुराण, त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्र, चित्रदीप, आदि अनगिनत ग्रन्थ हैं जिनमें आध्यात्मिक ज्ञानरस के रसिक, ललित कलाओं के पारखी लेखक आचार्यों ने कला के वाह्यगुणों और आन्तरिक भावों की अभिव्यक्ति के लिये विस्तृत विश्लेषणात्मक विवेचना कर ज्ञान की गंगा बहा दी है। जैन कला का इतना महत्वपूर्ण योगदान होते हुये भी पुरातत्त्ववेत्ताओं तथा ऐतिहासिक विद्वानों, कला मर्मज्ञों ने इसे उपेक्षा की दृष्टि से ही देखा है। जैन विद्वानों ने भी हर स्थान पर आध्यात्म दर्शन को ही सराहा है, महत्वपूर्ण माना है कला को उपेक्षित कर रक्खा है।

वाचस्पति गैरोला ने लिखा है जैन कला सदा ही धर्म की पगडन्डियों पर चलती रही है तथा मानव की रागवृत्तियों से विलग रहने के कारण वह उतनी लोकप्रियता प्राप्त नहीं कर सकी। धर्म परक होने के कारण उसमें कठोरता, पवित्रता और नीरसता सर्वत्र व्याप्त है। सम्भवत: यही कारण है कि जैन कला अतीत में भी उपेक्षित रही और आज भी है। यह एक ऐसी गौरवशालिनी कुलांगना है जो अपने आदर्शों में रहकर जीवन ज्योति प्रदान कर रही है। कला का वास्तविक लक्ष्य स्वान्त: सुखाय होता है वह सत्यं, शिवं, सुन्दरं के साकार रुप में मंगलकारी, कल्याण भावना को प्रवाहित करती है। जैनकला मानव जीवन के परम लक्ष्य, अभीष्ट तक पहुँचाने को प्रेरित करती हैं। अत: सिद्धत्व की प्राप्ति को सम्यक्-सत्यमार्ग पर चलने को अभिप्रेरित करती है, अत: सौन्दर्य के प्रलोभन में फँसाती नहीं अपितु शाश्वत् सुख की आनन्दानुभूति कराती है। कहा भी है सत्य सदा शिव होने पर भी विरुपाक्ष भी होता है, किन्तु कल्पना का मन केवल सुन्दरार्थ ही होता है। जैन कलाकार लोक के अनुराग-विराग को उपदेशात्मक भावना से अभिव्यक्त करता है, क्योंकि कलाकार कान्ता-उपदेशक हुआ करता हैं वह अपनी कला के माध्यम से राग-वैराग्य के भाव भर देता है, कलादर्शक को अपनी भावाभिव्यक्ति से अभिप्रेरित करना ही उसकी सच्ची कला साधना है। इस दृष्टि से जैन चित्रकला आध्यात्म, की कसौटी पर खरी उतरती है। चित्रं हि सर्व शिल्पानां मुखं लोकस्य च प्रियम् इस प्रकार सभी कलाओं में मुख्य व लोकप्रिय चित्रकला है और जैन कला भी अपने आदर्शगुणों के कारण पूज्यनीय और आकर्षण से परिपूर्ण हैं।

वास्तु-मूर्ति अरुचित्र कला, साकार धर्म आकृतियाँ हैं।
संगीत, काव्य, साहित्यशुचिर, जिनवाणी की ही ध्वनियाँ हैं।।
जैनत्व स्वरुपी जैनकला जीवन जीने की निधियाँ हैं।
चारों पुरुषार्थ विमल पद ले, सम्यक्-सहयोगी विधियाँ है।।

★★★★

श्री धनसुख तलाटी का अकस्मिक निधन

बंडीलाल श्री दिगम्बर जैन कारखाना श्री गिरनार के कोषाध्यक्ष 89 वर्षीय श्री धनसुख तलाटी का आकस्मिक निधन हो गया है। आप इस पद पर पिछले 40 वर्षों से कार्यरत थे। गिरनारजी में पाँचवी टोंक पर मारपीट की घटनाओं में अकास्मिक वृद्धि होने की घटनाओं को रोकने में आप गिरनारजी के सभापति श्री निर्मलकुमार बंडी का साथ देने गिरनार पहुँचे थे, परन्तु वहाँ अचानक तबियत खराब होने से वे अपने जन्मभूमि प्रतापगढ चले गये जहाँ कुछ समय के बाद निधन हो गया। उनके निधन से ट्रस्ट को एक अपूर्णनीय क्षति हुई है।

निर्मलकुमार बंडी

डॉ भास्कर के काव्य संग्रह का विमोचन

प्रोफेसर डॉ भागचन्द्र जैन भास्कर जैन- बौद्ध साहित्य और संस्कृति के प्रगल्भ विद्वान होने के साथ ही एक उत्कृष्ट कोटि के कवि भी हैं। पू. आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी के सान्निध्य में वैशालीनगर, भिलाई में 15 मई को उनका आध्यात्मिक काव्य संग्रह समय की शिला पर उभरते भावचित्र का विमोचन हुआ। यह काव्य संग्रह पांच खण्डों में विभाजित है 1) अथ पथीय, 2) चरैवेति चरैवेति, 3) अन्तर का गुन्जन, 4) सहजपथ, और 5) श्रेयस्। इस संग्रह में लगभग 400 आध्यात्मिक कविताएं हैं जिनमें मेरी भावना, पंचस्तोत्रों का अनुवाद, नीतिगत दोहे आदि संमिलित हैं। इस काव्य संग्रह का आमुख हिन्दी के प्रख्यात लेखक प्रो. डॉ. प्रेमचंन्द्र जैन नजीबावाद ने लिखा है और इसका प्रकाशन किया है, सन्मति प्राच्य शोध संस्थान तथा भा. दि जैन महासभा दिल्ली ने। 25 पृष्ठों के इस काव्य संग्रह में लगभग 400 आध्यात्मिक कविताएं संग्रहीत है।

डॉ. जैन के अनुसार डॉ भास्कर की कविताएं उनकी जैन दर्शन की दृष्टि तथा उनके आध्यात्मिक विचारों को उजागर करती हैं। संस्कार, स्वाध्याय, चिन्तन, आस्था तथा आचरण की पवित्रता के बिना किसी कवि की आध्यात्मिक भावधारा का प्रवाहित होना सम्भव नही है। मेरी भावना शीर्षक रचना से कवि भास्कर जी के सद्भावों को निहारा जा सकता है। यह तो वस्तुत: उनके अन्त:करण में सांसारिकता की असारता पर जाग जाने वाले भावों को प्रस्फुटित करने वाली रचनाओं का सुन्दर संग्रह है। यह उल्लेखनीय है कि वर्तमान में डॉ भास्कर अ.भा. दि. जैन विद्वत् परिषद् के अध्यक्ष हैं। इस सब के लिए उन्हें हार्दिक बधाइयाँ।

★★★★

प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं की महानता

भारतवर्ष में नारी का स्थान धार्मिक भावना से सर्वोच्च माना जाता है। नारी ही पुरुषों को जन्म देती है। उसके द्वारा जन्में बालक-बालिकाएँ अपने जीवनकाल में उन्नति कर महत्वपूर्ण पदों पर आसीन होते हैं। नारी जन्मदाता है। भारतवर्ष में अनादिकाल से ही नारी की वीरता का परिचय इतिहास में उपलब्ध है। भारतवर्ष की भूमि पर अहिल्या बाई, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, मैना, सुन्दरी सती अंजना, जैसी अन्य बहादुर महिलाएँ हुई जिन्होंने अपनी वीरता से भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में अपना नाम रोशन किया।

चाहे धार्मिक क्षेत्र हो, राजनैतिक क्षेत्र हो चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो फोटो इन सभी क्षेत्रों में भारतवर्ष में जन्मी महिलाएँ किसी से भी अपनी योग्यता में पीछे नहीं रहती। एक शतक में राजनैतिक क्षेत्रों में इन्दिरा गाँधी, प्रतिभा पाटिल, सोनिया गाँधी, ममता बनर्जी, श्रीमती राबडी देवी, श्रीमती वसुंधरा राजे व अन्य प्रभावशाली महिलाओं ने राजनैतिक क्षेत्र में ख्याति प्राप्त की है तथा नारीजाति का मान बढाया। वीरता क्षेत्र में किरण बेदी जैसी पुलिस अफसरों ने नारी का मान सम्मान बढाया है। महिलाएँ आकाश में भी हवाई जहाज की परिचालिका पद पर कार्यरत होकर नारी जगत में वीरता का परिचय दे रही हैं। सामाजिक सेवा क्षेत्र में भी महिलाओं का पूर्ण योगदान सदैव रहा है। वर्तमान में ऐसी भारतीय महिलाएँ हैं, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन सामाजिक धार्मिक कार्यों में व मानव सेवा में न्यौछावर कर रखा है। जिसका जीता-जागता उदारण हमारे सामने श्रीमती सरिता जी का है। श्रीमती सरिता जी एक ऐसी आदर्श महिला हैं जो अपने तन-मन-धन से सामाजिक कार्यों में तत्परता से सेवा का कार्य कर रही हैं। आपके पति महेन्द्र कुमार जैन हैं। तथा आप चेन्नई निवासी है। श्रीमती सरिता जी भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला महासभा की राष्ट्रीय अध्यक्षा के पद पर हैं। श्रीमती सरिता एम.के. जैन (चेन्नई) भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की राष्ट्रीय अध्यक्षा हैं। आप सरल, सौम्य, मधुर भाषी, अत्यन्त सेवाभावी, सेवाधर्मिणी, दानशील, शांति प्रिय महिला है। आपके द्वारा दानी भावना से समाज का कोई भी कोना अछूता नहीं रहा, जिसमें आपने दानवीरता का कार्य नहीं किया हो। श्रीमती सरिता जी द्वारा किये जाने वाले धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों का पूर्ण विवरण प्रस्तुत किया जाये तो सैकडों पृष्ठों की किताब बन जावे। आपके द्वारा दानवीरता के क्षेत्र में किए गए कुछ प्रमुख सराहनीय कार्यों का ब्यौरा विवरण प्रस्तुत है।

मंदिरों का जीर्णोद्धार:

नए मंदिरों का निर्माण करवाना जैन दर्शन के अनुसार श्रेष्ठ कार्य है लेकिन इससे भी बढ़कर कार्य पुराने मंदिरों के जीर्णोद्धार का है। जैसे घर में वृद्ध माता-पिता की सेवा करने का पुण्य अर्जित होता हैं वैसे ही पुराने मंदिरों के जीर्णोद्धार का। पुराने मंदिर हमारा एतिहासिक धरोहर हैं तथा उनको ठीक करवाना हमारा परम कर्त्तव्य है। ऐसे पुण्यार्जन का कार्य श्रीमती सरिता जी ने अपने जीवनकाल में किया है। सरिता जी ने अभी तक 350 जैन मंदिरों का जीर्णोद्धार करवा चुकी हैं आप जैन सम्प्रदाय में विश्व कि प्रथम महिला है जिन्होंने ऐसा कार्य निष्पादित करके जैन समाज का गौरव बढ़ाया है बल्कि समस्त भारतवर्ष का नाम विश्व के देशों में प्रसिद्ध किया है।

जैन मंदिरों में पूजाभक्ति भगवान की सेवा करने वाले व्यक्तियों की कमी होने के कारण मंदिरों में वैतनिक पूजन प्रक्षाल करने वाले कर्मचारियों की नियुक्ति करना स्वाभाविक हैं। ऐसे कार्यों को निष्पादित करने का सौभाग्य श्रीमती सरिता जी को प्राप्त हुआ है। आपने दक्षिण भारत में स्थित सभी जैन मंदिरों में वैतनिक पण्डित एवं पुरोहितों का 1250 रुपये प्रतिमाह के खर्चे पर नियुक्ति दे रखी है तथा उनको प्रतिवर्ष दो जोड़ी धोती, गमछा, 5 किलो चावल 50 ग्राम दाल भी खाद्य सामग्री भी दी जाती है। ऐसे विशाल पुण्यार्जन कार्य से बढ़कर और कोई कार्य नहीं हो सकता है।

सरिता जी के नाम से सरिता फाउण्डेशन की भी स्थापना की गई शिक्षा के क्षेत्र में भी आपका सहयोग सराहनीय है। इस फाउण्डेशन की ओर से प्रतिवर्ष पचास लाख रुपये की आर्थिक सहायता निर्धन व आर्थिक स्थिति से कमजोर बालकों को शिक्षा के लिये प्रदान किये जाते हैं। चिकित्सा सेवा के कार्य में भी श्रीमती सरिता जी अग्रिम पंक्ति में हैं। आपके द्वारा निर्धन स्त्रियों को तथा जो स्त्रियाँ मंहगी चिकित्सा प्रणाली के कारण अपना इलाज करवाने में असमर्थ रहती हैं, उन्हें श्रीमती सरिता जी इलाज के लिए, दवाईयों व आर्थिक रुप से यथासंभव सहायता प्रदान करती हैं।

सरिता जी ने पालना नामक संस्था को विशेष सहयोग दिया जिसमें समाज से तिरस्कृत व उपेक्षित बच्चों का पालन-पोषण होता है।

किसी भी हादसे में जलने पर जख्मी होने वाले व्यक्तियों की भी आप आर्थिक सहायता प्रदान कर उनकी पीड़ा का हरण करवाती है यह कार्य भी पुण्यार्जन का है।

श्रीमती सरिता जी ने तीर्थस्थलों पर भी अपने भाव भरे पुण्यार्जन कार्य से अपने योगदान से वंचित नहीं रखा इसका ज्वलन्त उदाहरण है कि आपन अरिहंतगिरी में लड़के-लड़कियों के लिए एक होस्टल की स्थापना की जिसमें सभी का खाना, पीना, रहना नि:शुल्क है।

आपके द्वारा अरिहंतगिरी के आसपास गाँवों में 400 से अधिक घरों में लालटेन को वितरित करके घरों में उजाला किया। सरिता जी ने अन्नदाता का रूप धारण कर बीस से अधिक गाँवों में दाल-चावल नि:शुल्क रोजाना बांटने की भी योजना बना रखी है।

शिक्षा के क्षेत्र भी सरिता जी पीछे नहीं रही उन्होंने व्सकम्हमण संस्था की स्थापना की जिसमें 5वी 12 तक की शिक्षा पूर्ण करके सैकडों छात्र-छात्राएँ इंजीनियर बन सरिता जी का नाम रोशन कर रही हैं, जो सदैव इतिहास में याद रहेगा।

डिप्रेशन और कैंसर जैसी भयानक बीमारियों से पीड़ित मरीजों की भी आपने वात्सल्य प्रदान किया तथा हर संभव उनकी मदद की। नेत्रदान देना

तथा आँखों की रोशनी ज्वलंत करने का कार्य भी एक सराहनीय कार्य होता है जो श्रीमती सरिता जी ने अहमदाबाद, चेन्नई और श्रवणबेलगोला में आँखों के अस्पताल में ऑपरेशन थिएटर खुलवा कर दिखाया।

चेन्नई में कैंसर के इलाज के लिए आने वाले मरीजों के लिए जो पूर्व में स्थापित धर्मशाला है, उसमें एक पूरी मंजिल का निर्माण करवाया है। इसमें कैंसर से पीड़ित परिवारजनों के ठरहने की सुविधा हुई है। खुले हृदय से नि:स्वार्थ भावना से उपरोक्त कार्यों का निष्पादित करने वाली महिला श्रीमती सरिता जी को विभिन्न संस्थाओं द्वारा समय-समय पर विभिन्न उपाधियों और मान-सम्मान से सुसज्जित किया गया। जिनमें से कुछ सम्मान व उपलब्धियां इस प्रकार से हैं:-

श्रवणबेलगोला के भट्टारक परम श्रद्धेय चारुकीर्ति जी, भट्टारक स्वामी ने श्रीमती सरिता जी को दान चिन्तामणी उपाधि से संबोधित कर रखा है।

अरिहंतगिरी क्षेत्र प्रबन्धकों द्वारा आपको दान चितांमणी उपाधि से भी सम्मानित किया।

अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महासमिति महिला प्रकोष्ठ भोपाल द्वारा भी आपको वर्ष 2000 में ब्राम्ही सुन्दरी अलंकरण से अलंकृत किया है।

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर ट्रस्ट बीजापुर द्वारा आपको समाज रत्न की उपाधि से विभूषित किया गया।

दिगम्बर जैन समाज चेन्नई द्वारा श्रीमती सरिता जी को जैनधर्म परायणी की उपाधि से सम्मानित किया है।

बड़े-बड़े धार्मिक विधानों में आपको समय-समय पर 21 बार सौधर्म, इन्द्र-इन्द्राणी बनने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ।

ऐसी दानवीर, समाजसेविका श्रीमती सरिता महेन्द्र कुमार जैन को व उनके परिवार के सभी सदस्यों को सदैव स्वस्थ एवं सुखी रहने तथा दीर्घायू की कामना भगवान महावीर से करते हुए आपके सराहनीय सहयोग के लिए आभार प्रकट एवं शुभ कामनाओं सहित जय जिनेन्द्र, जय महावीर।

महेन्द्र कुमार बेद
एम. 21, सरदार भवन, मंगल मार्ग, बापू नगर जयपुर-302015

खुरई। समाधि मरण पर प्रवचन देतीं आर्यिकारत्न

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन बघेरवाल संघ कोटा प्रांत द्वारा महामंत्री संतोष जैन का कोटा के अनेक संस्थाओंद्वारा स्वागत किया गया। दिनांक ०५/०६/२०१६ स्थान - नशिया, कोटा, इस अवसरपर कोटा समाज द्वारा अनेक योजनायें रखी, जिसपर समाधानपूर्वक विचार विमर्ष किया गया।

भिलोड़ा का श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन बावन जिनालय

शान्तिलाल जैन (जांगड़ा)

भिलोड़ा के चन्द्रप्रभ बावन जिनालयों पर बने शिखरों का दृश्य। चित्र 1

गुजरात राज्य के अरवल्ली जिले में स्थित भिलोड़ा कस्बे का चन्द्रप्रभ बावन जिनालय गुजरात राज्य का एक महत्वपूर्ण अतिशय क्षेत्र है। भिलोड़ा की अहमदाबाद से दूरी 125 कि.मी., हिम्मतनगर से दूरी 50 कि.मी. एवं ईडर से 30 कि.मी. है। भिलोड़ा हाथमती नदी के तट पर बसा है। बावन जिनालय में मूलनायक चन्द्रप्रभ भगवान के अतिरिक्त 110 जिन प्रतिमाएं हैं। बावन जिनालयों पर बने शिखरों का दृश्य अति आकर्षक लगता है (चित्र 1)। यहां 58 फुट ऊंचा तीन मंजिला कीर्तिस्तंभ बना हुआ है (चित्र 2)। संगमरमर निर्मित जिनबिम्ब 12वीं, 16वीं एवं 19वीं सदी के माने जाते हैं। मुख्य मंदिर के गर्भगृह में मूलनायक चन्द्रप्रभ स्वामी के दायीं ओर भगवान बाहुबली की एवं बायीं ओर भरतजी की खड्गासन प्रतिमाएं (चित्र 3 एवं 4) एवं मंदिर के गूढमंडप के मध्य नो सर्पफणों से युक्त पार्श्वनाथ प्रतिमा यहां की प्राचीन प्रतिमाओं में से है।

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा प्रकाशित एवं पं. बलभद्र जैन द्वारा लिखित पुस्तक भारत के दिगंबर जैन तीर्थ, भाग 4 में गुजरात के तीर्थों के अंतर्गत चन्द्रप्रभ बावन जिनालय से संबंधित विवरण उपलब्ध नहीं है। लेखक द्वारा इस तीर्थ के बारे में कुछ अध्ययन किया गया था। मुख्य रूप से सन् 2012 में किये गये अध्ययन के अंतर्गत यहां के निज मंदिर की जिन प्रतिमाओं, कीर्तिस्तंभ के ऊपरी तल की प्रतिमाओं बावन जिनालयों से संबंधित कुछ प्रतिमाओं आदि के बारे में अध्ययन किया गया। बावन जिनालयों के अन्तर्गत जो जिनालय बने हुए हैं उनमें इसके विभिन्न शिखरों के क्रमांक के साथ-साथ इनमें बनी वेदियों के क्रमांक की पट्टिकाएं लगी हुई हैं। प्रारंभिक क्रमांक की विभिन्न वेदियों पर विराजित कुछ जिन बिंबों पर उत्कीर्ण लेखों को ही लेखक द्वारा पढना संभव हुआ। यद्यपि इस तरह के अध्ययन के लिए सभी प्रतिमा-अभिलेखों आदि का अध्ययन किया जाना चाहिए। अध्ययन के द्वारा इस तीर्थ के बारे में जो जानकारी प्राप्त हुई है, उससे संबंधित विवरणों को इस आलेख में प्रस्तुत किया जा रहा है।

चंद्रप्रभ बावन जिनालयों में विराजित प्रतिमाएं - बावन जिनालयों की विभिन्न वेदियों पर पाषाण निर्मित जो जिन प्रतिमाएं विराजित हैं उनकी चरण चौकियों पर उत्कीर्ण प्रशस्तियों से ज्ञात होता है कि इन जिनबिंबों की प्रतिष्ठा मूलसंघ-बलात्कार गच्छ की ईडर शाखा के भट्टारक सकलकीर्ति की पट्ट परंपरा के विभिन्न भट्टारकों द्वारा भिन्न-भिन्न समय में सम्पन्न हुई।

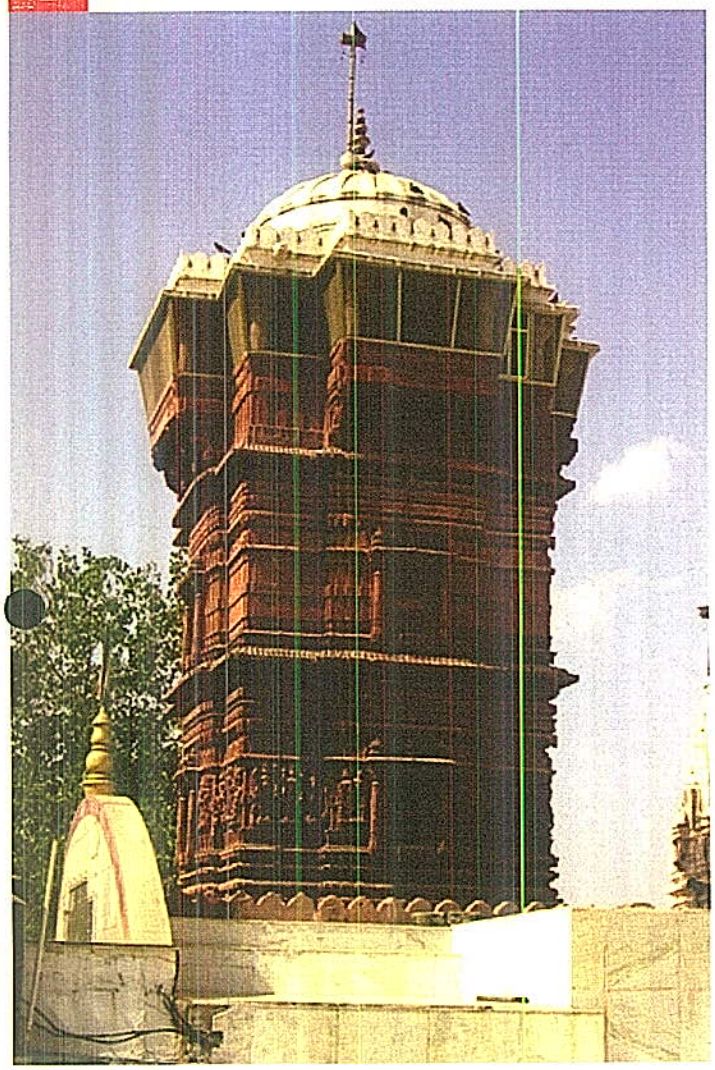

भिलोड़ा के चन्द्रप्रभ बावन जिनालय का कीर्तिस्तंभ। चित्र 2

वेदी क्रमांक 1 पर भगवान संभवनाथ की प्रतिमा के प्रशस्ति लेख के अनुसार यह प्रतिमा संवत् 1637 में भट्टारक गुणकीर्ति द्वारा प्रतिष्ठित है। वेदी क्रमांक 5 पर विराजित श्री सुमतिनाथजी की प्रतिमा एवं वेदी क्रमांक 6 पर विराजित जिनबिंब की प्रतिष्ठा संवत् 1681 में भट्टारक रामकीर्ति के उपदेश से होना ज्ञात होती है। वेदी सं. 7 पर विराजित श्री मल्लिनाथ प्रतिमा की प्रतिष्ठा सं. 1625 में भट्टारक सुमतिकीर्ति द्वारा संपन्न हुई। वेदी सं. 9 पर विराजित श्री वासुपूज्य प्रतिमा संवत् 1632 की है जो सुमतिकीर्ति द्वारा प्रतिष्ठापित है। दायें मध्य के जिनालय में विराजित मूलनायक प्रतिमा संवत् 1651 की है और लेख के अंतर्गत वादिभूषण गुरूपदेशात् लिखा है।

शिखर क्रमांक 10 से संबंधित आदिनाथ प्रतिमा संवत् 1621 की है तथा लेख के अंतर्गत भट्टारक सुमतिकीर्ति गुरूपदेशात् लिखा है। शिखर क्रमांक 12 से संबंधित श्री संभवनाथ प्रतिमा संवत् 1637 में प्रतिष्ठापित है। शिखर क्रमांक 13 से संबंधित प्रतिमा का लेख संवत् 1662 का एवं शिखर क्रमांक 14 से संबंधित जिनबिंब का लेख संवत् 1643 का, है। शिखर क्रमांक 18 से संबद्ध प्रतिमा लेख संवत् 1651 का है। शिखर क्रमांक 22, वेदी क्रमांक 40 से संबद्ध प्रतिमा लेख संवत् 1627 का है एवं भट्टारक सुमतिकीर्ति उपदेशात् लिखा है। एक जिनालय के बाहर दीवार में पाषाण पट्ट पर दो प्रशस्तियां है, उस जिनालय के बाहर की ओर मध्य में तीर्थराज सम्मेदशिखर की एक छोटी प्रतिकृति बनी हुई है। इस प्रतिकृति में सम्मेदशिखर से निर्वाण प्राप्त 20 तीर्थंकरों की 20 टोंक प्रतीक रूप में बनी हैं। सम्मेदशिखर प्रतिकृति को विराजित करने से संबंधित लेख संवत् 1653 का है। इसके अनुसार भट्टारक नरेन्द्रकीर्ति के शिष्य ब्र. नेमिदासजी की प्रेरणा से सम्मेदशिखर की प्रतिकृति का निर्माण कराया गया।

कीर्तिस्तंभ एवं उससे संबंधित पुरातन प्रतिमाओं के लेख - कीर्तिस्तंभ मंदिर के आगे बना हुआ है। कीर्तिस्तंभ को मंदिर के आगे बनाये जाने वाले मानस्तंभ के रूप में बनाया गया है। यहां बने चबूतरे पर चढ़ने के बाद कीर्तिस्तंभ का प्रथम तल आता है। कीर्तिस्तंभ के अन्दर प्रथम तल पर चौबीसी की प्रतिमा विराजित है। दूसरे तल पर भगवान शान्तिनाथ की प्रतिमा है। तीसरे तल पर चारों दिशाओं में चार प्रतिमाएं विराजित है (चित्र 5)। इन प्रतिमाओं पर इनकी प्रतिष्ठा के लेख उत्कीर्ण हैं। इन लेखों से कीर्तिस्तंभ के निर्माण एवं इसकी प्रतिष्ठा के समय की जानकारी प्राप्त होती है। चारों दिशाओं में विराजित इन प्रतिमाओं में से एक भगवान नेमिनाथ की प्रतिमा पर संवत् 1627 में इसे भट्टारक सुमतिकीर्ति के उपदेश से प्रतिष्ठित कराये जाने का लेख है। दूसरी एक प्रतिमा की प्रतिष्ठा का लेख संवत् 1632 का है। तीसरी और चौथी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख अस्पष्ट हैं।

संवत् 1928 में हुआ जीर्णोद्धार का कार्य - बावन जिनालयों के अंतर्गत एक जिनालय के बाहर सामने से बायीं ओर एक आले की दीवार में दो पाषाण पट्ट लगे है। इन दोनों पट्टों पर अलग-अलग प्रशास्तियां उत्कीर्ण हैं। दोनों पाषाण पट्ट 24 इंच लम्बाई और 17 इंच चौड़ाई के आले में लगे है। दोनों प्रशस्ति पट्ट ऊपर नीचे लगे हैं। ऊपर का प्रशस्ति पट्ट 11 इंच लम्बाई और 10 इंच चौड़ाई का तथा नीचे का प्रशस्ति पट्ट 16 इंच लम्बाई और 12 इंच चौड़ाई का है। ऊपर की प्रशस्ति के अनुसार संवत् 1928 में माघ शुक्ला त्रयोदशी को मूलसंघ बलात्कारगण के भट्टारक सकलकीर्ति की परंपरा में हुए भट्टारक रामचन्द्रकीर्ति के उपदेश से भिलोड़ा गांव के चन्द्रप्रभ चैत्यालय का जीर्णोद्धार एवं प्रतिष्ठा का कार्य सम्पन्न हुआ। प्रतिष्ठा करवाने वाले श्रावक के रूप में हुंबड़ जाति की लघु शाखा के गांधी साकाराम एवं उनकी भार्या हीरा का नाम उत्कीर्ण है।

बावन जिनालय की कई प्रतिमाएं संवत् 1928 में हुए जीर्णोद्धार के समय हुई प्रतिष्ठा के समय की हैं। इन प्रतिमाओं के अन्तर्गत वेदी क्रमांक 4 पर विराजित सुपार्श्वनाथ एवं पद्मप्रभ प्रतिमा, वेदी क्रमांक 5, 6, 7 एवं 8 पर विराजित श्री नेमिनाथ प्रतिमाएं एवं अन्य वेदियों पर विराजित और भी कई प्रतिमाएं हैं। डॉ. विद्याधर जोहरापुरकर ने भट्टारक संप्रदाय नामक पुस्तक में मूलसंघ-बलात्कारगण ईडर शाखा के भट्टारकों का कालपट प्रस्तुत किया है। इसके अंतर्गत भट्टारक सकलकीर्ति एवं उनके बाद इस शाखा में अनुक्रम से हुए भट्टारकों के विवरणों के अंतर्गत 18 वें क्रम पर भट्टारक यशकीर्ति का नाम है।1 बावन जिनालय से संबद्ध उक्त प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि भट्टारक यशकीर्ति के बाद सुरेन्द्रकीर्ति और उनके बाद

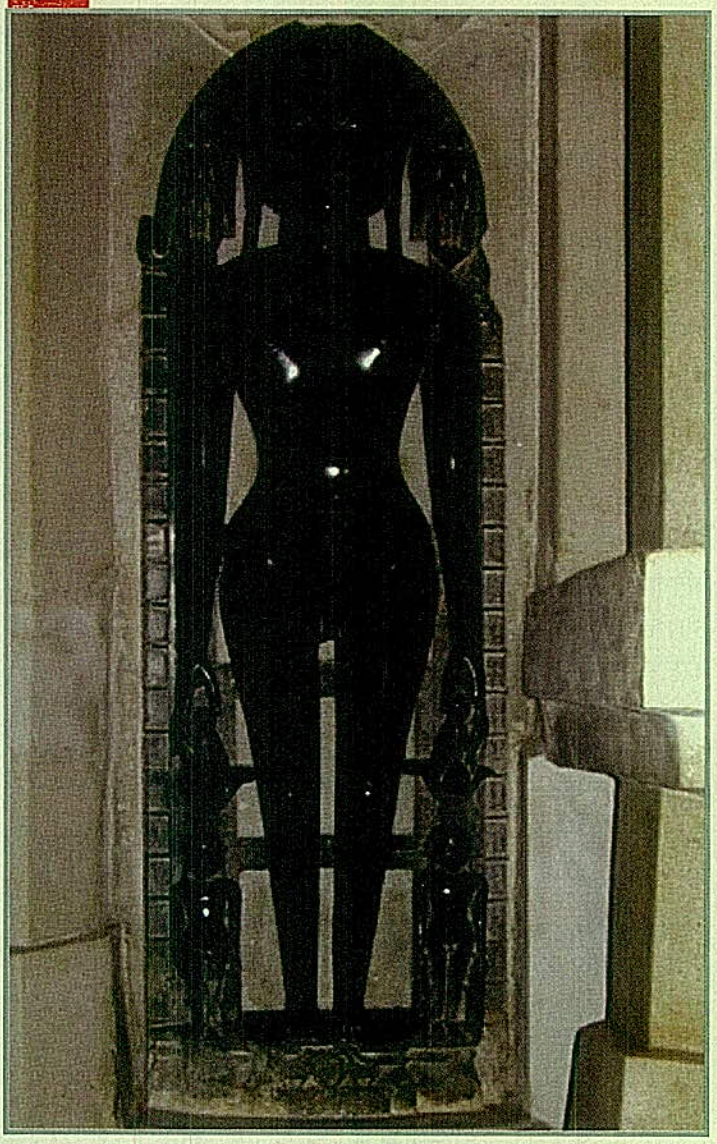

भिलोड़ा के चन्द्रप्रभ बावन जिनालय में विराजित भरतजी की प्रतिमा। चित्र 3

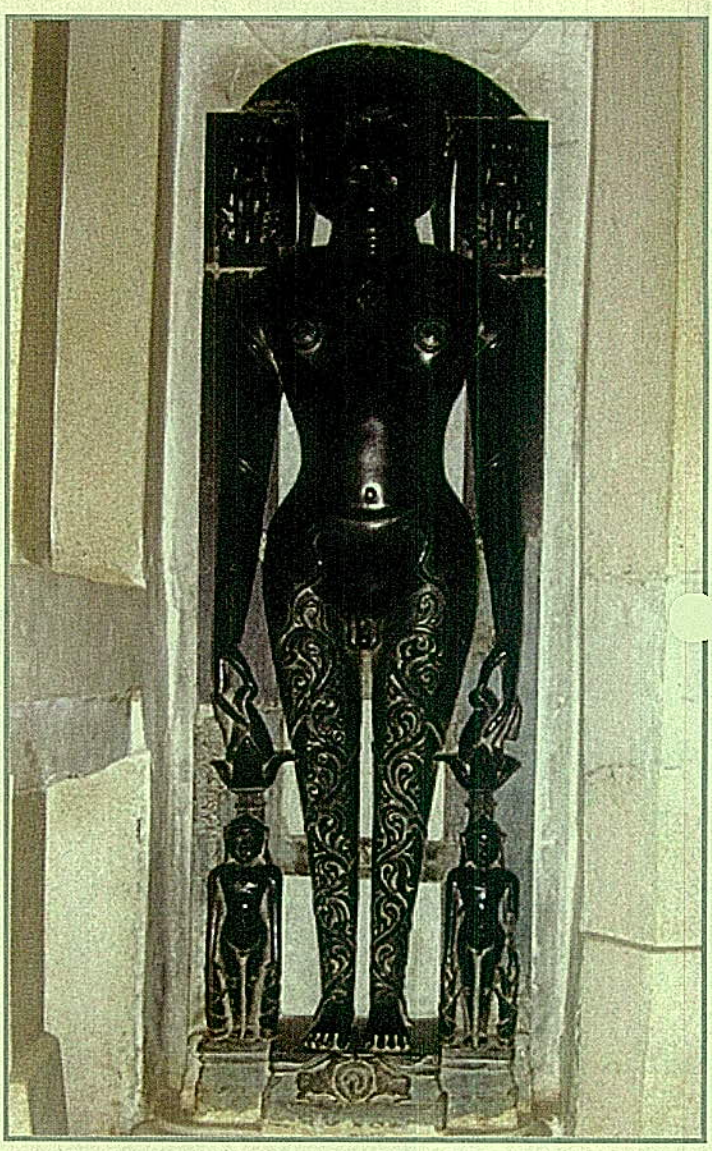

भिलोड़ा के चन्द्रप्रभ बावन जिनालय में विराजित भगवान बाहुबली की प्रतिमा। चित्र 4

रामचंद्रकीर्ति हुए, जिनकी प्रेरणा से संवत् 1928 में चन्द्रप्रभ बावन जिनालय में जीर्णोद्धार एवं नये जिनबिंबों की प्रतिष्ठा का कार्य सम्पन्न हुआ।

बावन जिनालयों के निर्माण की परंपरा एवं चंद्रप्रभ बावन जिनालय का निर्माण काल - भिलोड़ा स्थित बावन जिनालयों का निर्माण देश में इसी तरह के बने अन्य बावन जिनालयों की परंपरा के अंतर्गत होना ज्ञात होता है। राजस्थान के उदयपुर जिले का ऋषभदेव-केसरियाजी मंदिर मूलतः दिगंबर जैन परंपरा का है। यह मान्यता है कि दूसरी शताब्दी में यह मंदिर कच्ची ईंटों से बनाया गया था। इसके निज मन्दिर के चारों ओर बावन जिनालय बहुत बाद में बने जिनमें स्थापित प्रतिमाएं विक्रम संवत् 1611 से लेकर विक्रम संवत् 1863 तक की हैं। ऋषभदेव-केसरियाजी मंदिर की तरह ही भिलोड़ा का मूल रूप से बना मंदिर भी, यहां के निज मंदिर में विराजित भगवान बाहुबली एवं भरतजी की प्रतिमा के आधार पर, प्राचीन ज्ञात होता है। चद्रप्रभ जिनालय से संबद्ध कुछ प्राचीन जिनबिंबों के अतिरिक्त यहां विराजित अन्य जिनबिंबों के प्रतिष्ठा संबंधी लेखों के विवरणों के आधार पर इस मंदिर को बावन जिनालय के रूप में बन.. जाने का काल निर्धारित किया जा सकता है। गुजरात के साबरकांठा जिले के देरोल नामक गांव का श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन बावन जिनालय भी मूलसंघ-बलात्कार गच्छ की ईडर शाखा से विशेष रूप से सम्बद्ध रहा है। देश में और स्थानों पर भी दिगंबर जैन परंपरा के बावन जिनालय मंदिर हैं।

दिगंबर जैन मंदिरों में कीर्तिस्तंभों के निर्माण की परंपरा - राजस्थान के चित्तौड़गढ़ किले पर स्थित दिगंबर जैन परंपरा के 75 फुट 6 इंच ऊंचे सात मंजिला कीर्तिस्तंभ (मानस्तंभ) के निर्माण कार्य को दिगंबर जैन श्रावक साह जीजा द्वारा प्रारंभ करवाया गया एवं उनके पुत्र पुण्यसिंह (पूर्णसिंह) ने उसे पूरा किया। इसकी प्रतिष्ठा मूलसंघ-बलात्कार गच्छ की उत्तर शाखा के भट्टारक धर्मचन्द्र (सं. 1271-1296) के द्वारा सम्पन्न करवाई गई। भिलोड़ा के चन्द्रप्रभ बावन जिनालय परिसर में बना हुआ कीर्तिस्तंभ चित्तौड़गढ़ के किले पर बने कीर्तिस्तंभ की परंपरा को ही दर्शाता है।

चंद्रप्रभ बावन जिनालय के मुख्य मंदिर के गर्भगृह की मूलनायक प्रतिमा -

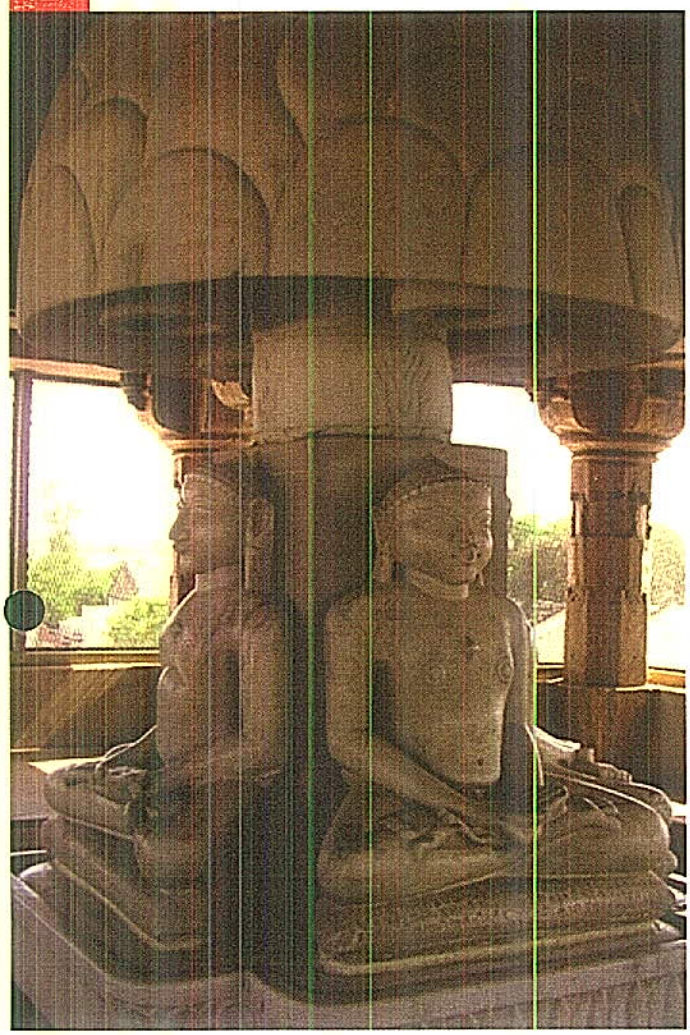

भिलोड़ा के चन्द्रप्रभ बावन जिनालय के तीसरे तल पर चारों दिशाओं में चार जिन प्रतिमाएं विराजित हैं। चित्र 5

मुख्य मंदिर के गर्भगृह में विराजित मूलनायक प्रतिमा भगवान चंद्रप्रभ की है। यह प्रतिमा चौबीसी प्रतिमा है। मध्य में भगवान चंद्रप्रभ की प्रतिमा श्वेत पाषाण से निर्मित है और परिकर में 23 अन्य तीर्थंकर प्रतिमाएं आदि धातु निर्मित है। यह संभावित है कि धातु निर्मित परिकर की प्रतिमाएं चंद्रप्रभ की पाषाण प्रतिमा से पूर्व की हों। हमारे तीर्थों एवं मंदिरों में चौबीसी आदि की कई ऐसी प्रतिमाएं देखने में आती है जिनमें परिकर और मध्य की प्रतिमाएं भिन्न समय की पायी जाती है। इसका कारण मध्य की मुख्य प्रतिमा का किन्हीं कारणों से किसी समय खंडित हो जाना ज्ञात होता है। भगवान चंद्रप्रभ की श्वेत पाषाण निर्मित प्रतिमा की चरण चौकी पर जो लेख उत्कीर्ण है उसके अनुसार संवत् 1928 में भट्टारक रामचन्द्रकीर्ति के उपदेश से इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा करवाई गई।

गर्भगृह एवं गूढमंडप की कुछ प्राचीन एवं विषिश्ट प्रतिमाएं - मुख्य मंदिर के गर्भगृह में मूलनायक भगवान चन्द्रप्रभ के दायीं ओर बाहुबली स्वामी की एवं बायीं ओर भरतजी की खड्गासन प्रतिमाएं प्राचीन एवं कई विशिष्टताओं से युक्त हैं। ये दोनों ही प्रतिमाएं पंच अर्हत् प्रतिमाओं के रूप में हैं। एक प्रतिमा के अंतर्गत मध्य में भगवान बाहुबली और दूसरी प्रतिमा के अंतर्गत मध्य में भरतजी की प्रतिमा उत्कीर्ण है और दोनों ही प्रतिमाओं में, प्रत्येक के दोनों ओर, ऊपर-नीचे दो-दो अर्हत् प्रतिमाएं दर्शाई गई हैं। भगवान बाहुबली एवं भरतजी दोनों ही के हाथों के नीचे एक-एक खिलता हुआ कमल पुष्प दर्शाया गया है। दोनों ही प्रतिमाओं की चरण चौकी पर धर्मचक्र और धर्मचक्र के दोनों ओर एक-एक हिरण को बैठे हुए दर्शाया गया है। गुप्तकाल (चौथी से छठी शती ई.) में जैन प्रतिमाओं की चौकी के मध्य चक्र बनाकर दोनों पार्श्व में हिरन अथवा वृषभ उत्कीर्ण करने की जानकारी प्राप्त होती है।2 भगवान बाहुबली की प्रतिमा पर पांवों पर चढती हुई बेलों का अंकन अत्यधिक कलात्मक है। भगवान बाहुबली एवं भरतजी की जिन विशिष्टताओं की प्रतिमाएं यहां विराजित है, इस तरह की विशिष्टताओं से युक्त जिन प्रतिमाएं अन्यत्र कम ही देखने में आती हैं। मुख्य मंदिर के गूढमंडप के मध्य नो सर्पफणों से युक्त जो पद्मासन पार्श्वनाथ प्रतिमा है, वह भी यहां की प्राचीन प्रतिमाओं में से एक है। नो सर्पफण वाली प्रतिमाएं भगवान सुपार्श्वनाथ की भी मानी जाती है।

सन् 2000 के बाद हुए जीर्णोद्धार आदि के कार्य - ऊपर दो पाषाण पट्टों पर अलग-अलग प्रशस्तियां होने के बारे में लिखा है। नीचे लगे पाषाण पट्ट के प्रशस्ति लेख के विवरणानुसार आचार्य श्री शान्तिसागरजी की पट्ट परंपरा के आचार्य श्री वर्धमानसागरजी के उपदेश से वीर निर्वाण संवत् 2531 में 23 मई सन् 2005 को बावन जिनालय में वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव एवं जिनबिंब स्थापना का कार्य सम्पन्न हुआ। जीर्णोद्धार आदि के विविध कार्य आचार्य श्री विद्यासागरजी के शिष्य क्षुल्लक ध्यानसागरजी के सान्निध्य में हुए। प्रतिष्ठाचार्य श्री हंसमुखजी जैन के निर्देशन एवं पानाचंद तलकचंद गांधी परिवार एवं भिलोड़ा सकल दिगंबर जैन समाज के सहयोग आदि से जीर्णोद्धार के उपरांत प्रतिष्ठा महोत्सव पूर्वक संपूर्ण जिनबिंब स्थापित किये गये। बावन जिनालय में आगे की ओर एक तरफ कीर्तिस्तंभ बना है और दूसरी ओर वर्तमान समय में सम्पन्न हुए विभिन्न जीर्णोद्धार आदि के विवरण लिखे हुए हैं। इन विवरणों के अनुसार मई 2005 में आचार्य विद्यासागरजी के आशीर्वाद तथा आचार्य भरतसागरजी, गणिनी आर्यिका सुपार्श्वमतीजी और गणिनी आर्यिका ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से क्षुल्लक ध्यानसागरजी के सान्निध्य में जीर्णोद्धार आदि के कार्य होने के बारे में लिखा है। गुजरात संत केसरी आचार्य भरतसागरजी के उपदेश से मार्च 2008 में कीर्तिस्तंभ की प्रतिष्ठा एवं बावन जिनालय के जीर्णोद्धार के पश्चात् वेदी प्रतिष्ठा हुई। कीर्तिस्तंभ के अन्दर प्रथम तल पर विराजित चौबीसी प्रतिमा में मूलनायक प्रतिमा भगवान शान्तिनाथ की है, जिसकी प्रतिष्ठा का लेख वीर नि. संवत् 2534 (सन् 2008) का है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. प्रो. विद्याधर जोहरापुरकर : भट्टारक संप्रदाय, प्रका. जैन संस्कृति संरक्षक संघ, शोलापुर, 1958 ई., पृष्ठ 158।
2. डॉ. वासुदेव उपाध्याय : प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान, प्रका. चौखंबा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी, 1970 ई., पृष्ठ 217।

कुण्डलपुर में हुआ बड़े बाबा का महामस्तकाभिषेक

सुनील वेजीटेरियन, कुण्डलपुर

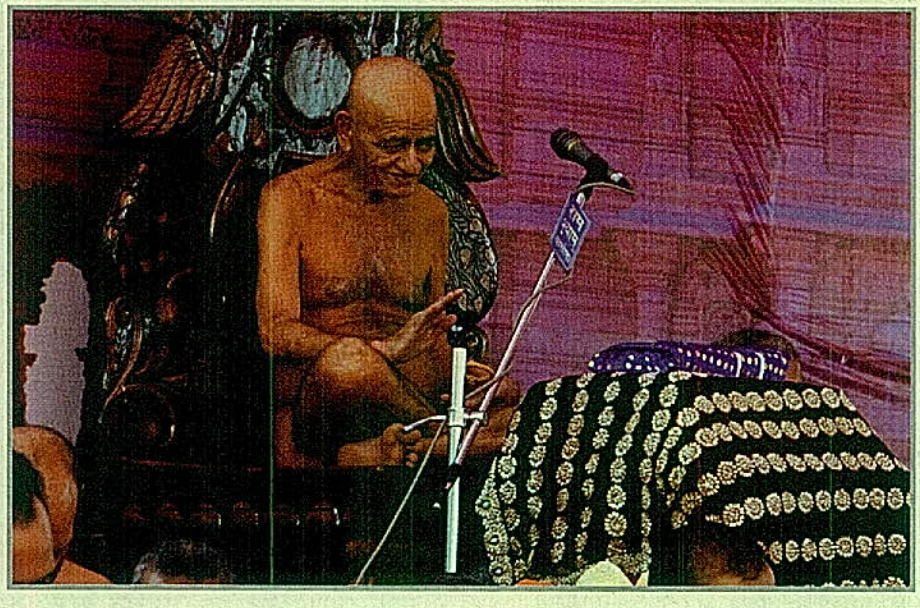

कुण्डलपुरः- प्रसिद्ध जैन तीर्थ कुण्डलपुर में आचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज के ससंघ मंगल सान्निध्य में 4 जून से विशाल महामस्तकाभिषेक महोत्सव का 15 वर्षों के बाद शुभारंभ हुआ। ध्वजारोहण से महोत्सव शुभारंभ करने का सौभाग्य दिल्ली के पंकज जैन पारस चैनल वालों को प्राप्त हुआ। तथा आचार्य श्री के पड़गाहन का अवसर वीरेश सेठ परिवार को प्राप्त हुआ। प्रतिष्ठाचार्य विनय भैया के निर्देशन में 5 जून को प्रातः काल 6 बजे बड़े बाबा के मस्तक पर प्रथम कलश से अभिषेक कर प्रथम पुण्यार्जक बनने का सौभाग्य दानवीर श्री अशोक पाटनी परिवार को प्राप्त हुआ। 6 जून को द्वितीय पुण्यार्जक का सौभाग्य भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के मंत्री श्री वीरेश सेठ परिवार को प्राप्त हुआ। 7 जून को तृतीय पुण्यार्जक प्रभात जी मुंबई, 8 जून को चर्तुथ पुण्यार्जक उत्तम, विनोद प्रमोद जैन कोयला वाले परिवार, तथा 9 जून को पंचम पुण्यार्जक राजाभाई सूरत रहे। प्रतिदिन प्रातः काल अभिषेक पूजन के उपरांत पहाड़ी पर बनाये गये पंडाल में आचार्य श्री के पादप्रक्षालन, पूजन एवं अमृत प्रवचन संपन्न हुये आचार्य श्री की 9:30 बजे आहारचर्या के पश्चात् प्रतिदिन 3:30 बजे प्रवचन तलहटी स्थित मुख्य पंडाल में आयोजित किये गये। प्रवचन के पूर्व आचार्य श्री को शास्त्र भेंट तथा श्रीफल अर्पित किये गये। महोत्सव में पधारे विशिष्ट अतिथियों में गांधीवादी विचारधारा के विचारक एस.सुब्बाराव, के अलावा प्रदेश के अनेक नेतागण दिल्ली के स्वास्थय मंत्री श्री सत्येन्द्र जैन, वित्तमंत्री श्री जयंत मलैया, शिक्षा मंत्री श्री उमाशंकर गुप्ता, सांसद श्री प्रहलाद पटेल, विधायक श्री लखन पटेल, उमादेवी खटीक रहे । भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीथक्षेत्र कमेटी की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमति सरिता एम. के. जैन, चैन्नई महामंत्री श्री संतोषकुमार जैन पेंढारी भी उपस्थित रहे। महोत्सव में 12 जून को अखिल भारतीय जैन प्रशासनिक अधिकारियों का अधिवेशन आयोजित हुआ। जिसमें न्यायाधीश, एडवोकेट तथा उच्च प्रशासनिक अधिकारी सम्मिलित हुये। अंतर्राष्ट्रीय शाकाहार प्रचारक डॉ.के.एम. गंगवाल भी महोत्सव में पहुंचे जहां उनकी शाकाहार सीडी का विमोचन हुआ तथा शाकाहार अहिंसा प्रदर्शनी भी लगाई गई। प्रतिभा स्थली की बहिनें भी बड़ी संख्या में महोत्सव में सम्मिलित हुईं, उन्होंने अपने हाथ से बनाई गई सुन्दर कलाकृतियों की प्रदर्शनी लगाई। हाथकरघा उद्योग को बढ़ावा देने एवं उसके प्रशिक्षण हेतु चयनित विद्यार्थियों ने भी अपनी कला का प्रदर्शन किया।

महोत्सव में प्रतिदिन सायंकाल महाआरती का आयोजन अति धूम धाम से हुआ। प्रतिदिन रात्रि 8 बजे सांस्कृतिक कार्यक्रमों की जानदार प्रस्तुति हुई । 4 जून को नेमिनाथ का वैर नाटक, 5 जून नाटक विद्याधर से विद्यासागर, 6 जून नाटक कुलभूषण एवं देश भूषण का वैराग्य तथा युगराज जी द्वारा "बहना मानों मेरा कहना" भाषण की जोरदार प्रस्तुति हुई । 7 जून को नाटक भरत बाहुबली प्रस्तुत किया गया। जबकि 8 जून को विराट कवि सम्मेलन तथा भजन संध्या दृष्टि बाधित बच्चों द्वारा प्रस्तुत की गई । इसके पूर्व 5 जून को आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज समाधि दिवस मनाया गया जबकि 9 जून को श्रुत पंचमी के साथ मुख्य महोत्सव का उपसंहार हुआ। भक्तों की भीड़ उनकी भावना को देखते हुये महोत्सव को 30 जून तक बढ़ा दिया गया। महोत्सव में 12 जून को भारत के लोकसभा अध्यक्ष का आगमन हुआ। जबकि 18 जून को भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्री अमित शाह, गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह तथा प्रदेश के मुखिया श्री शिवराज सिंह की आगमन की प्रबल संभावना है। महोत्सव आयोजन समिति के द्वारा तीर्थ यात्रियों के लिये आवागमन, आवास, भोजन, जल, आदि की व्यापक सुविधा जुटाई गई भीषण गर्मी में 200 से अधिक अस्थाई ए.सी. कोटेज का निर्माण किया गया। तथा एक विशाल भोजनशाला जिसमें हजारों व्यक्ति एक साथ भोजन कर सकें, बनाई गई। प्रवचन तथा ठहरने के लिये बड़े बड़े ठंडे पंडाल निर्मित किये गये। यात्रियों की सुविधा के लिये निःशुल्क वाहन व्यवस्था की गई आयोजक समिति के गौरव अध्यक्ष अशोक पाटनी राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज जैन मुंबई, कार्याध्यक्ष संदेश जैन, निदेशिका डॉ सुधा मलैया, वरिष्ठ उपाध्यक्ष विनोद जैन प्रमोद जैन, महामंत्री पंकज जैन पारस, कोषाध्यक्ष प्रभात जैन मुंबई एवं राजा भाई सूरत रहे। जबकि प्रबंध कार्यकारिणी के अध्यक्ष संतोष सिंघई, एवं महामंत्री वीरेन्द्र बजाज के साथ अन्य पदाधिकारी एवं सदस्यों ने सक्रिय सहयोग प्रदान किया। समस्त कार्यक्रम का संचालन अमित पडरिया, कवि चंद्रसेन, नवीन निराला, नितिन नांदगावकर, विजय धुर्रा एवं सुनील वेजीटेरियन ने किया।

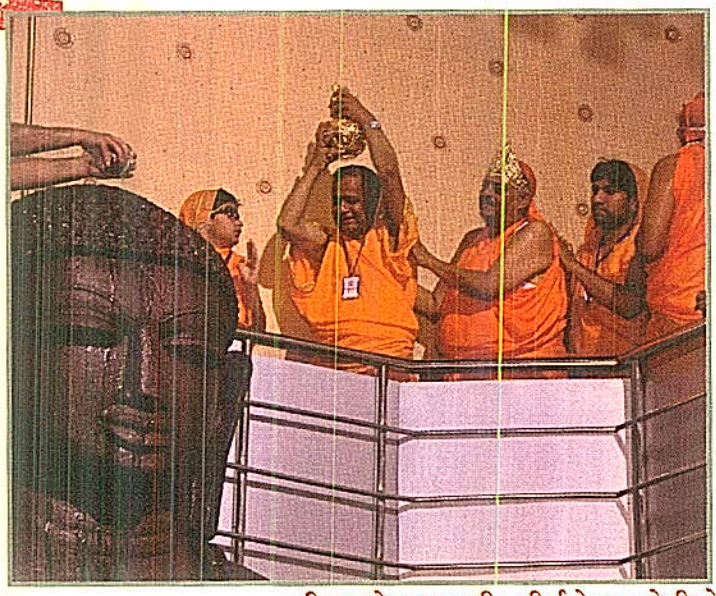

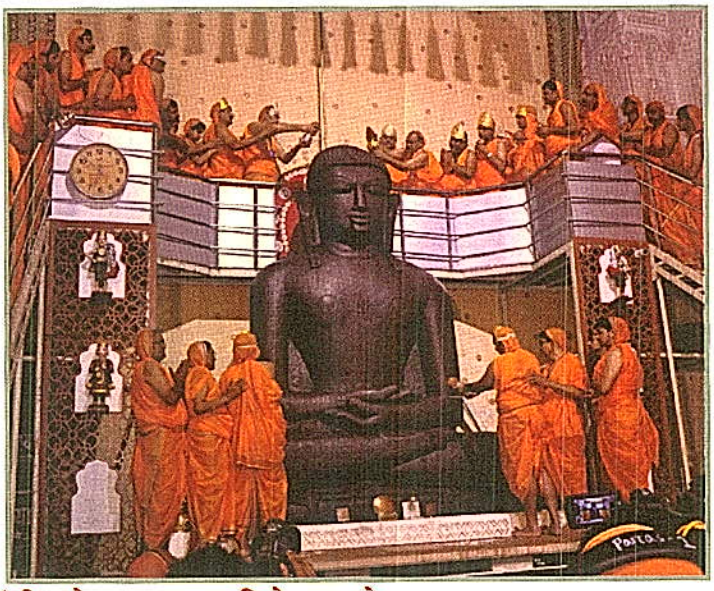

श्री अशोक पाटनी, तीर्थक्षेत्र कमेटी के मंत्री बड़े बाबा का अभिषेक करते हुए

कुंडलपुर के बड़े बाबा का विशेष प्रथम दिवस आवरण भारतीय डाक विभाग द्वारा

तीर्थक्षेत्र कमेटी की अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम. के. जैन आचार्य संघ का पूजन करते हुए तथा उपस्थित श्रावकगण

भारतीय विद्या और आधुनिक शिक्षा

पुरातन कालीन शिक्षा पद्धती

ब्रह्मचर्य पूर्वक गुरु सेवा करके शिक्षा पाते थे।
गुरुजन भी शिष्यों को सुत कहकर नि:शुल्क पढाते थे।।129।।
आज्ञाकारी हो गुरु के चरणों में शीश झुकाते थे।
बनकर शिष्य हृदय उनका यों वे सब कुछ पा जाते थे।।
लोकोपकारार्थ ही होता था उनका विद्या पढना।
उदरपूर्ति के सवाल को तो कभी नहीं उसपर मंढना।।130।।
पवित्र मानव जीवन, क्षुल्लक ज्ञानभूषण (आचार्य श्री ज्ञानसागर)

विद्या और शिक्षा

शिक्षा का अर्थ ज्ञान का अर्जन होता है। लेकिन विद्या का अर्थ जो अपने जीवन को अध्यात्म की ओर ले जानेवाली, जीवन को उँचा उठानेवाली, धर्म क्या? न्याय क्या? अन्याय क्या? गुण-दोष क्या? इन सबका ज्ञान विवेक देनेवाली है विद्या। इसके अलावा गणित, भौतिक विज्ञान, इतिहास, भुगोल, वाणिज्य आदि को सीखना है शिक्षा। हिंदी कोश में प्रतीक माना जाता है।

सन 1850 तक भारत देश में 7 लाख 32 हजार गुरुकुल हुआ करते थे और उस समय इस देश में 7 लाख 50 हजार गाँव थे, अर्थात यह गाँव में गुरुकुल, सर्जरी के 1500 गुरुकुल थे। संपूर्ण भारत में 97 साक्षरता थी।

लॉड मैकॉले द्वारा 2 फरवरी 1835 को हाऊस ऑफ कॉमन्स ब्रिटीश संसद में दिया गया भाषण-

मैने भारत की चतुर्दिक यात्रा की है और मुझे इस देश में एक भी याचक अथवा चोर नहीं दिखा। मैने इस देश में सांस्कृतिक सम्पदा से युक्त, उच्च नैतिक मूल्यों तथा असीम क्षमतावाले व्यक्तियों के दर्शन किये हैं। मेरी दृष्टी में आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत जो कि इस देश का मेरुदण्ड (रीढ.) है, उसको खण्डित किये बिना इस देशपर विजय प्राप्त नहीं कर सकते। मैं प्रस्ताव करता हूँ कि, इस देश की प्राचीन शिक्षण पद्धती, उनकी संस्कृति को इस प्रकार परिवर्तीत कर दें कि परिणाम स्वरुप भारतीय यह सोचने लगे कि जो कुछ भी विदेशी एवं आंग्ल है वही श्रेष्ठ एवं महान है। इस तरह वे अपना आत्म सम्मान, आत्म गौरव तथा उनकी अपनी मूल संस्कृति को खो देंगे और वे वही बन जायेंगे जो कि हम चाहते हैं। पूर्ण रुप से हमारे नेतृत्व के अधीन एक देश है।

भारत वर्ष में गुरुकुल कैसे खत्म हो गये?

कॉन्वेट स्कूलों ने किया बर्बाद। 1858 में अंग्रेज संसदने एक कानून इण्डियन एज्युकेशन एक्ट बनाया गया। इसकी ड्राफ्टिंग लॉर्ड मैकाले ने की थी। उसने सबसे पहले गुरुकुलों को गैर कानूनी घोषित किया, जब गुरुकुल गैर कानूनी हो गयी, फिर गुरुकुलों में संस्कृत विद्या और स्थानीय भाषा में तेलगु, कन्नड, मराठी गुजराथी आदि सब भाषाओं को गैर कानूनी घोषित किया। अध्यापकों विरोध किया तब अंग्रेजोंने उन्हें जेल में डाल दिया। उनके उपर अत्याचार करके मारा-पीटा, हाथ काट दिए और गुरुकुलों को उन्होंने घूम-घूम कर खत्म कर दिया, उनमें आग लगादी। बडे-बडे पुस्तकालयों में आग लगा दी। नालंदा की लायब्ररी 6 महिने तक जल रही थी।

इस तरह से सारे गुरुकुलों को खत्म किया गया और फिर अंग्रेजी शिक्षा को कानूनी घोषित किया गया।

गुरुकुलम् से

भारतीय शिक्षा तंत्र विनाश का षडयंत्र

मई, 1791 में चार्ल्स ग्रांट की एक ऑबसर्वेशन नामक रिपोर्ट आयी, उसके अंदर भारत पर पूर्ण प्रभुत्व करना है, तो क्या करना चाहिए उसका विवेचन पढकर, उसको लागू करने के लिए उसमें और चिंतन करके 1835 में मैकॉले ने एक प्लान दिया और अंग्रेज संसद में भारत में कॉन्वेन्ट निकालनेकी बात की, तब संसद ने आश्चर्य व्यक्त किया। क्योंकी विदेशोंमें जो कॉन्वेन्ट है उसका कारण, वहाँ के स्त्री-पुरुष संतान होते ही अपने आनंद में बाधक मानते है। इसलिए वे दरवाजा खोलके बाहर रखते थे। कभी-कभी कुत्ते भी उनको खाने लगे। तब संसद ने कहा, हमें संकेत करेंगे तो, सरकारी कर्मचारी लेकर आयेंगे। ऐसे सब लावारिस अनाथ बच्चोंको पालनेवाली संस्था को कॉन्- कहते हैं। इसलिए संसद को आश्चर्य हुआ था। तब मैकॉले ने कहा- मैं भारत में कॉन्वेन्ट के माध्यम से अनाथ बनाऊँगा।

कलकत्ता में पहला कॉन्वेन्ट स्कूल खोला गया, उस समय इसे फ्री स्कूल कहा जाता था। इसी कानून के तहत भारत में कलकत्ता, मुंबई, मद्रास युनिर्व्हसिटी बनायी गई और ये तीनों गुलामी के जमानें की युनिर्व्हसिटी आज भी इस देश में है और मैकॉले ने अपने पिता को एक चिठ्ठी लिखी थी, उसमें वो लिखता है कि, इन कॉन्वेन्ट स्कूलों से ऐसे बच्चे निकलेंगे जो देखने में तो भारतीय होंगे लेकिन दिमाग से अंग्रेज होंगे और इन्हें अपने देश के बारे में, अपनी मुहावरें मालूम नहीं होंगे, इस देश से भले ही अंग्रेज चले जाए, पर अंग्रेजियत नहीं जाएगी। उस समय लिखी चिठ्ठी की सच्चाई इस देश में अब साफ साफ दिखाई दे रही है। भारत में 1947 तक 30-35 हजार कॉन्वेन्ट स्कूल शुरु हो गए थे।

गुरुकुल से

अंग्रेजी आंतरराष्ट्रीय भाषा है?

हम अंग्रेजी को आंतरराष्ट्रीय भाषा मानकर सीख रहे है। लेकिन यह हमारा भ्रम है दुनिया में 204 देश हैं और अग्रेजी सिर्फ 11 देशों में बोली, पढी और समझी जाती है, फिर ये कैसी आंतरराष्ट्रीय भाषा है? शब्दों के मामले में भी अंग्रेजी समृद्ध नहीं, दरिद्र भाषा है। अंग्रेजी के निजी शब्द कोष में केवल 12,000 ही शब्द है, शेष फ्रेंच और लॅटीन भाषा से लिए गये है जब कि हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी 77,000 निजी शब्दों से समृद्ध है।

विज्ञान पत्रिका करंट साइंस में राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केंद्र के डॉक्टरोंद्वारा कराए गए एम.आर.आई. परिक्षण की रिपोर्ट के अनुसार- अंग्रेजी बोलते समय दिमाग का सिर्फ बाँया हिस्सा सक्रिय हो जाते हैं जिससे दिमागी स्वास्थ तरोताजा रहता है।

शिक्षा का अतीत काल

15 अगस्त 1947 को देश अंग्रेजों के गुलामी से आजाद हुआ ऐसे कहते है, क्या वास्तव में अंग्रेजों के गुलामी से आजाद हो पाया? नहीं क्यों कि आज भी मानसिक रुप से अंग्रेजों की जंजिरों से जकडे हुए है और उन्हीं के द्वारा दी गई शिक्षा पद्धती का अनुकरण कर रहे हैं।

अंग्रेजों से पहले भारतीय शिक्षा पद्धती इतनी अधिक समृद्ध थी कि दुनिया का कोई भी देश भारत की बराबरी नहीं कर सकता था। प्राय: लोग सोचते हैं कि, अतित काल में केवल धार्मिक शिक्षा ही दि जाती थी। यह भ्रम है। प्राचीन काल में आध्यात्मिक विद्या के साथ 18 विषय पढाए जाते थे। गणित, खगोलशास्त्र, धातुविज्ञान, चिकित्साशास्त्र आदि.

जैन साहित्य से प्रमाणित है कि प्राचीन भारत में शिक्षा अन्तर्जोति और शान्ति का स्रोत मानी जाती थी, जो शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आर्थिक शक्तियों के संतुलित विकास के हमारे स्वभाव में परिवर्तन करती तथा उसे श्रेष्ठ बनाती है। इस प्रकार शिक्षा हमें इस योग्य बनाती है कि हम समाज में एक विनीत और उपयोगी नागरिक के रुप में रह सकें। यह अप्रत्यक्ष रुप से हमें इहलोक, परलोक दोनों में आत्मिक विकास में सहायता देती है।

प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धती (पृष्ठ6) डॉ. अनन्त सदाशिव अलतेकर, 1955.

आधुनिक शिक्षा

शिक्षा हमारा साध्य नहीं है, बल्कि साधन है। जिस शिक्षा से हम चरित्रवान बन सकें वही सच्ची शिक्षा मानी जाती सकती हैं। कोई भी यह नहीं कह सकता कि स्कूलों की शिक्षासे चारित्र्य प्राप्त किया जा सकता है। स्कूलों में चरित्र को बिगाड लेने के अनेक उदाहरण हमें मिल जायेंगे। एक निष्पक्ष अंग्रेज लेखकने कहा है कि जब तक भारत के स्कूलों और घरों में सामंजस्य न होगा, तब तक छात्र दोनों दीनों से भ्रष्ट ही होते रहेंगे।

कुछ अंग्रेज हम पर यह आरोप लगाते है कि हम लोग नकलची हैं। यह बात नितान्त अर्थ रहित नहीं है। एक अंग्रेज आलोचक ने तो हमें सोख्ता कागज की अशिष्ट उपमा दी है। उसका खयाल है की जिसे सोख्ता कागज फालतू स्याही को सोख लेता है वैसे ही हम उनकी सभ्यताकी अनावश्यक बातों अथवा उसके दोषों को ही ग्रहण करते हैं। हमें मानना चाहिए कि कुछ अंशोंमें हमारी वैसी ही दशा हुई है। इस दशाके कारणों पर विचार करते हुए मुझे तो ऐसा लगा है कि अंग्रेजी के माध्यमसे शिक्षा देना ही मूल दोष है। मैट्रीक तक की शिक्षा समाप्त करने में सामान्यत: बारह वर्ष लगाते है। इन वर्षोमें हमें अत्यल्प सामान्यज्ञान मिलता है। किन्तु हमारा मुख्य प्रयत्न उस ज्ञानका समन्वय अपने कार्य से करने या उसको अपने व्यवहारों लाने का नहीं होता, बल्कि किसी तरह अंग्रेजी भाषापर अधिकार प्राप्त करने का होता है। विद्वानों का मत यह है कि यदि सब लोगों को मैट्रीक तक का ज्ञान मातृभाषा के माध्यमसे दिया जाये तो कमसे कम 5 वर्ष बच जायेंगे। इस प्रकार 10,000 छात्रों को मैट्रीक तक पढाने में लोगों के 50,000 वर्षो की हानि हुई। यह अत्यन्त गम्भीर निष्कर्ष है। इतना ही नहीं, हम इस प्रकार अपनी भाषाओं को भिखारी बनाते रहें हैं।

-समालोचक अक्तूबर, 1916 तथा प्रॉब्लेम्य ऑफ एज्यूकेशन से- मो. क. गांधी. देशी भाषाओंकी उपेक्षा का अर्थ है राष्ट्रीय आत्मघात/25/5/1917, मो. क. गांधी.

मातृभाषा में शिक्षा क्यों आवश्यक है?

नवीनतम शोध यह कह रहे हैं कि जिस भाषा में माँ गर्भकाल में गर्भस्थ शिशु से बात करती है, जिस भाषा में बच्चा सोचता है, जिस भाषा में सपने देखता है, जिस भाषा में वह जन्म से ही संवाद करना सीखता है, यदि उसी भाषा में शैशव और किशोर अवस्था में बच्चे की शिक्षा हो तो उसका मानसिक विकास इतना अच्छा होता है कि वह उच्च शिक्षा के सभी विषय ज्यादा अच्छी तरह से ग्रहण करने में सक्षम होता है। तब उसे ज्ञान को रटना नहीं होता, वह सही मायने में ज्ञान को ग्रहण करता है जो कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश- ज्ञान है।

जिस भाषा में बच्चा सोचता है, जिस भाषा में वह जन्म से ही संवाद करना सीखता है, उसी भाषा में वह अपने आपको सबसे अच्छी तरह से से अभिव्यक्त करने में भी सक्षम होता है। अत: उसे परीक्षा में उसी भाषा में प्रश्नपत्र मिले और उसी भाषा में उत्तर लिखने की आजादी भी मिले तो वह परीक्षा की तैयारी करते हुए तनावग्रस्त नहीं होगा तथा अपने ज्ञान को अधिक अच्छी तरह से प्रस्तुत कर ज्यादा अच्छा परिणाम प्राप्त कर सकता है।

मातृभाषा से भिन्न भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने पर बच्चे की अधिकांश ऊर्जा और समय उस भाषा को सीखने में व्यय होता है। समय और शक्ति के अभाव में वह उन्य विषयों में स्वाभाविक रुचि नहीं ले पाता, परिणाम स्वरुप थकान और तनाव से ग्रस्त हो जाता है, उसका स्वाभाविक और सर्वांगीण विकास शारीरिक और मानसिक विकास नहीं हो पाता है।

अंग्रेजी भाषा का विरोध क्यों?

अंग्रेजी या किसी भी भाषा का विरोध नहीं है पर वह शिक्षा का माध्यम होकर एक विषय के रुप पढाई जानी चाहिए। जो भाषा मात्र तीन महिने में सीखी जा सकती उसके लिए अपने बच्चों से उनका बचपन छीन लेना कहाँ की बुद्धिमानी है। उसके लिए इतना बडा और इतना महंगा तंत्र खडा करने का अपव्यय क्यों? अपनी भाषा और संस्कृति की कीमत पर अंग्रेजी का विकास क्यों?

अंग्रेजी भाषा के बिना तकनीकी विषय पढाए जाऐंगे?

यह एक भ्रांत धारणा है कि, अंग्रेजी भाषा के बिना तकनीकी विषय नहीं पढाये जा सकते। चीन, जापान, जर्मनी, फ्रान्स, सोविएत रुस में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी न होकर वहाँ की मातृभाषाएँ है लेकिन तकनीकी विकास में वे किसी तरह भी इंग्लैंड, अमेरिका से कम नहीं है।

विश्व के लगभग 77 देश कभी अंग्रेजों के गुलाम थे, आज वे सभी स्वतंत्र हो चुके हैं। स्वतंत्रता प्राप्ती के उपरान्त सभी ने शिक्षा के माध्यम के रुप में अंग्रेजी को नहीं अपनी मातृभाषा को ही अपनाया है। तो क्या अंग्रेजी के अभाव में इन देशों में सब बेरोजगार ही रह जाते हैं?

जिस देश की युवा आबादी में विदेशी भाषा के माध्यम से किसी का नौकर हो जाने की ही ख्वाहिश हो, अपना व्यवसाय करके मालिक बनने की चाहत ही ना हो, उद्यमशीलता ही ना हो तो क्या वह देश कभी वास्तविकता विकास कर सकता है?

आज विश्व के सभी देश अपने देश में अंग्रेजी के प्रभाव को कम करने के लिए प्रयत्नशील है लेकिन हम हैं अंग्रेजी के दिवाने, पाश्चात्य सभ्यता के नशे में डुबे हुए, इस भाषा के साथ आनेवाली गुलामी के खतरे को देख नहीं पा रहे और जान बुझकर इस भाषा के प्रभाव को बढाते ही चले जा रहे हैं।

यदि अपने बच्चे अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में पढ रहे हैं और स्कूल में आपस में हिंदी, इस भाषा के साथ आनेवाली गुलामी के खतरे को देख नहीं पा रहे और जान बुझकर इस भाषा के प्रभाव को बढाते ही चले जा रहे हैं।

यदि अपने बच्चे अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में पढ रहे हैं और स्कूल में

आपस में हिंदी, मराठी, कन्नड में बातचीत करने पर दंडित किया जाता है तो ऐसे दंड का जोरदार विरोध करें।

स्वभाषा अभियान से

भारतीय शिक्षा- दर्शन एवं मनोविज्ञान के प्रकरणों के विवेचन की पृष्ठभूमी को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षा के उद्देशोंको भारतीय शिक्षा के मूलतत्व में लज्जाराम तोमर पंचमुखी शिक्षा निम्नांकित चरणों के अनुसार कहा हैं-

1) शारीरिक शिक्षा- छात्रों के आध्यात्मिक, नैतिक, मानसिक एवं व्यावसायिक विकास का साधन शरीर है। अत: शारीरिक विकास को शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश माना गया है। शारीरिक विकास के अन्तर्गत अन्नमय एवं प्राणमय-दोनों कोशों का विकास सम्मिलीत है।

2) व्यावसायिक शिक्षा-व्यक्तिगत जीविकोपार्जन हेतु एवं राष्ट्र की आर्थिक समृद्धि हेतु आवश्यक व्यावहारिक कुशलताओं एवं सम्बधित गुणों एवं वृत्तियों का विकास करना।

3) मानसिक शिक्षा- इसके अन्तर्गत मानसिक एवं बौद्धिक शक्तियों एवं क्षमताओं का विकास एवं जिस विश्व में हम रह रहे हैं उसका ज्ञान प्राप्त करना समाहित है।

4) नैतिक शिक्षा- ईश्वरोंन्मुख जीवन के लिए ध्येयानिष्ठा, अनुशासन, स्वच्छता-बोध, सत्यवादिता, नि:स्वार्थता, शिष्टाचार, समाज एवं राष्ट्र के प्रति भक्ति भावना आदि सद् गुणोंका विकास करना।

5) आध्यात्मिक शिक्षा- भारतीय जीवन- दर्शन के अनुसार जीवन के परम लक्ष्य के प्रति सचेत करना, अन्तरात्मा में एवं दूसरे प्राणियों में ईश्वर के दर्शन करना, निर्भयता, प्रेम, करुणा आदि आध्यात्मिक गुणों का विकास करना।

हमें तो ऐसी शिक्षा चाहिए जिससे चरित्र बने, मानसिक वीर्य बढे, बुद्धि का विकास हो और जिससे मनुष्य अपने पैरों पर खडा हो सके।

-स्वामी विवेकानंद

अध्ययन और प्रयोग के द्वारा विद्यार्थी को निश्चित आदर्श तक पहुंचाना यही शिक्षा का उद्देश है।

-आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज

अंग्रेजी से फायदा कम, नुकसान ज्यादा

जर्मनी, फ्रान्स, जापान, इंग्लैड, ईरान आदि देशों में ऐसी पढाई स्वभाषा में होती है इसलिए वहाँ शत प्रतिशत साक्षरता है। अंग्रेजी के कारण भारत दो टुकडों में बँटा हुआ है। अंग्रेजी इंडिया का नागरिक 1000 रु. रोज पर गुजारा कर रहा है और भारत का नागरिक सिर्फ 27 और 33 रु. रोज पर। यदि अंग्रेजी अनिवार्य न हो तो गरीब और ग्रामीण बच्चों को भी अवसरों की समानता मिलेगी।

वेद प्रताप वैदिक (दैनिक भास्कर 27 जुलाई 2013)

किसी भी भाषा को शिक्षा के माध्यम के रुप में चयन के तीन आधार है।

1) जिस भाषा में विद्यार्थी सरलता से ज्ञान ग्रहण कर सके।

2) जिस भाषा में विद्यार्थी बारीकी के साथ वस्तु के यथार्थ स्वरुप का चिंतन कर सके।

3) जिस भाषा में विद्यार्थी अपने विचारों को सरलता से अभिव्यक्त कर सेक।

हमें सोचना है कि यह तो केवल मातृभाषा में ही संभव है। विदेशी भाषा तो बिल्कुल भी इन मापदंडो पर खरी नहीं उतर सकती।

हिंदी को विज्ञान की भाषा बनना जरुरी है।

रक्षामंत्री के वैज्ञानिक सलाहकर अविनाश चंदरकर ने कहा है कि भारत विज्ञान में दुनिया के लिए इसलिए पिछडा है की हम आज भी अपनी भाषा में विज्ञान को नहीं अपना रहे हैं और हमने अगली पिढी को अपनी भाषा में लिखकर नहीं बल्कि श्रुति के अधार पर पहुंचाया है। इसलिए हिंदी में वैज्ञानिक खोज होनी चाहिए। देश के आम आदमी तक नई तकनीक और वैज्ञानिक खोज का लाभ पहुचाना है तो इसके लिए हिंदी को विज्ञान की भाषा बनाया जाना जरुर है।

दैनिक भास्कर 6/12/2013

मैकॉले-शिक्षा बेरोजगारी का स्थान-

उत्तर प्रदेश में प्यून के 368, पदों के लिए 23 लाख आवेदन, दावेदारों में 2 लाख से ज्यादा बी. टेक. ग्रॅज्युएट, 225 पी.एच.डी-

उत्तर प्रदेश के सचिवालय में 10 साल बाद प्यून की 368 पोस्ट के वैकन्सी निकाली गई. इसके लिए महज 33 दिनों में 23 लाख से ज्यादा लोंगों ने आवेदन कर दिए। उत्तर प्रदेश की आबादी है करीब 21.5 करोड। यानी हर 93 वे व्यक्ति ने इस पोस्ट के लिए आवेदन किया।

आवेदन करनेवालों में 255 पी.एच.डी. 2लाख 22 हजार से ज्यादा बी.टेक. बी एस्सी, बी.कॉम. एम.एस्सी., एम. कॉम. और एम.ए. हैं। सरकार की तरफसे प्यून पद के लिए दो ही योग्यताएँ मांगी गई थी। -आवेदन 5 वीं पास हो, और दुसरी उसे साइकिल चलानी आती हो। लडकियों और विकलांगो के लिए साइकिल की अनिवार्यता नहीं थी।

एक रिपार्ट के अनुसार भारत में 2020 तक 21 करोड बेरोजगारों की फौज खडी हो जाएगी।

ऐसी शिक्षा हमारे किस काम की? मैकॉले की शिक्षा प्रणाली से छुटकारा पाने का समय आ गया है। जहाँ डिग्री है, वहाँ अंग्रेज है, वहाँ गुलामी का शखनाद है। एम.बी. ए. कर भी लिया तो क्या, एक चपरासी की नौकरी भी मिलेगी। इसकी गारंटी नहीं है। बेरोजगारी का अंतिम पडाव है- अपराध और देश में गृहयुद्ध को आमंत्रण।

देशहित की भावना से ओतप्रोत आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज-

मनूजो मानवो भूयात भारत: प्रतिभारत:

यह मनुज मानव हो और भारत प्रतिभा रत रहे।

मनुष्य बुद्धि व गुणों के विकास और संस्कारो के संवर्धन से मानव बने और भारत प्रतिभा में निमग्न हो।

हित का सृजन और अहित का विसर्जन यही शिक्षा का लक्षण है।

शिक्षा का उद्देश जीवन निर्वाह नही, जीवन निर्माण है।

शिक्षा का कार्य संस्कारों के संरक्षण के साथ भविष्य का विकास करना है।

ज्ञान भाषात्मक नही, भावात्मक होना चाहिए।

-आचार्य श्री विद्यासागरजी

प्रकाशक:

शांती-विद्या ज्ञानसंवर्धन समिती, सांगली।

मुम्बई महानगर में वात्सल्य रत्नाकर परम पूज्य आचार्य श्री विमलसागरजी मुनिराज की जन्म जयंती महोत्सव बड़े ही धूम-धाम से सम्पन्न हुई जिसमें करीब 15हजार से अधिक विमल भक्तों ने किया गुरु गुणगान

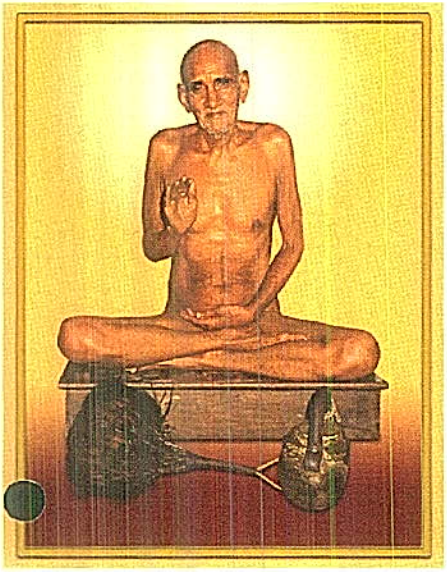

त्रिभुवन वंदनीय, निमित्त ज्ञान शिरोमणि, वात्सल्य रत्नकार, धर्मदिवाकर, महान परोपकारी संत, परम पूज्य आचार्य विमलसागरजी मुनिराज का जन्म शताद्वी वर्ष के अंतर्गत मुम्बई महानगर में दिनांक 5जून 2016 को गोरेगांव स्थित बॉम्बे एग्जीबिशन सेन्टर (नेस्को) में आयोजित "**आराधना महोत्सव**" में समग्र जैन समाज से करीब 15हजार से अधिक संख्या में भक्त जन एकत्रित होकर आचार्य श्री के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके महान कृतित्वों का गुणगान किया। इस अवसर पर आचार्य श्री कुशाग्रनंदीजी मुनिराज, मुनि श्री प्रबलसागरजी, मुनि श्री अमोघकीर्तिजी, मुनि श्री अमरकीर्तिजी, मुनि श्री जयकीर्तिजी, क्षुल्लक श्री नमितसागरजी, आर्यिका श्री प्रसन्नमति माताजी, तथा भट्टारक श्री अरिहंतऋषिजी एवं पिठाधीश ब्र. रवीन्द्रकीर्तिजी जी की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि के रुप में मुख्य मंत्री श्री देवेन्द्र फडणवीस की पत्नी श्रीमती अमृता फडणवीस उपस्थित थी। कार्यक्रम का संचालन श्री कमल कासलीवाल तथा श्री संजय राजा ने किया।

श्री बंडीलाल दिगम्बर जैन कारखाना श्री गिरनारजी का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

श्री बंडीलाल दिगम्बर जैन कारखाना (पब्लिक ट्रस्ट) की वार्षिक मीटिंग 1मई 2016 को श्री गिरनारजी सिद्धक्षेत्र पर सम्पन्न हुई। जिसमें प्रथम टोंक पर स्थित दिगम्बर जैन मंदिर की जीर्ण-शीर्ण स्थिति को देखते हुए। सभा पत के नेतृत्व में इसका जीर्णोद्धार शीघ्र कराने का निर्णय लिया गया। अध्यक्ष जी ने बताया की पहाड पर स्थित दिगम्बर जैन धर्मशाला का जीर्णोद्धार 80 प्रतिशत पूर्ण हो गया है। जिसका आशीर्वाद श्री 108 श्री ज्ञानसागरजी महाराज ने सभापति श्री निर्मल बंडी को दिया था। तलहटी में रुकने की सफाई एवं भोजन की व्यवस्था प्रशंसनीय है। मीटिंग में सभी सदस्यों में सभापति को यह धन्यवाद दिया कि उन्होंने दिनांक 18/3/2016 को आइ.जी से मीटिंग कर पहाड पर घटित मारपीट घटनाओं की जानकारी दी। फलस्वरुप पिछले 2 महीनों से मारपीट की कोई घटना घटित नहीं हुई।

विशेष सूचना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद की बैठक रविवार दिनांक 26 जून 2016 की प्रात: 10 30 बजे से श्री सम्मेद शिखर क्षेत्र, मधुबन में "निहारिका भवन" में रखी गई है जिसकी सूचना पदाधिकारी परिषद के सदस्यों को भेजी गई है। इसी दिन दोपहर को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट मण्डल की बैठक भी रखी गई है। उसी दिन अपरान्ह 3.30 बजे से श्री दिगम्बर जैन शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखर ट्रस्ट के ट्रस्टियों की बैठक भी रखी गई है।

संतोषकुमार जैन 'पेंढारी'
महामंत्री

श्री 1008 केशरियानाथ दिगम्बर जैन संस्थान जामोद जिला बुलढाना (महाराष्ट्र)

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सहयोग से मंदिर जी के बाहरी भाग का पूरा जीर्णोद्धार कार्य पूर्ण कर लिया गया है। जीर्णोद्धार के बाद मंदिर जी की स्थिति इस प्रकार हुई है।

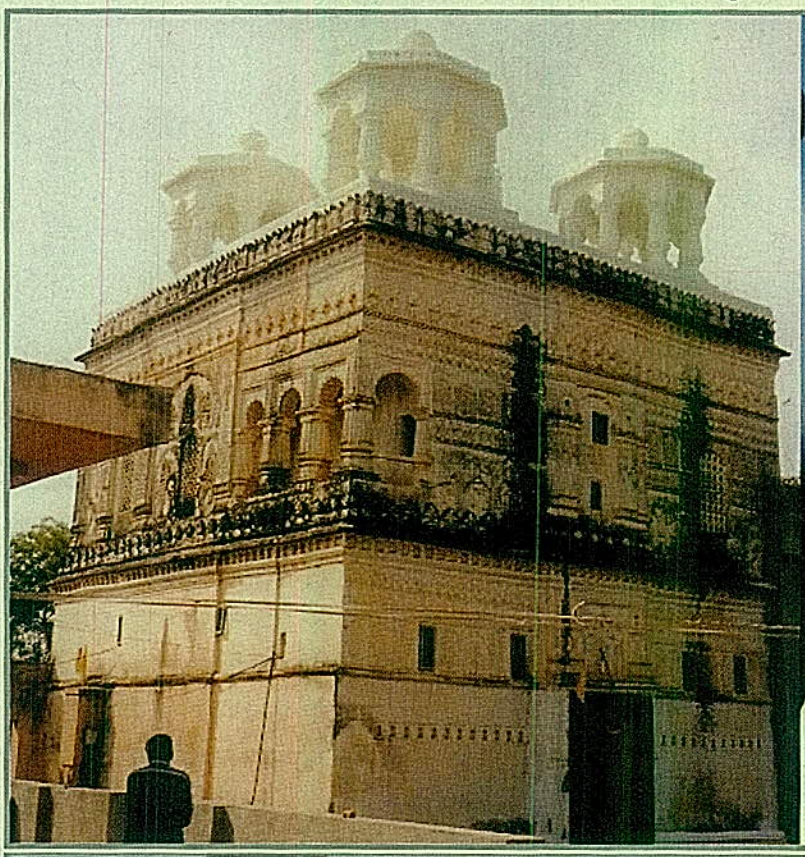

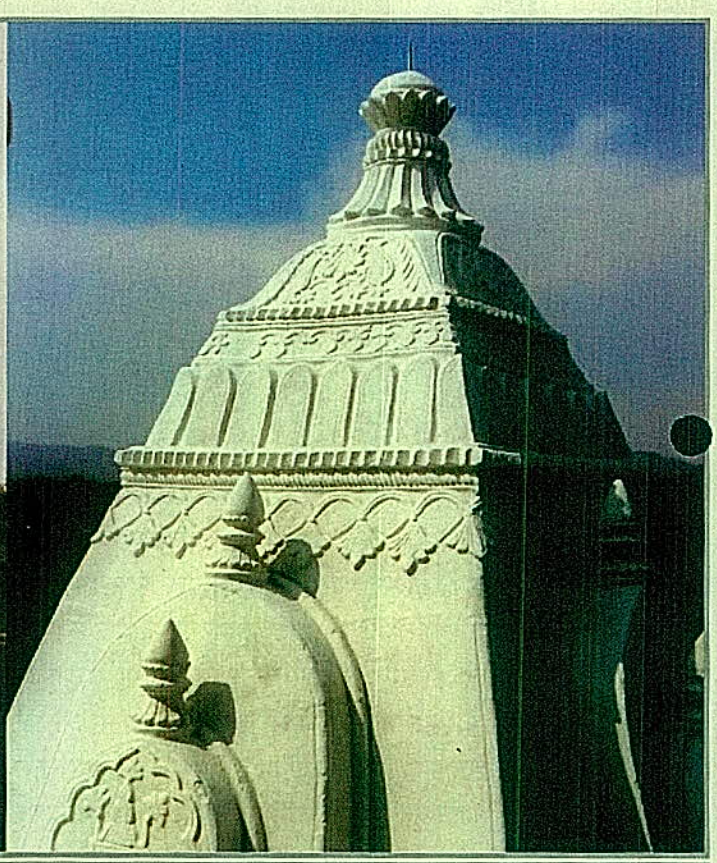

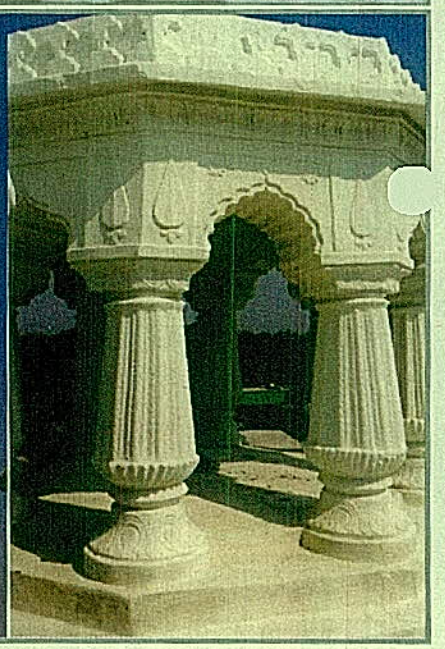

अब मंदिर जी के अंदर वाले परिसर के प्राचीन चित्रकारी के जीर्णोद्धार का जो पुरातत्व विभाग के अनुभवी कारीगारों द्वारा कलर को जीवित कराने का कार्य है। जिस पर आनुमनित 30 लाख रुपये व्यय होंगे।

अखिल भारतीय निबन्ध (व्यावहारिक सुझाव) प्रतियोगिता

आयोजक - भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुम्बई
अन्तिम तिथि - 31 जुलाई 2016
शब्द सीमा - 2500 शब्द

वर्ग-1, युवावर्ग
विषय- जैन तीर्थों के संरक्षण एवं विकास में युवाओं की भूमिका
पात्रता- 45 वर्ष से कम आयु का कोई भी दि. जैन युवा

वर्ग-2, महिलावर्ग
विषय- जैन तीर्थों की प्रगति एवं व्यवस्था में महिलाओं की सहभागिता
पात्रता- कोई भी दि. जैन महिला

नियम-

1. लेख ए-4 आकार के कागज पर सुवाच्य हस्तलिपि या टाइपोज कराकर डबल स्पेस में 2 प्रतियों में भेजें।

2. युवा वर्ग के प्रतिभागी आयु का प्रमाण पत्र भेजें।

3. लेख के उपर एक पृष्ठ पर अपना पूरा नाम, पत्राचार का पता, फोन नं./सेल नं. लिखें।

4. 11 से अधिक लेख एकत्र कर एक साथ भिजवाने वाले श्रावक/श्राविकाओं को विषेष पुरस्कार दिया जायेगा।

5. दोनों वर्गों हेतु प्रथक-प्रथक पुरस्कार राषि निमन्वत् है-

प्रथम पुरस्कार - 21000.00 एवं प्रमाण पत्र
द्वितीय पुरस्कार- 11000.00 ,,
तृतीय पुरस्कार- 5000.00 ,,

सभी प्रतिभागियों को भेंट स्वरूप साहित्य एवं प्रमाण पत्र भी दिया जायेगा।

6. लेख भेजने का पता- डॉ. अनुपम जैन
प्रधान सम्पादक- जैन तीर्थवंदना
ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर,
इन्दौर-452009
anupamjain3@rediffmail.co.in

संतोष जैन पेंढारी
महामंत्री

SAHU JAIN TRUST
A Philanthropic Organisation Founded by
SMT. RAMA JAIN & SAHU SHANTI PRASAD JAIN
Announces the 2016-2017

EDUCATION SCHOLARSHIPS

Application are invited for interest free Loan Scholarship pursuing Graduation and Post Graduation in technical subjects like Engineering, Infotech, Medical, MBA etc. in India.

Existing recipients of scholarship will have to apply again for continuance.
Scholarship amount ranges from Rs. 2500/- to Rs. 25,000/- per year.
Last date for receipt of Completed Forms by the Trust- 30.7.2016

Forms can also be downloaded from our site:
www.sahujaintrust.timesofindia.com
www.jnanpith.net

Application Forms will be availble free of change or can be had by post by sending a 9 "x4" self addressed stamped (Rs.10/-) envelope to the Secretary, **Sahu Jain Trust, 18, Institional Area, Lodhi Road, New Delhi-110003**

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार में हम हृदय की गहराईयों से आप सभी का स्वागत करते हैं, अभिनंदन करते हैं।

आजीवन सदस्य

श्री मुकेश कुमार रमेशचन्द मोदी
कटनी (म.प्र.)

श्री कमल जैन
नई दिल्ली

एस. धनंजय
चेन्नई- (तमिलनाडु)

श्री राजीव जैन
विदिशा- (म.प्र.)

डॉ राजीव रमेशचन्द्र जैन
विदिशा-(म.प्र.)

डॉ. इन्द्रकुमार जैन
विदिशा (म.प्र.)

श्री राकेश धनंजय जैन
नई दिल्ली

अनिल शिखरचंद जैन
नई दिल्ली

श्री संदीप वीरेन्द्रकुमार जैन
अशोकनगर (म.प्र.)

श्री किरण कल्याणमल पहाडिया
औरंगाबाद (महा.)

श्री राजकुमार किशोर महाजन (जैन)
जालना (महा.)

श्री जितेन्द्रकुमार फुलचंदसा साहुजी
औरंगाबाद (महा.)

श्री ऋषिकेश प्रविण जैन
औरंगाबाद (महा.)

श्री सुजित सुभाषचंद्र साहुजी
औरंगाबाद (महा.)

श्री सचिन सुमेरचंद साहुजी (गिरडीवाले)
औरंगाबाद-(महा.)

सौ. नम्रता सुरेंद्रकुमार साहुजी (जैन)
जालना (महा.)

श्री सुरेंद्रकुमार मदनलाल साहुजी (जैन)
जालना (महा.)

सौ. रंजना प्रशांत साहुजी (जैन)
जालना (महा.)

श्री प्रशांत चेतनलाल साहुजी (जैन)
जालना (महा.)

श्री चंद्रशेखर शांतिलाल कासलीवाल
नासिक (महा.)

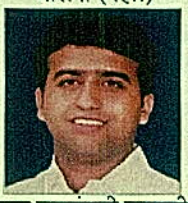
श्री भुषण जयचंदजी कासलीवाल
नासिक (महा.)

मंगल आशीर्वाद

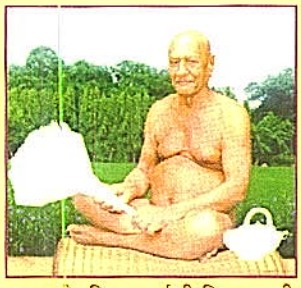

प.पू. श्वेतपिच्छाचार्यश्री विद्यानन्दजी

प.पू.स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामीजी

बिना पद की लालसा किए निरन्तर निःस्वार्थ भाव से तन-मन-धन से समाजसेवा में संलग्न, विशेष रूप से विगत 30 वर्षों से कुन्दकुन्द भारती संस्थान एवं 10 वर्षों से भगवान महावीर की ऐतिहासिक जन्मभूमि वासोकुण्ड, वैशाली, बिहार के मन्दिर-निर्माण आदि कार्यों में निष्ठापूर्वक सतत् सहयोग देने वाले एवं अनेक धर्म-प्रभावना के कार्यों में सदैव अग्रणी रहनेवाले, दृढ़ निश्चयी, कुशल संयोजक, प्रसिद्ध उद्यमी, माला के मनकों की तरह पिरोकर सबको साथ लेकर चलनेवाले, गुरु भक्त, श्रीमान्

धर्मानुरागी श्री सतीश चन्द जैन (SCJ)

वसंत विहार, नई दिल्ली को

आपकी निःस्वार्थ सेवा भाव से एवं धार्मिक सेवाओं के प्रति कृतज्ञ होकर

परमपूज्य स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामीजी, श्रवणबेळगोल

के पावन सान्निध्य एवं मंगल आशीर्वाद से आपको

महामस्तकाभिषेक कमेटी 2018 में

महामंत्री

पद पर मनोनीत किया गया है।

इस चयन से समस्त जैन समाज का उत्साहवर्द्धन हुआ है।

नमनकर्त्ता— **कुन्दकुन्द भारती न्यास**

18-बी, स्पेशल इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली-110067